इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
शिक्षा विद्यापीठ

BESC-131
शिक्षा : संप्रत्यय, प्रकृति एवं परिप्रेक्ष्य

खण्ड

4

शिक्षा के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

इकाई 13

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से शिक्षा को समझना 245

इकाई 14

सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यों से शिक्षा को समझना 263

इकाई 15

शिक्षा की समझ हेतु मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों से स्थानान्तरण 283

इकाई 16

सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुणधर्मो की समझ 304

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खण्ड 4 शिक्षा के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

खण्ड का परिचय

'शिक्षा के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य' पाठ्यक्रम – **BESC-131, 'शिक्षा : संप्रत्यय, प्रकृति एवं परिप्रेक्ष्य'** का चतुर्थ खण्ड है। प्रत्येक क्षेत्र के अपने संदर्भ और परिप्रेक्ष्य होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र के भी दार्शनिक, सामाजिक, एतिहासिक, तथा राजनैतिक परिप्रेक्ष्य हैं। यह खण्ड़ मनोवैज्ञानिक नियमों और सिद्धांतों को शैक्षिक संवाद में लागू करने तथा शिक्षा में समझे जाने विशिष्ट रूप से शिक्षा के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यों तथा शिक्षा को एक अभ्यास के रूप में तैयार किये जाने सामाजिक–मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को समझे जाने के संदर्भ विशेष में संबोधित करता है।

इस खण्ड़ की पहली इकाई, (इकाई 13) **'मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से शिक्षा को समझना',** शिक्षा मनोविज्ञान के सम्प्रत्यय, कार्यक्षेत्र तथा विधियों की व्याख्या करती है और शिक्षा एवं मनोविज्ञान के मध्य के संबंधों को बताती है। बच्चों के व्यवहार का अध्ययन करने में तथा उनके व्यवहार को संशोधित करने में मनोवैज्ञानिक निर्माणों तथा सिद्धांतों का अभ्यास किया जा रहा है। इसीलिए, यह कहा जाता है कि मनोविज्ञान ज्ञान प्रदान करता है, तथा शिक्षा उस ज्ञान का अभ्यास वास्तविक एवं धरातल की परिस्थितियों में करती है।

इस खण्ड़ की दूसरी इकाई, (इकाई 14) **'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यों से शिक्षा को समझना',** सामाजिक–मनोविज्ञान की अवधारणाओं तथा विचारों एवं शिक्षा को समझने की दिशा में उनके योगदान पर चर्चा करती है। विशेष रूप से, यह सामाजिक–मनोविज्ञान के इतिहास तथा सिद्धांतों एवं शैक्षिक अभ्यासों में उनके उपयोग की व्याख्या करती है।

इस खण्ड़ की तीसरी इकाई, (इकाई 15) **''शिक्षा की समझ हेतु मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से स्थानान्तरण'** शैक्षिक अभ्यासों के लिए व्यवहारवाद, संज्ञानवाद तथा सामाजिक संरचनावाद की अवधारणाओं एवं सिद्धांतों और उनके निहितार्थों की व्याख्या करता है। अधिकांशतः, जब हम बच्चे के साथ शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में काम कर रहे होते हैं, हम उन्हें पारंपरिक अध्यापन को एक पद्धति के रूप में प्रयोग कर काम पर लगाते हैं। हाल में उपयोग किये गये संरचनावाद या सामाजिक संरचनावाद पूर्व के व्यवहारवाद तथा संज्ञानवाद के अभ्यासों से भिन्न है। यह इकाई आपको उपरोक्त तीन पद्धतियों के सिद्धांतों व नियमों और इनके शैक्षिक अभ्यासों के निहातार्थों को समझने में मदद करेगी।

इस खण्ड़ की चौथी इकाई, (इकाई 16) **'सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुणधर्मो की समझ'** मनुष्य के बच्चे के विभिन्न गुणों, जैसे कि बुद्धिमानी, अभिक्षमता, रचनात्मकता, प्रेरणा, रवैया, व्यक्तित्त्व आदि की अवधारणाओं, सिद्धांतों तथा मापन को विस्तारित करता है तथा उनके शैक्षिक अभ्यास में इन्हें उपयोग में लाता है। हम उपरोक्त गुणों का मापन कुछ उपकरणों तथा तकनीकों के उपयोग द्वारा बच्चों को समझने के लिए करते हैं और उसी के अनुरूप शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं की रूपरेखा तैयार करते हैं। आगे, शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं के लिए उपरोक्त गुणों के निहितार्थों पर भी चर्चा की गई है।

इकाई 13 मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से शिक्षा को समझना

संरचना

13.1 परिचय

13.2 उद्देश्य

13.3 शिक्षा मनोविज्ञानः अर्थ और परिभाषा

13.3.1 शिक्षा और मनोविज्ञान में संबंध

13.4 शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

13.4.1 अधिगमकर्ता

13.4.2 अधिगम अनुभव

13.4.3 अधिगम प्रक्रिया

13.4.4 अधिगम वातावरण

13.4.5 अध्यापक

13.5 शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां

13.5.1 अंतर्दर्शन विधि

13.5.2 अवलोकन विधि

13.5.3 प्रायोगिक विधि

13.5.4 सर्वेक्षण विधि

13.5.5 नैदानिक विधि

13.5.6 वृत्त अध्ययन विधि

13.6 सारांश

13.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सूची

13.8 प्रगति जाँच हेतु उत्तर

13.1 परिचय

इस इकाई में आप शिक्षा की अवधारणा और मनोविज्ञान के साथ इसके संबंध का अध्ययन करेंगे। आप शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र और विधि का भी अध्ययन करेंगे।

शिक्षा मनोविज्ञान में दो शब्द हैं– शिक्षा और मनोविज्ञान। शिक्षा मानव व्यवहार का परिष्कार करती है और मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। शिक्षा मनोविज्ञान का तात्पर्य है मनोविज्ञान के ज्ञान द्वारा शिक्षा की परिघटना और प्रक्रियाओं की व्याख्या करना है। कई बार हम देखते हैं कि समान योग्यता वाले शिक्षक कक्षा में पढ़ाने और संप्रेषण करने में भिन्नता प्रदर्शित करते है। इस भिन्नता का एक संभावित कारण उनमें शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान का अभाव हो सकता है। इसमें शिक्षार्थी के बारे में ज्ञान, उनकी दक्षताएं, कुशलताएं, अभिवृत्तियां और अधिगम वातावरण के प्रभाव आदि शामिल हैं।

13.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगे कि–

डॉ. राजलक्ष्मी रैना, सहायक प्राध्यापक, एमिटी इस्टीट्युट ऑफ बिहवियरल एंड आलाइड साइंस, एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा।

- शिक्षा मनोविज्ञान की अवधारणा की व्याख्या कर सकें।
- शिक्षा और मनोविज्ञान के बीच संबंध की समझ विकसित कर सकें।
- शिक्षा मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र की चर्चा कर सकें।
- शिक्षा मनोविज्ञान की विधियों को विश्लेषित कर सकें।

13.3 शिक्षा मनोविज्ञानः अर्थ और परिभाषा

शिक्षा मनोविज्ञान वह अध्ययन क्षेत्र है जहां मनोविज्ञान के ज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोगात्मक अध्ननन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान के सिद्धान्तों और तकनीकियों के द्वारा शैक्षिक परिवेश में मानव व्यवहार को समझने का कार्य करता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने शिक्षा मनोविज्ञान को निम्नानुसार परिभाषित किया है–

स्कीनर के अनुसार– ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण और अधिगम से संबंधित है। (1958, पृष्ठ–1)

पील के अनुसार– ''शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा का विज्ञान है। (1956, पृष्ठ–8)

क्रो और क्रो के अनुसार– ''शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों की व्याख्या और विवेचना करता है।'' (1973, पृष्ठ–7)

इन परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान सीखने वाले, सीखने की प्रकृति, मानव व्यक्तित्व के विकास, वैयक्तिक भिन्नता, समाज और शिक्षा के परिवेश के सापेक्ष व्यक्ति के अध्ययन का कार्य करता है। इसमें वे सिद्धान्त और युक्तियां शामिल हैं जो विद्यार्थियों के व्यवहार को समझने और उनके व्यक्ति में पूर्ण विकास करने के लिए अपेक्षित व्यवहारों को जानने में मदद करती हैं। शिक्षा मनोविज्ञान को शिक्षा का विज्ञान और तकनीकी भी कहा जाता है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों को शिक्षण–अधिगम की योजना बनाने, उपयुक्त विधियों के चयन करने और प्रभावी शिक्षण की युक्तियों को जानने में मदद करता है।

13.3.1 शिक्षा और मनोविज्ञान में संबंध

मनोविज्ञान, व्यवहार का विज्ञान है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से घनिष्ठता से संबंधित है। मनोविज्ञान के ज्ञान द्वारा बच्चों के व्यवहार को अभीष्ट दिशा में ढाला जा सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान ज्ञान विद्यार्थियों के व्यवहार में परिमार्जन या उनके चरित्र और व्यवहार को आकार देने के लिए आवश्यक है। अतः शिक्षा और मनोविज्ञान के बीच औचित्यपूर्ण संबंध है। अध्यापक को बच्चों की विकासात्मक अवस्था और उनकी विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए। इससे वे कक्षा का समुचित प्रबंध कर सकते हैं और शिक्षण उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं। पहले शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाएं अध्यापक केन्द्रित हुआ करती थीं अब ये विद्यार्थी केन्द्रित हो चुकी हैं। शिक्षण–अधिगम की गतिविधियों की तैयारी, प्रारूप निर्माण और क्रियान्वयन शिक्षार्थियों को ध्यान में रखकर किया जाता है।

शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षा

शिक्षा को शिक्षार्थी केन्द्रित होना चाहिए। सीखने की प्रक्रिय में शिक्षार्थी की रूचि, योग्यता और आवश्यकताओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः किसी भी शैक्षिक कार्य की योजना बनाने और क्रियान्वयन के लिए मनोविज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि अधिकांश शिक्षाविदों के द्वारा शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधारों पर पर्याप्त बल दिया गया है। फ्रोबेल, पेस्टालजी और माटेंसरी जैसे शिक्षाविदों ने सुझाया है कि शिक्षा को

मनोवैज्ञानिक आधारों पर अवलंबित होना चाहिए। मनोविज्ञान के सिद्धान्त शिक्षा के लगभग समस्त आयामों को समझने में मदद करते हैं।

मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का शिक्षा में अनुप्रयोग

- मनोविज्ञान में विकसित सिद्धान्तों का विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों में अनुप्रयोग होता है। इस दृष्टि से शिक्षा और मनोविज्ञान एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।
- पाठ्यचर्या का निर्माण करते समय मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की मदद ली जाती है। उम्र, रूचि, अभिवृत्ति, सीखने वाले की दक्षता, व्यक्तिगत अतर आदि को पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय संज्ञान में लिया जाता है।
- शिक्षक द्वारा प्रयुक्त शिक्षण विधियां, युक्तियां और अभिप्रेरित करने के तरीके शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर आधारित होते हैं।
- मनोविज्ञान शिक्षा से संबंधित समस्याओं के हल को शोध द्वारा खोजने में सहायता करता है।
- विद्यालय की समय सारणी को मनोविज्ञान के सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जाता है।
- विद्यालय के प्रभावी प्रशासन और संगठन के लिए भी मनोविज्ञान के ज्ञान की आवश्यकता होती है।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों का अध्ययन करने में मनोविज्ञान का ज्ञान सहयोग करता है।
- विद्यालय अनुशासन से जुड़ी समस्या से निपटने में मनोविज्ञान मदद करता है।
- मनोविज्ञान अध्यापकों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देता है।
- मनोविज्ञान विद्यालय में एक अच्छे अधिगम परिवेश को तैयार करने में अधिगम की भूमिका के बारे में ज्ञान देता है।

अतः हम मनोविज्ञान के ज्ञान के बिना शिक्षा के अभ्यासों के बारे में विचार नहीं कर सकते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान की भूमिका

शिक्षा मनोविज्ञान निम्नलिखित ढंग से शिक्षकों की मदद करता है–

क) शैशवावस्था, बाल्यावस्था और किशोरावस्था व्यक्ति के जीवन में विकास की विभिन्न अवस्थाएं हैं। हर अवस्था की अपनी विशेषताएं होती हैं। शिक्षा मनोविज्ञान का एक उद्देश्य वृद्धि और विकास का अध्ययन करना है। अध्यापक को बच्चों की वृद्धि और विकास के बारे में जानने में शिक्षा मनोविज्ञान मदद करता है।

ख) मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षण–अधिगम परिस्थितियों के निर्माण में मदद करता है। व्यक्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विधियों, युक्तियों और सूत्रों के चुनाव में मदद करता है।

ग) शिक्षा मनोविज्ञान की मदद से अध्यापक अपने कक्षा के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और उनके बीच अंतर को समझ सकता है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षक विद्यार्थियों के व्यक्तित्वानुसार उनसे निपट सकता है। यह भी शिक्षा मनोविज्ञान का एक उद्देश्य है।

घ) शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक को अपने शिक्षण को नवाचारी बनाने में मदद करता है। शिक्षक शिक्षण की नयी पद्धतियों को विकसित कर सकता है जो प्रभावी

शिक्षण और संप्रेषण में सहायक होती हैं।

ङ) कई बार कक्षा में कुसमायोजित बच्चों का व्यवहार समस्या पैदा करता है। इस परिस्थिति में शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जानने, उसके लिए उत्तरदयी कारकों को जानने में मदद करता है।

च) विभिन्न अवस्थाओं के लिए पाठ्यचर्या के प्रारूप का विकास करने में भी शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी है। वर्तमान समय में हम बच्चों द्वारा खुद ज्ञान का विकास करने की मान्यता के साथ निर्माणवादी सिद्धान्तों का प्रयोग करते हैं। यह निर्माणवादी सिद्धान्त भी शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित है। अतः पाठ्यचर्या के विकास में भी मनोविज्ञान के ज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

छ) शिक्षा की उपलब्धियों का आकलन भी मनोवैज्ञानिक उपकरणों के माध्यम से किया जाता है। विभिन्न शैक्षिक उपकरणों के विकास के लिए भी शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है। अतः, कक्षा शिक्षण और अन्य शोध कार्यों के लिए शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक उपकरणों के विकास के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान सहयोग करता है।

ज) मार्गदर्शन और परामर्श का ज्ञान होना भी शिक्षा मनोविज्ञान एक प्रमुख घटक है। बच्चों को मार्गदर्शन और परामर्श देने के लिए भी शिक्षा मनोविज्ञान आवश्यक है। अतः इस दृष्टि से भी शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है।

अपनी प्रगति जाँचें 13.1

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए खाली स्थान पर उत्तर लिखिए :

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1. शिक्षा मनोविज्ञान क्या है?

....

....

....

2. शिक्षा और मनोविज्ञान किस तरह से संबंधित हैं?

....

....

....

3. शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान शिक्षक की किस प्रकार से सहायता करता है?

....

....

....

13.4 शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

शिक्षा का विस्तार बहुत अधिक है। शिक्षा मनोविज्ञान के व्यापक विषय क्षेत्र का अनुमान आप उसके प्रकरणों के आधार पर लगा सकते हैं। शिक्षा के उप अध्ययन क्षेत्र के रूप में शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा के भागीदारों और इसकी प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। शिक्षा मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र में शिक्षा प्रक्रिया के निम्नलिखित घटक शामिल हैं–

1. शिक्षार्थी
2. अधिगम अनुभव
3. अधिगम प्रक्रिया
4. अधिगम वातावरण
5. अध्यापक

13.4.1. अधिगमकर्ता

शिक्षा मनोविज्ञान की अधिगम सामग्री विद्यार्थी के इर्द–गिर्द ही केन्द्रित होती है। शिक्षार्थी का ही विकास की विभिन्न अवस्थाओं के सापेक्ष अध्यनन किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान की मदद से हम अपने शिक्षार्थियों को समझ सकते हैं। यह हमें शिक्षार्थियों की विकासात्मक विशेषताओं, बुद्धि, समायोजन और व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर उनमें भिन्नताओं को समझने में सहायता करता है। शिक्षार्थी के चिंतन तरीकों, अभिवृत्तियों, बुद्धि, अभिक्षमता, रचनात्मकता, आत्म–संप्रत्यय आदि का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान में किया जाता है। अतः शिक्षार्थी को समझना और उसके अनुसार उनके लिए आवश्यक अधिगम सुविधाओं को प्रदान करना शिक्षा मनोविज्ञान के विषय क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

13.4.2 अधिगम अनुभव

शिक्षक विद्यार्थियों के लिए विभिन्न अधिगम योजनाओं को बनाते हैं। शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को उपयुक्त शिक्षण तकनीकियों और विधियों के चुनाव में सहायता प्रदान करता है। अध्यापक शिक्षार्थियों की अकादमिक वृद्धि और विकास की अवस्थाओं के अनुसार अधिगम अनुभवों की योजना बनाता है।

13.4.3 अधिगम प्रक्रिया

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण अधिगम गतिविधियों के निर्माण और क्रियान्वयन में अध्यापक की सहायता करता है। शिक्षार्थी और अधिगम अनुभव के बारे में जानने व निर्णय लेने के बाद शिक्षक अपने शिक्षण के लिए नियामों और सिद्धान्तों का चयन व उपयोग करता है। अधिगम की अन्य प्रक्रियाएं जैसे– याद करना और भूलना, अंतर्जात समझ, संप्रत्यय विकास, समस्या समाधान, विश्लेषणात्मक चिंतन, अधिगम का स्थानान्तरण, प्रभावी अधिगम को सुगम करना आदि भी शिक्षण द्वारा अधिगम प्रक्रिया की योजना बनाने और उसे क्रियान्वित करने के दौरान संज्ञान में लिए जाते हैं।

13.4.4. अधिगम वातावरण

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के सुगम संचालन के लिए, अध्यापक को सीखने में सहयोग देने वाली दशाओं जैसे– कक्षा वातावरण, कक्षा का आकार, मीडिया, सीखने में सहयोगी युक्तियों, परामर्श` तरीकें और मूल्यांकन के तरीकों आदि का ज्ञान होना चाहिए। शिक्षा मनोविज्ञान षिक्षक को प्रभावपूर्ण अधिगम में सहायता करने वाले अधिगम वातावरण के विकास में सहायता प्रदान करता है।

13.4.5 अध्यापक

अध्यापक सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में भाग लेने में सहायता प्रदान करता है। यह सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका को रेखांकित करता है। यह सफल शिक्षक के व्यक्तिगत

गुण, विशेषताओं, रूचियों, दक्षताओं और अभिवृत्ति पर प्रकाश डालता है।

यद्यपि उपर्युक्त उल्लिखित पांच क्षेत्रों में शिक्षा मनोविज्ञान के विषय की चर्चा की गयी, इसके विषय क्षेत्र का विस्तार करते हुए उसमें निम्नलिखित को जोड़ा जा सकता है–

- शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। इसमें मानव व्यवहार में परिष्कार और सुधार शामिल है। अतः शिक्षा मनोविज्ञान में शिक्षा का पूरा विषयक्षेत्र शामिल है।
- शिक्षा मनोविज्ञान बच्चों की वृद्धि और विकास का अध्ययन करने में सहायता प्रदान करता है। एक बच्चा कैसे विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है और इन अवस्थाओं की क्या विशिष्टताएं होती है? इसका अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान में किया जाता है। यह बच्चे के बौद्धिक, नैतिक और सामाजिक विकास के बारे में ज्ञान देता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान वंशानुक्रम और वातावरण के अध्ययन से भी संबंधित है। यह व्यक्ति के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण की भूमिका का अध्ययन करता है। यह बताता है कि एक बच्चे के अधिकतम विकास में इस ज्ञान का कैसे उपयोग कर सकते हैं?
- शिक्षा का तात्पर्य मानव के सभी गुणों का विकास है। शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यक्तित्व की प्रकृति और उसके विकास से भी संबंधित है।
- हर व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होते हैं। व्यक्तिगत भिन्नता की अवधारणा को भी शिक्षा मनोविज्ञान की मदद से समझा जा सकता है।

जैसा कि पहले भी चर्चा की गयी है शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों के मार्गदर्शन और परामर्श में भी सहायता प्रदान करता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान का ही अंग है। जहां मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन सामान्य संदर्भों में करता है वहीं शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है।

गतिविधि 1

शिक्षा मनोविज्ञान एक गत्यात्मक विषय है। चर्चा करें।

....

....

....

....

....

....

अपनी प्रगति जाँचें 13.2

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए खाली स्थान पर उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4. शिक्षा मनोविज्ञान किस तरह से एक शिक्षक की सहायता करता है?

....

....

....

5. शिक्षक स्वयं मनोविज्ञान का एक घटक कैसे है? व्याख्या कीजिए।

....

....

....

13.5 शिक्षा मनोविज्ञान की विधियां

शिक्षा मनोविज्ञान सामान्य मनोविज्ञान की अनुप्रयोगात्मक शाखा है। अतः इसमें मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिए गए शोध परिणामों और निष्कर्षों का शिक्षण–अधिगम में सुधार के लिए प्रयोग किया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य भावी शिक्षकों के लिए आवश्यक कुशलताओं और दक्षताओं का विकास करना है जिससे वह विभिन्न स्तरों पर शिक्षार्थी के व्यवहार को समझ सके, नियंत्रित कर सके और उसके व्यवहार के बारे में भविष्य कथन कर सके। इस कार्य को करने के लिए के लिए विद्यार्थियों के व्यवहार से संबंधित आंकड़ों के संकलन हेतु अनके विधियों का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः, शिक्षा मनोविज्ञान में मनोविज्ञान की ही विधियों का जैसे– अन्तःदर्शन, अवलोकन, प्रयोग, वृत्त अध्ययन और नैदानिक विधियों का प्रयोग होता है।

अतः शैक्षिक परिवेश में बच्चों, किशोरों और वयस्कों के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया जाता है–

1. अंतर्दर्शन विधि
2. अवलोकन विधि
3. प्रायोगिक विधि
4. सर्वेक्षण विधि
5. नैदानिक विधि
6. वृत्त अध्ययन विधि

13.5.1 अंतर्दर्शन विधि

अंतर्दर्शन विधि शिक्षा मनोविज्ञान की लोकप्रिय विधि है। अंतर्दर्शन विधि में आत्म का अवलोकन होता है– अपनी मानसिक स्थिति का परीक्षण, मूल्यांकन और रिपोर्ट तैयार करना। अंतर्दर्शन विधि में आत्मावलोकन–अपनी मानसिक स्थिति का अवबोधन या अपने आप के भीतर देखना। इसे आत्मावलोकन विधि भी कहा जाता है। इस विधि के जनक विलियम वुंट हैं। इसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं का प्रत्यक्षण, विश्लेषण और रिपोर्ट करता है। यह सोद्‌देश्य और क्रमबद्ध प्रक्रिया है।

अंतर्दर्शन विधि के गुण

अंतर्दर्शन विधि के निम्नलिखित गुण हैं–

- शिक्षा मनोविज्ञान की सभी विधियों में इसे सबसे सरलतम माना जाता है।
- चूंकि अन्वेषक और जिसका अध्ययन किया जा रहा है दोनों एक ही होते हैं इसलिए यह एक किफायती विधि है। इसके लिए किसी प्रयोगशाला की आवश्यकता नहीं होती है। यह एक सरल विधि है जिसके लिए किसी उपकरण की जरूरत नहीं होती है।
- यह शिक्षार्थी के अनुभवों और मनोदशा समझने में शिक्षक की सहायता करता है। यह व्यक्ति को खुद के बारे में जानकारी देता है। इस पक्ष को किसी अन्य विधि द्वारा नहीं जाना जा सकता है।
- अधिकांश शोध कार्यों में इस विधि का प्रयोग होता है। इस विधि के द्वारा शिक्षक को अपनी शिक्षण विधि और युक्ति को सुधारने में सहायता मिलती है।

अंतर्दर्शन विधि की सीमाएं

- स्वयं के द्वारा स्वयं के व्यवहार का अध्ययन कठिन कार्य है।
- अंतर्दर्शन विधि द्वारा एकत्रित आंकड़ा विश्वसनीय और वैध नहीं होता है क्योंकि शोध करने वाला अपने भावनाओं के प्रति आग्रही होता है।
- हर व्यक्ति जैसे– असामान्य व्यवहार वाले व्यक्ति और बच्चे अंतर्दर्शन करने में समर्थ नहीं होते हैं।
- किसी व्यक्ति के द्वारा अंतर्दर्शन करने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण और कौशल की आवश्यकता होती है।
- इस विधि में वस्तुनिष्ठता का अभाव होता है। यह मूलतः व्यक्तिनिष्ठ विधि होती है।
- चूंकि किसी व्यक्ति की मानसिक दशाएं बदलती रहती हैं अतः अंतर्दर्शन करना कठिन होता है। यह विधि विश्वसनीय नहीं है।
- इस विधि को बच्चों के साथ क्रियान्वित नहीं कर सकते हैं।
- इसे एक अवैज्ञानिक विधि माना जाता है।

निष्कषर्तः हम कह सकते हैं कि इय विधि को शुद्धतम विधि नहीं माना जा सकता है। समुचित प्रशिक्षण के द्वारा ही इसकी सीमाओं को दूर कर सकते हैं। अंतर्दर्शन विधि की अनेक सीमाएं है लेकिन प्रायोगिक मनोविज्ञान में अंतर्दर्शन पर आधारित रिपोर्ट महत्वपूर्ण मानी जाती है।

13.5.2 अवलोकन विधि

अवलोकन शिक्षा मनोविज्ञान में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली और प्राचीन विधि है। इसे मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विधि माना जाता है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति के गतिविधियों का अवलोकन कर उसके व्यवहार के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। किसी व्यक्ति की मानसिक दशा को समझने के लिए उसके बाह्य व्यवहार का अवलोकन किया जा सकता है। अवलोकन के दौरान हमें अपनी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा परिवेश की जानकारी होती है। अवलोकन विधि के निम्नलिखित चरण हैं–

- अवलोकन की योजना बनाना और तैयारी
- व्यवहार का अवलोकन
- अवलोकित व्यवहार का विश्लेषण और व्याख्या
- परिणामों का सामान्यीकरण

अवलोकन नियंत्रित या अनियंत्रित हो सकता है। नियंत्रित अवलोकन को प्रायोगिक अवलोकन भी कहते हैं। नियंत्रित दशाओं में अवलोकन को नियंत्रित अवलोकन कहते हैं। बिना नियंत्रण दशाओं में किए गए अवलोकन को प्राकृतिक अवलोकन कहते हैं। इस अवलोकन का तात्पर्य होता है कि बिना नियंत्राण की दशा या स्वाभाविक परिस्थितियों में दूसरों के व्यवहार का अवलोकन।

अवलोकन के प्रकार

अवलोकन करने के अनेक तरीके होते हैं। उनमें से कुछ तरीकों का यहां उल्लेख किया जा रहा है–

- औपचारिक अवलोकन
- अनौपचारिक अवलोकन
- सहभागी अवलोकन
- गैर–सहभागी अवलोकन

औपचारिक अवलोकन

इस विधि में अवलोकन को औपचारिक तरीके से किए जाता है। इस तरह के अवलोकन में जिसका अवलोकन किया जा रहा है उसे अवलोकन का उद्देश्य, स्थान, तिथि और समय के बारे में सूचना दी जाती है। इस तरह का अवलोकन वैध और विश्वसनीय निष्कर्ष नहीं उपलब्ध कराते हैं। उदाहरण के लिए, यदि अवलोकन से पूर्व किसी विद्यालय को अवलोकन के उद्देश्य, तिथि और समय के बारे में बताया जाता है तो स्कूल का प्रबंध तंत्र पहले से तैयार हो जाता है और इस स्थिति में अवलोकन के उद्देश्य पूरे नहीं होते हैं। इस स्थिति में भागीदार के वास्तविक व्यवहार का अध्ययन नहीं हो पाता है।

अनौपचारिक अवलोकन

इस तरह के अवलोकन में जिसका अवलोकन किया जा रहा है उसे अवलोकन के उद्देश्य, स्थान, तिथि और समय के बारे में नहीं बताया जाता है। व्यक्ति इस बात से अनभिज्ञ रहता है कि उसके व्यवहार का अवलोकन किया जा रहा है। व्यक्ति के व्यवहार का प्राकृतिक परिवेश में अवलोकन किया जाता है। व्यक्ति भी स्वाभाविक बना रहता है और उसके वास्तविक व्यवहारों का अध्ययन किया जा सकता है।

सहभागी अवलोकन

इस तरह के अवलोकन में अवलोकनकर्ता जिसका अवलोकन कर रहा है उसके साथ गतिविधियों में सम्मिलित होता है।उदाहरण के लिए, अवलोकन कर्ता व्यक्ति की अकादमिक गतिविधियों में शामिल होकर उसके व्यवहार का अवलोकन कर सकता है। इस विधि की सीमा है कि अवलोकनकर्ता की उपस्थिति जिसका अवलोकन किया जा रहा है उसके स्वाभाविक व्यवहार को प्रभावित कर सकती है।

गैर सहभागी अवलोकन

इस तरह के अवलोकन में अवलोकन, खुद को ऐसी स्थिति में रखता है कि जिसका अवलोकन किया जा रहा है उसे ज्ञात नहीं होता है कि उसके व्यवहार को देखा जा रहा है। व्यक्ति अवलोकनकर्ता की उपस्थिति को संज्ञान में नहीं ले पाता है। अवलोकन करने के दौरान जिसका अवलोकन हो रहा है उसे मालूम नहीं चलता है। छुपे हुए कैमरों का प्रयोग, ऑडियो और विडियो रेकॉर्डिंग इस लक्ष्य में सहयाग करते हैं। इस अवलोकन का उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार को अवलोकनकर्ता की उपस्थिति से प्रभावित किए बिना अवलोकन करना है।

अवलोकन के गुण

अन्तःदर्शन विधि की तुलना में यह विधि अधिक वैज्ञानिक है। यह व्यक्ति के व्यवहार को प्राकृतिक और मौलिक रूप से अध्ययन करने के काम आती है।

- किसी अध्ययन की वैधता और विश्वसनीयता के लिएयह उपयोगी विधि है।
- अवलोकन विधि, वर्तमान व्यवहार का अध्ययन करती है। अवलोकनकर्ता को व्यक्ति के पूर्व या गुजर चुके व्यवहारों के बारे में चिंता नहीं करनी होती है।
- जब तक अपेक्षित प्रतिक्रिया न मिल जाए तब तक व्यवहार का अवलोकन किया जा सकता है। किसी व्यवहार का अवलोकन एक या एक से अधिक अवलोकनकर्ता कर सकते हैं।
- यह एक मितव्ययी विधि है। इसके लिए किसी अतिरिक्त प्रयोगशाला, धन या श्रम की आवश्यकता नहीं होती है। न ही इसके लिए व्यवहार का अवलोकन करने वाले विशिष्ट विशेषज्ञ की आवश्यकता होती है।
- अवलोकन विधि की सहायता से मानव व्यवहार के साथ पौधों, जानवरों, पक्षियों आदि के व्यवहार का अध्ययन किया जा सकता है। शिक्षा के शोध कार्यों में इस विधि का व्यापक उपयोग है।
- इस विधि के द्वारा शोध के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तरह के आंकड़े एकत्र किए जा सकते हैं।
- इस विधि का किसी भी समय और किसी भी स्थान पर उपयोग किया जा सकता है।

अवलोकन विधि की सीमाएं

- ➢ अवलोकन विधि में लोगों का प्रशिक्षण कठिन है। प्रशिक्षित अवलोकनकर्ता के अभाव में अवलोकन का कार्य समुचित रूप से नहीं हो पाता है। अतः अप्रयोज्य आंकड़ों के संकलन से बचने के लिए अवलोकनकर्ता की दक्षता आवश्यक है।
- ➢ अवलोकन व्यक्तिनिष्ठ होता है। अतः अवलोकन के परिणाम अन्वेषक की व्यक्तिनिष्ठ विशेषताओं से प्रभावित होते हैं। अन्वेषक की निजी रूचियां, मूल्य, पूर्वग्रह आदि अवलोकन के परिणाम को परिभाषित कर सकते हैं।
- ➢ कभी–कभी जिसका अवलोकन किया जा रहा है वे बनावटी व्यवहार करते हैं। इस कारण भी गलत निष्कर्ष निकल सकते हैं।

- यदि अवलोकनकर्ता जिसका अवलोकन कर रहा है उसके प्रति पक्षपातपूर्ण रवैया रखता है तो भी अवलोकन के परिणाम प्रभावित होते हैं। वह जिसे पसंद करता है उसके लिए पक्षपात करेगा जिसे नापसंद करता है उसे नीचा दिखाने का प्रयत्न करेगा।
- अवलोकन विधि पूर्णतया बाह्य और प्रकट व्यवहारों के अवलोकन पर आधारित है। यह आंतरिक मनःस्थिति को संज्ञान में नहीं लेती है। इस कारण इस विधि की वैधता और विश्वसनीयता कम है।
- जिस व्यवहार का एक समय और स्थान पर अवलोकन किया जाता है उसका दूसरे समय और स्थान पर पुनरावृत्ति नहीं होती है। कोई भी प्राकृतिक स्थिति एक बार घटित होती है। अतः इस विधि में पुनरावृत्ति करने के गुण का अभाव है।
- इस विधि द्वारा व्यक्ति की निजी समस्याओं और अनुभवों का अवलोकन कठिन है।
- इस विधि के द्वारा व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहार का अवलोकन नहीं किया जा सकता है। यह केवल बाह्य और प्रकट व्यवहार के अवलोकन में समर्थ है लेकिन आंतरिक व्यवहार का पता नहीं लगाया जा सकता है।

13.5.3 प्रायोगिक विधि

प्रायोगिक विधि में प्रयोगों और उसके प्रेक्षित परिणामों को महत्व दिया जाता है। इस विधि में परिघटना या सामग्री का परीक्षण किया जाता है। मनोविज्ञान में इस विधि का विकास मानव व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए किया गया। यह विधि मानव व्यवहार को समझने, नियंत्रण करने और भविष्य कथन करने में सहायता करती है। प्रायोगिक विधि में परिघटना के अध्ययन के लिए योजना बनाकर क्रमबद्ध अवलोकन किया जाता है। इस विधि में प्रायोगिक प्रारूप (डिजाइन) का उपयोग करते हुए शोधकर्ता को क्रमबद्ध ढंग से शोध करने का निर्देश प्रदान करने के लिए किया जाता है। प्रयोगकर्ता को अपना प्रयोग करने के लिए कोई प्रयोगशाला, कक्षा या समुदाय में किसी स्थान की आवश्यकता होती है जहां वह अपने प्रयोग कर सके। इस विधि द्वारा नियंत्रित समूह और प्रयोग समूह के व्यवहारों की तुलना की जाती है।

प्रायोगिक विधि की विशेषताएं

- यह नियंत्रित दशाओं में व्यवहार के अध्ययन में समर्थ बनाती है।
- इसकी प्रकृति वैज्ञानिक होती है।
- इसे विधि की बिना कठिनाई के पुनरावृत्ति की जा सकती है।
- इसमें यादृच्छीकरण की प्रक्रिया का पालन होता है।
- इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय होते हैं और इनका सामान्यीकरण किया जा सकता है।

प्रायोगिक विधि के चरण

प्रायोगिक शोध में निम्नलिखित चरण अपनाए जाते हैं–

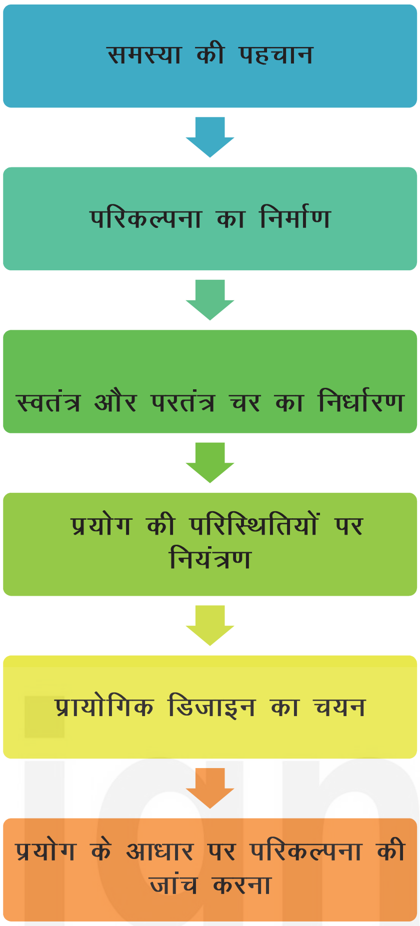

चित्र–13.1 : पायोगिक शोध के चरण

सारणी–1 प्रायोगिक विधि की विशेषताएं एवं आवश्यकताएं

आवश्यक विशेषताएं	प्रयोग की दशाएं / आवश्यकता
मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला	उपकरणों से सुसज्जित प्रयोगशाला होनी चाहिए।
प्रयोगकर्ता	एक अन्वेषक / शोधकर्ता की आवश्यकता होती है।
विषय	कुछ व्यक्ति / विषय होते हैं जिनपर प्रयोग किया जाता है।
उद्दीपन	उद्दीपक से हमारा अभिप्राय परिवेश में बाह्य हस्तक्षेप से है जो जीव को व्यवहार या प्रतिक्रिया करने के लिए उद्दीप्त करता है।
प्रतिक्रिया	उद्दीपक के प्रति प्रतिक्रिया होती है। इसे व्यवहार में बदलाव के रूप में परिभाषित करते हैं। व्यवहार में अवलोकनीय बदलाव को प्रतिक्रिया कहा जाता है।
चर	जब हम प्रयोग करते हैं तो चरों का उपयोग करते हैं। ये चर स्वतंत्र और परतंत्र होते हैं। हम नियंत्रित दशाओं में प्रयोग करते हैं। चरों में हुए बदलावों के आधार पर प्रभाव का पता लगाते हैं।

प्रायोगिक विधि के गुण

- प्रायोगिक विधि एक विश्वसनीय विधि,वैध, क्रमबद्ध, समुचित और वस्तुनिष्ठ विधि है।
- प्रायोगिक विधि के द्वारा मानव व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है। अतः यह मनोविज्ञान की वैज्ञानिक प्रकृति के भी अनुकूल है।

- इस विधि के सार्वभौमिक उपयोग हैं। इसे सभी पर प्रयुक्त किया जा सकता है। इस विधि के द्वारा जानवरों का भी अध्ययन किया जा सकता है।
- इस विधि के द्वारा बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, व्यक्तिगत भिन्नता, मानसिक असमान्यताओं और अन्य मनोवैज्ञानिक गुणों का अध्ययन किया जा सकता है। यह विधि मनोविज्ञान की सभी शाखाओं के प्रयोज्य है।
- इस विधि के द्वारा विशेष गतिविधियों जैसे– अनुबंधन के प्रभाव और प्रतिक्रिया समय आदि का अध्ययन किया जा सकता है।
- इस विधि की तैयारी पहले से की जा सकती है।
- प्रयोग करने वाले के द्वारा प्रयोग की दशाओं को नियंत्रित और परिवर्तित किया जा सकता है।
- प्रयोग के परिणामों को जांचा जा सकता है।

प्रायोगिक विधि की सीमाएं

- इस विधि में पर्याप्त ऊर्जा और समय की आवश्यकता होती है।
- इसके लिए व्यवस्थिति प्रयोगशाला और उपकरणों की आवश्यकता होती है। अतः यह एक महंगी विधि है। इसमें प्रयोग को संचालित करने के लिए विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है।
- यह एक सरल विधि नहीं है। कभी–कभी चरों को नियंत्रित करना कठिन होता है।
- कई बार, परतंत्र चर को मापना कठिन हो जाता है। यह इस विधि की सीमा है।
- प्रयोगशाला की दशा में नियंत्रित कर, एक क्रिया के परिणामों का अध्ययन किया जाता है। वास्तवित परिस्थितियों में अनेक उद्दीपन एक साथ कार्य करते हैं। उससे अनेक प्रभाव पैदा होते हैं। अतः प्रयोगशाला की दशा में प्रयोग और स्वाभावित परिस्थितियों में घटनाओं के घटित होने में अंतर होता है।
- इस विधि के द्वारा सभी परिघटनाओं का अध्ययन नहीं कर सकते हैं।
- इस विधि की स्थान और समय की भी सीमा होती है।

13.5.4 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि अध्ययन और विश्लेषण के लिए प्रयुक्त होने वाली एक प्रमुख विधि है। इसके द्वारा किसी समूह के पैटर्न, स्थिति, व्यवहार और गुणवत्ता का अध्ययन किया जाता है। सर्वेक्षण विधि के द्वारा व्यक्तित्व से संबंधित विशेषताओं जैसे– रूचि, अभिवृत्ति, अभिक्षमता आदत आदि का अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा गहन अध्ययन करके जनसंख्या या चयनित प्रतिनिधि प्रतिदर्श की विशेषताओं को जाना जा सकता है। सर्वेक्षण विधि से आंकड़ों को एकत्र करने के लिए दो उपकरण उपयोग किए जाते हैं–

- प्रश्नावली
- साक्षात्कार

सर्वेक्षण कार्य के लिए प्रश्नावली

प्रश्नावली में व्यवस्थिति तरीके से तैयार किए प्रश्नों की श्रृंखला होती है। इसे उत्तरदाताओं

को दिया जाता है जिससे उनके उत्तर प्राप्त किए जा सके। उत्तरदाता जनसंख्या या प्रतिनिधि प्रतिदर्श होते हैं। प्रश्नावली का प्रयोग करते हुए दो तरह के सर्वेक्षण किए जाते हैं। मेल सर्वे जिसमें प्रश्नावली को ई–मेल या किसी अन्य माध्यम से उत्तरदाता के पास भेजा जाता है। घर से घर सर्वेक्षण, जिसमें अन्वेषक उत्तरदाता के घर या ऑफिस जाकर स्वयं संपर्क करता है।

साक्षात्कार तकनीकी

इस तरीके में उत्तरदाता से सीधे बातचीत कर आंकड़ों को एकत्रित किया जाता है। साक्षात्कार के दो रूप होते हैं–

संरचित या मानकीकृत साक्षात्कार– इसमें साक्षात्कार के लिए अपेक्षित विकल्पों के साथ प्रश्नों की संरचित और मानकीकृत सूची तैयार की जाती है।

असंरचित या अमानकीकृत साक्षात्कार– इस विधि में साक्षात्कार लेने वाला आवश्यकता और सुविधानुसार प्रश्न पूछने के लिए स्वतंत्र होता है जिससे वह इच्छित सूचना प्राप्त कर सके।

साक्षात्कार के गुण

- सम्यक संबंध विकसित कर विश्वसनीय सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं।
- साक्षात्कार लेने वाले और देने वाले में प्रत्यक्ष संबंध होता है।
- इसमें सर्वाधिक विश्वसनीय आंकड़े एकत्र हो सकते हैं।
- यह एक लोचशील उपकरण है।

साक्षात्कार की सीमाएं

- उत्तरदाता वास्तविक उत्तर नहीं उजागर कर सकता है।
- इसमें अन्वेषक की व्यक्तिनिष्ठता का प्रभाव होता है।
- इसके लिए दक्ष साक्षात्कार लेने वाले की आवश्यकता होती है।
- यह श्रम, शक्ति और धन की दृष्टि से महंगी है।

13.5.5 नैदानिक विधि

इस विधि का उपयोग कुसमायोजित व्यक्तियो से संबंधित समस्याओं के अध्ययन के लिए किए जाता है। इस विधि की मुख्य भूमिका प्रभावित व्यक्ति की व्यवहारमूलक समस्याओं के बारे में विस्तृत आंकड़े एकत्रित करना होती है। इस विधि का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति या समूह की समस्याओं को पहचाानना, उसका विश्लेषण करना और उसका यथोचित निदान करना होता है। इस विधि का उपयोग मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सकोंख समाज कार्य के विशेषज्ञों और शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। इसके द्वारा वे लोगों के डर, बेचैनियों, चिंताओं, तनावों और उनकी निजी, सामाजिक, शैक्षिक और व्यवसाय से जुड़ी समस्याओं का अध्ययन करते हैं। इस विधि में संबंधित व्यक्ति की समस्या को पहचान कर उसे निदान सुझाया जाता है।

निदान की विधि

किसी व्यक्ति के व्यवहार से संबंधित समस्या या कुसमायोजन से संबंधित समस्या के निदान के लिए भौतिक परीक्षा, वृत्त इतिहास, नैदानिक साक्षात्कार और उसकी अभिक्षमताओं का

मूल्यांकन करते हैं। रोगी के व्यवहार को इलाज के द्वारा बदला जा सकता है जिससे वह अपने परिवेश में समायोजित हो सके। अतः मनोवैज्ञानिकों के द्वारा संबंधित व्यक्ति के व्यवाहार में बदलाव लाने के लिए निदान किया जाता है।

13.5.6 वृत्त अध्ययन विधि

यह एक गहन और व्यापक शोध विधि है। इसमें चयनित वृत्त या प्रकरण की समस्या से संबंधित इतिहास, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन किया जाता है। कोई व्यक्ति जो किस शैक्षिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक और निजी समस्या का सामना कर रहा है उसे 'केस'/प्रकरण कहते हैं। जिस तरह से डॉक्टर और वकील किसी प्रकरण का गहन अध्ययन कर समस्या का समाधान करते हैं वैसे ही इस विधि के द्वारा शोधकर्ता केस/रोगी की समस्या का गहन अध्ययन कर उसे सहायता प्रदान करता है।

इस विधि का उपयोग मनोवैज्ञानिकों और प्रशिक्षित अध्यापकों के द्वारा व्यक्ति की व्यवहार संबंधी समस्याओं को जानने के लिए किया जाता है। इस विधि का उद्देश्य व्यवहार से जुड़ी समस्या को पहचानना, उपचार करना और उसके बारे में मार्गदर्शन और परामर्श देना है।

वृत्त अध्ययन विधि के निम्नलिखित चरण होते हैं—

- चयनित केस से संबंधित आरंभिक सूचनाएं जैसे— नाम,उम्र, सेक्स, अभिभावक की आयु, शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक स्तर आदि को एकत्रित करना।
- संबंधित केस की भौतिक जांच पड़ताल करना जिससे जाना जा सके कि कहीं व्यवहार की समस्या का कारण कोई रोग तो नहीं है। किसी भौतिक रोग या समस्या के न होने पर ही मनोवैज्ञानिक इलाज आरंभ किया जाता है।
- यह सुनिश्चित करना कि व्यक्ति/विषय अन्वेषक के साथ सहज महसूस कर रहा है। अन्वेषक, चाहे वह शिक्षक हो या मनोवैज्ञानिक, उससे संबंधित व्यक्ति से मित्रतापूर्ण संबंध रखना चाहिए। आंकड़ों के संकलन की भाषा साधारण होनी चाहिए जिससे स्वाभाविक प्रतिक्रियाओं को दर्ज किया जा सके।
- यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विषय को अन्वेषक थका न दे। उसे बीच—बीच में अंतराल/विराम देते रहना चाहिए।
- संबंधित व्यक्ति के व्यवहार का स्वाभाविक दशाओं में अवलोकन करना चाहिए।
- उपचार या निदान के बाद की स्थितियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए जिससे समस्या के पुनः प्रकट होने को रोका जा सके।

वृत्त अध्ययन विधि के गुण

- इस विधि द्वारा संबंधित व्यक्ति के व्यवहार के सभी आयामों का अध्ययन किया जाता है।
- यह विधि समस्यामूलक बच्चों, भगोड़े बच्चों, कुसमायोजित बच्चों और सामाजिक और सांवेगिक बच्चों के अध्ययन के लिए उपयुक्त है।
- इसमें व्यवहार का समग्र अध्ययन होता है। इस तरह के अध्ययन के परिणाम विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ और वैध होते हैं।
- चूंकि अध्ययन के दौरान अन्वेषक व्यक्ति को अच्छे से जान जाता है इसलिए वह संबंधित व्यक्ति को उचित मार्गदर्शन और सलाह दे सकता है।

वृत्त अध्ययन विधि की सीमाएं

- कक्षा अध्यापकों को बिना प्रशिक्षण के इस विधि के प्रयोग का दायित्व नहीं सौंपा जा सकता है। इस विधि में चयनित विषय के साथ अध्ययन के लिए तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।
- यह विधि बहुत गहन और व्यापक होती है। इस कारण इसमें समय, श्रम और धन की अधिक आवश्यकता होती है।
- शोध के लिए अनके स्रोतों से एकत्रित आंकड़े वैध और विश्वसनीय नहीं भी हो सकते हैं।
- कई बार एकत्रित आंकड़े आवश्यकता से अधिक व्यक्तिनिष्ठ होते हैं। वे विश्वसनीय और वैध नहीं हो सकते हैं।
- समस्या और इलाज को पहचानने में त्रुटि होने की संभावना अधिक होती है। त्रुटियों को न्यूनतम करने के लिए अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता होती है।

अपनी प्रगति जाँचें 13.3

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए खाली स्थान पर उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6. प्रायोगिक विधि के गुणों की चर्चा कीजिए।

....

....

....

7. शिक्षा मनोविज्ञान में नैदानिक विधि की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

8. वृत्त अध्ययन विधि से क्या तात्पर्य है?

....

....

....

13.6 सारांश

शिक्षा मनोविज्ञान में शैक्षिक परिवेश में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। यह शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान के ज्ञान का अनुप्रयोग है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा के परिवेश में मानव व्यवहार के अध्ययन के लिए मनोविज्ञान के सिद्धान्त और तकनीकियों का अनुप्रयोग है। शिक्षा और मनोविज्ञान में औचित्यपूर्ण संबंध है। शिक्षकों को बच्चों के विकासात्मक अवस्थाओं और उनकी विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए। यह ज्ञान शिक्षक को समुचित रूप से कक्षा का प्रबंधन करने और शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करता

है। पहले के समय में शिक्षा अध्यापक केन्द्रिम होती थी लेकिन वर्तमान समय में यह बाल केन्द्रित है। सीखने वाला ही वह धुरी है जिसके चारों और शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया घूमती है। शिक्षार्थी, उसके अनुभव, अधिगम प्रक्रिया, अधिगम परिवेश और अध्यापक वे महत्वपूर्ण घटक हैं जिन पर शिक्षा मनोविज्ञान की सामग्री आधारित है। शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य भावी अध्यपकों में आवश्यक दक्षता और कुशलता का विकास करना है जिससे वे विभिन्न स्तरों पर शिक्षा की प्रक्रियाओं में विद्यार्थियों के व्यवहार को समझ सके, नियंत्रित कर सके और भविष्य कथन कर सके। इसके लिए शिक्षार्थियों की समस्या से जुड़े आंकड़े एकत्रित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। सामान्यतः शिक्षा मनोविज्ञान में मनोविज्ञान की ही विधियों जैसे– अंतर्दर्शन, अवलोकन, प्रायोगिक विधि, वृत्त अध्ययन औ नैदानिक विधि का प्रयोग होता है।

13.7 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सूची

एलबेटो, पी. एण्ड टोरीटेमन, ए. (2003). एपलाइड वेहेवियर एनालिसस फॉर टीचर्स (6th एडिसन). कोलमवस यू एस ए : पेरिनटाइस – हॉल मेरिल।

बिकी, एन. एल. एण्ड हण्ट, एम. पी. (1968) साइकोलोजिकल फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन हारपर एण्ड रा, न्यूर्याक।

क्रो एण्ड क्रो (1973). "एजुकेशन साइकोलॉजी" यूरेएसिया पाब्लिशिंग हाउस न्यूर्याक।

चौहान, एस. एस. (1978). "एडवांस एजुकेशन साइकोलॉजी" विकास पाब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड।

पील, इ. ए. (1956). "दि साइकोलॉजी वेसिस ऑफ एजुकेशन" आलिवर एण्ड ब्याड, लंदन।

स्किनर, एम, डेनियल (1978). "एजुकेशन साइकोलॉजी" एलियन एण्ड वेकान, न्यूर्याक।

13.8 प्रगति जांच के हेतु उत्तर

1. शिक्षा मनोविज्ञान वह अध्ययन क्षेत्र है जहां मनोविज्ञान के ज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोगात्मक अध्यनन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान के सिद्धान्तों और तकनीकियों के द्वारा शैक्षिक परिवेश में मानव व्यवहार को समझने का कार्य करता है।

2. मनोविज्ञान, व्यवहार का विज्ञान है जो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया से घनिष्ठता से संबंधित है। मनोविज्ञान के ज्ञान द्वारा बच्चों के व्यवहार को अभीष्ट दिशा में ढाला जा सकता है। शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान ज्ञान विद्यार्थियों के व्यवहार में परिमार्जन या उनके चरित्र और व्यवहार को आकार देने के लिए आवश्यक है। अतः शिक्षा और मनोविज्ञान के बीच औचित्यपूर्ण संबंध है।

3. शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापकों को शिक्षार्थी की बाल्यावस्था और किशोरावस्था की आवश्यकता के अनुसार उनके विकास में सहायता करने में मदद करता है। यह बच्चों की समस्या को जानने और उसका उपचार करने में भी सहायक है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों के अनुसार शिक्षण– अधिगम की तैयारी में सहायता करता है। यह विद्यार्थियों में व्यक्तिगत अंतर पहचानने और उसके अनुसार सहायता प्रदान करने में सहयोगी है। पाठ्यचर्या विकास और कक्षा शिक्षण के लिए उपकरणों के विकास में भी शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी होता है।

4. शिक्षा मनोविज्ञान की सहायता से अध्यापक शिक्षार्थी, अधिगम अनुभव, अधिगम प्रक्रिया, परिवेश औश्र स्वयं को समझ सकता है।

5. शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापकों के लिए अपरिहार्य है क्योंकि वे विद्यालय की रोजमर्रा की गतिविधियों में बच्चों से निरंतर अन्तःक्रिया करते हैं।

6. प्रायोगिक विधि एक विश्वसनीय और वैध विधि है। यह क्रमबद्ध और वैज्ञानिक भी है। इसके परिणामों की प्रमाणिकता जांची जा सकती है। इसके परिणाम वस्तुनिष्ठ और अपेक्षाकृत त्रुटिमुक्त होते हैं।

7. इस विधि का विकास कुसमायोजित व्यक्तियों की समस्या के अध्ययन के लिए किया गया है। इसका मुख्य कार्य प्रभावित बच्चों की समस्या के विषय में विस्तृत सूचना एकत्र करना है। इसका लक्ष्य व्यक्तिगत प्रकरण या प्रकरणों के व्यवहार को समझनाख विश्लेषण करना, उसके संदर्भ में सुझाव और उपचार देना है।

8. यह एक गहन और व्यापक शोध विधि है। इसमें चयनित वृत्त या प्रकरण की समस्या से संबंधित इतिहास, वर्तमान और भविष्य का अध्ययन किया जाता है। कोई व्यक्ति जो किस शैक्षिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक और निजी समस्या का सामना कर रहा है उसे 'केस'/प्रकरण कहते हैं। किसी भी केस का क्रमबद्ध और वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

इकाई 14 सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यों से शिक्षा को समझना

संरचना

14.1 परिचय

14.2 उद्देश्य

14.3 सामाजिक मनोविज्ञान की अवधारणा

- 14.3.1 मानव के सामाजिक व्यवहार का अध्ययन
- 14.3.2 व्यक्ति द्वारा अन्य के प्रत्यक्षण का अध्ययन
- 14.3.3 व्यक्ति के चिंतन, भावनाओं और क्रियाओं का अध्ययन
- 14.3.4 सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के कारणों का अध्ययन
- 14.3.5 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा
- 14.3.6. मनो–सामाजिक परिघटनाओं की समझ

14.4 सामाजिक मनोविज्ञान का इतिहास

14.5 सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धान्त

14.6 शिक्षा और सामाजिक मनोविज्ञान में संबंध

14.7 मनो–सामाजिक संप्रत्ययों के मुख्य प्रणेता

14.8 सारांश

14.9 संदर्भ सामग्री और सुझावित पाठनीय सुची

14.10 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

14.1 परिचय

बच्चे अपने परिवेश जैसे– परिवार, दोस्तों, क्लबों, खेल मित्रों, पड़ोसियों आदि के साथ अन्तःक्रिया के द्वारा पर्याप्त अधिगम अनुभव प्राप्त करते हैं। बच्चों के ये अनुभव हमारे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा होने चाहिए। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मुख्यतः सामाजिक गतिविधि है। अतः शिक्षार्थी के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक संदर्भ को समझे बने शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों का आयोजन नहीं किया जा सकता है। एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में सामाजिक मनोविज्ञान हमें व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार, अन्तरवैयक्तिक संबंध, व्यक्तियों के दूसरों के प्रति व्यवहार के अध्ययन में मदद करता है। यह इस अर्थ में अन्य सामाजिक विज्ञानों से भिन्न है कि यह व्यक्ति के विचारों और व्यवहारों पर केन्द्रित है। इस इकाई का उद्देश्य शिक्षा को इसी सामाजिक–मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से समझना है।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समर्थ होंगे कि–

- सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा कर सकें।
- उन क्षेत्रों की व्याख्या कर सके जहां सामाजिक मनोविज्ञान कार्य करता है।
- सामाजिक मनोविज्ञानों के सिद्धान्तों को समझ सके।

डॉ. बिस्वजीत बेहेरा, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय।

- सामाजिक मनोविज्ञान के मुख्य व्याख्याताओं/प्रवक्ताओं की व्याख्या कर सके।
- सामाजिक मनोविज्ञान के इतिहास की समीक्षा कर सके।
- शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक मनोविज्ञान के नियमों का अनुप्रयोग कर सके।

14.3 सामाजिक मनोविज्ञान की अवधारणा

हम अपने रोजमर्रा के जीवन में घर में परिवार के सदस्यों से, समुदाय में अपने पड़ोसियों से, विद्यालय और महाविद्यालय में अपने दोस्तों और शिक्षकों से, विभिन्न अवसरों पर अन्य व्यक्तियों से मिलते हैं। सामाजिक अन्तःक्रियाओं में सामाजिक संबंधों का विकास हमें मनुष्य को सामाजिक प्राणी बनाता है। एक सामाजिक प्राणी के रूप में समाज के सभी सदस्य एक दूसरे से संबंधित हैं। यही संबंध उनके जीवन को अर्थ देता है। सामाजिक स्वस्तिभाव के लिए दूसरों से संबंध बनाना अपरिहार्य है। मैस्लो (1970) ने आवश्यकताओं के पदानुक्रम में संबंधित को तीसरा महत्वपूर्ण प्रेरक बताया है। दलाई लामा ने भी उचित कहा है कि हमारे जीवन का उद्देश्य दूसरों की मदद करना है। अतः व्यक्ति एक दूसरे के साथ कैसे अन्तःक्रिया करते हैं? वे अलग–अलग सामाजिक परिस्थितियों में तद्नुसार क्यों व्यवहार, चिंतन और अनुभूति करते हैं? का प्रश्न महत्वपूर्ण है जिसका उत्तर खोजा जाना चाहिए। अतः सामाजिक मनोविज्ञान के अंतर्गत निम्नलिखित अध्ययन क्षेत्र आते हैं–

14.3.1 मानव के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन

सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के सामाजिक व्यवहार को समझने का प्रयास करता है। व्यक्तियों का व्यवहार उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं जैसे– व्यक्तित्व, अभिवृत्ति, रूचि, चिंतन, विश्वास तंत्र आदि और सामाजिक परिवेश में कार्य कर रहे बाह्य कारकों के आधार पर निर्धारित होता है। किसी व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार का क्रमबद्ध अध्ययन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए आपके व्यवहार का अध्ययन निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर किया जा सकता है–

- क्या आप दूसरों के साथ वस्तुओं को साझा करने में समर्थ हैं?
- आपके विचार का दूसरों के विचार से टकराव क्यों होता है?
- इन संघर्षों/द्वन्दों का आप सामना कैसे करते हैं?
- क्या आप अपने समुदाय के अन्य सदस्यों के लिए विचारों और सुझावों का योगदान करते हैं?
- क्या आप दूसरों के विचारों और सुझावों को स्वीकार करते हैं?
- आपके अनुसार, आपकी क्या रक्षात्मक युक्तियां हैं?

अतः सामाजिक मनोविज्ञान में व्यक्तियों के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है– व्यक्ति दूसरों के बारे में क्या सोचता है और वह दूसरों से कैसे प्रभावित होता है (फिस्के, 2004)

14.3.2 व्यक्ति द्वारा अन्य के प्रत्यक्षण का अध्ययन

समाजिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की शाखा है जिसमें व्यक्ति के सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। व्यति कैसे एक दूसरे से प्रभावित होते हैं और कैसे किसी का विश्वास तंत्र उसके प्रत्यक्षण को प्रभावित करता है (मार्कस, 2005)। यह एक अनुप्रयोगात्मक विज्ञान है जिसमें मनोविज्ञान की विधियों, सिद्धान्तों का प्रयोग करते हुए मानव व्यवहार की व्याख्या की जाती है और उसे समझने का प्रयास किया जाता है। यह व्यक्ति के व्यवहार के नियमन में दूसरों के प्रभाव का अध्ययन करता है। अतः सामाजिक मनोविज्ञान में अध्ययन

किया जाता है कि व्यक्ति दूसरों के बारे में कैसे प्रत्यक्षण करता है? वे एक–दूसरे से कैसे प्रभावित होते हैं? वे एक–दूसरे से कैसे अन्तःक्रिया करते हैं जिससे उनमें सामाजिक संबंध बनते हैं? यह व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार पर अधिक केन्द्रित होता है। यह व्यक्ति के दूसरों के बारे में राय और उन पर प्रभाव से संबंधित है।

प्रत्यक्षण का अध्ययन

एक सदस्य की दूसरों के बारे में अभिवृत्ति (लगाव, प्रेम, विश्वास, घृणा आदि)

उसकी भावनाओं की ताकत (गहराई, कारण, तटस्थता)

वह दूसरों के साथ कैसे संलग्न होता है?

दूसरे उसके साथ कैसा व्यवहारर करेगें इसकी प्रत्याशा का अध्ययन।

अतः लोग कैसे प्रत्यक्षण करते हैं? दूसरों से कैसे प्रभावित होते है और एक दूसरे से संबंध निर्मित करने के लिए कैसे अन्तःक्रिया करते है? आदि प्रश्नों का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान में किया जाता है। इसे चित्र 14.1 में दिखाया गया है।

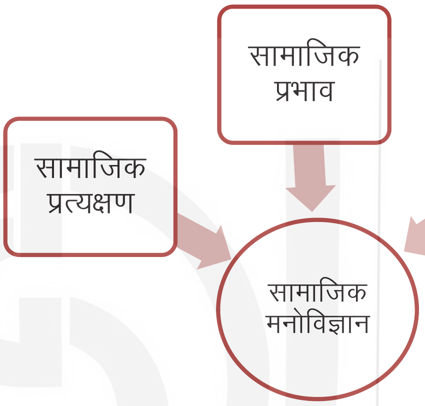

चित्र 14.1: सामाजिक मनोविज्ञान के घटक

14.3.3 व्यक्ति के चिंतन, भावनाओं और क्रियाओं का अध्ययन

सामाजिक मनोविज्ञान, हमारी चिंतन प्रक्रियाओं का अध्ययन करते हुए उसे प्रभावित करने वाले कारकों और हम में पारस्परिक संबंध को प्रकाशित करता है। व्यक्ति का चिंतन, संवेग और क्रिया अन्य की प्रत्यक्ष और आभासी उपस्थिति से प्रभावित होते हैं। यह सामाजिक व्यवहार में प्रकट होते हैं। इन व्यवहारों का सामाजिक मनोविज्ञान में अध्ययन किया जाता है। चित्र 14.2 में दिखाया गया है कि कैसे व्यक्ति के व्यवहार में दिखने वाले चिंतन, संवेग और क्रियाओं में अवलोकन किया जाता है।

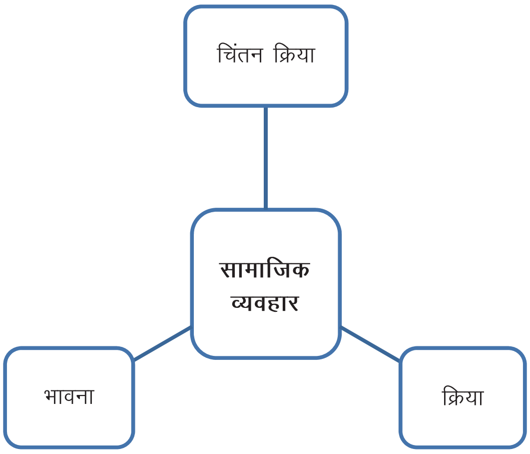

चित्र 14.2: सामाजिक व्यवहार के घटक

सामाजिक क्रियाओं और व्यवहारों को समझने के लिए निम्नलिखित सामाजिक क्रियाओं का उदाहरण लेते हैं–

सामाजिक क्रिया की व्याख्या

सामाजिक क्रियाओं के उदाहरण यहां दिए जा रहे हैं। इन सामाजिक क्रियाओं को ध्यान में रखते हुए अपेक्षित सामाजिक व्यवहारों का परीक्षण कीजिए।

समूह के सदस्य एक लक्ष्य को समझते हैं। वे इसके बारे में सहमत हैं।

कई बार समूह के सदस्य सुझावों के बारे में एक दूसरे से असहमत होते हैं, लेकिन अधिकांश सुझाव समस्या के लिए प्रासंगिक होते हैं।

कभी–कभी, वे एक दूसरे के प्रति सौहार्द्र का प्रदर्शन करते हैं।

कुल मिलाकर समस्या का समाधान खोजने की दिशा में बढ़ा जाता है।

अब आप समूह के सदस्यों के व्यवहार के बारे में अनुमान लगा सकते हैं कि–

वे एक कठिन समस्या पर कार्य कर रहे हैं।

उनके सुझाव रचनात्मक है।

14.3.4 सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार के कारणों का अध्ययन

सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार के कारणों का अध्ययन किया जाता है। मानव व्यवहार के कारणों का अध्ययन करने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान में इस तरह के सवाल पूछे जाते हैं–

- हम कैसे लोगों को उनकी अभिवृत्ति बदलने या नए विचारों और मूल्यों को स्वीकार करने के लिए तैयार कर सकते हैं?
- हम दूसरों की पसंद और नापसंद को कैसे समझ सकते हैं?
- लोगों दूसरों से क्यों जुड़े होते हैं या लोग दूसरों से अलग क्यों रहते हैं?
- हम दूसरों से कैसे प्रभावित होते हैं और उन्हें कैसे प्रभावित करते हैं?
- लोग दूसरों के प्रति आक्रमकता, निर्दयता और हिंसा का प्रदर्शन क्यों करते हैं?
- लोग दूसरों की मदद करने के लिए अपने जीवन को खतरे में क्यों डाल देते हैं?

14.3.5 सामाजिक मनोविज्ञान की परिभाषा

सामाजिक मनोविज्ञान अध्ययन की वह शाखा है जिसमें अध्ययन किया जाता है कि लोग दूसरों को अपने चिंतन, संवेगों और क्रियाओं से कैसे प्रभावित करते हैं। सामाजिक प्रभाव, व्यवहार में वह परिवर्तन है जिसे किसी व्यक्ति द्वारा सोद्देश्य या बिना सोद्देश्य लक्ष्यों के दूसरों पर डाला जाता है। यह एक तरीका है जिसके द्वारा लोग दूसरों के प्रति अपनी अभिवृत्ति और व्यवहार को बदलते हैं। यह विशिष्ट क्रियाओं और गतिविधियों का परिण ााम होता है। उदाहरण के लिए, सामाजिक प्रभाव लोगों में अंधविश्वास दूर करता है। सामाजिक मनोविज्ञान में दूसरों के अच्छे रिश्तों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया जाता है। वह जो मित्रतापूर्ण व्यवहार करता है क्यों वही अन्य अवसरों मित्रता का

भाव नहीं दिखाता? आक्रामक हो जाता है? सामाजिक परिवेश में कुछ लोग एक तरीके से व्यवहार करते हैं और दूसरे अन्य तरीकों से व्यवहार करते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर सामाजिक मनोविज्ञान में खोजा जाता है। अतः सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन करता है। मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक मनोविज्ञान को अलग–अलग परिप्रेक्ष्यों से देखा है। आइए सामाजिक मनोविज्ञान की कुछ परिभाषाओं का अध्ययन करते हैं।

मैक्डूगल (1908): ''सामाजिक मनोविज्ञान में अन्तर सामाजिक उद्दीपन, प्रतिक्रिया, सामाजिक अभिवृत्तियों, मूल्यों और व्यक्तित्वों का अध्ययन किया जाता है।''

अल्पोर्ट (1924): सामाजिक मनोविज्ञान एक विज्ञान है जिसमें व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जो व्यक्ति की चेतना का वर्णन करती है।''

जे. एम. विलियम्स: सामाजिक मनोविज्ञान एक विज्ञान है जो सामाजिक संबंधों के बीच रह रहे लोगों कि अभिप्रेरणाओं का अध्ययन करता है।

एलवुड (1924): सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र का अंग है। इसके अनुसार इसे समूहों के उद्भव, विकास, संरचना और कार्यकरण का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

कर्ट लेविन (1936): सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों में मानव के व्यवहारों का अध्ययन है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक प्रक्रियाओं में निहित मनोवैज्ञानिक कारकों का अध्यनन किया जाता है। किसी व्यक्ति के व्यवहार के मनोसामाजिक घटकों को सामाजिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में सम्मिलित किया जाता है। सामाजिक समूहों में अन्तःक्रिया का संज्ञानात्मकत और भावानात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है। सामाजिक मनोविज्ञान में उन कारकों की खोज की जाती है जो सामाजिक जीवन को प्रभावित करते हैं। किस तरह से सामाजिक अन्तःक्रियाएं व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करते हैं? यह सामाजिक मनोविज्ञान का उदीयमान क्षेत्र है।

14.3.6. मनो–सामाजिक परिघटनाओं की समझ

एक व्याख्यात्मक उदाहरण

आइए मनो–सामाजिक परिघटना को समझने के लिए सामाजिक सफलता में सहयोग और प्रतियोगिता का उदाहरण लेते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान बताते हैं कि कैसे सामाजिक अन्तःक्रिया अभिप्रेरणा, लक्ष्य निर्धारण और अन्ततः सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है? सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धान्त बताते हैं कि कैसे एक व्यक्ति का व्यवहार उसके सामाजिक वातावरण की विशेषताओं पर निर्भर करता है। अतः व्यक्ति का आत्मावलोकन उसकी क्रियाओं को प्रभावित करता है। कोहलर के अभिप्रेरणा प्रभाव के अनुसार, प्रतियोगिता के दौरानसहयोग न प्रदान करने वाले सामाजिक वातावरण में अभिप्रेरणा बढ़ जाती है। अतः प्रतियोगिता अभिप्रेरणा में बदल जाती है जिससे प्रदर्शन में सुधार होता है। प्रतियोगिता और सहयोग सामाजिक वातवरण के दो व्यापक आयाम हैं। सहयोग को समाज में सफलता का भाव मजबूत करने वाले कारक के रूप में समझा जाता है क्योंकि इससे समूह में सफलता को प्राप्त करने के अवसर बढ़ जाते है जबकि व्यक्तिगम रूप से ये अवसर कम होते हैं(स्लाविन, 1995)। सामाजिक सफलता की पूर्वोक्त चर्चा से स्पष्ट है कि सामाजिक मनोवैज्ञानिक निम्न में से एक या अधि सवालों पर निर्भर करते हैं– कैसे लोग एक दूसरे के बारे में सोचते हैं, भावन से जोड़ते हैं और कैसे एक दूसरे से संबंधित होते हैं?

अपनी प्रगति जाँचें 14.1

नोट : क) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

1. सामाजिक व्यवहार है....................?

क) कैसे लोग समाज में क्रिया करते हैं

ख) कैसे लोग समाज का प्रत्यक्षण करते हैं

गा) लोग कैसे समाज का अनुभव करते हैं

ग) उपर्युक्त सभी

2. किसी एक के सामाजिक व्यवहार को कौन सर्वाधिक प्रभावित करता है?

क) केवल निजी विशेषताएं

ख) केवल पर्यावरणीय विशेषताएं

ग) व्यक्तिगत विशेषताओं और पर्यावरण में अंतःक्रिया

घ) या तो व्यक्तिगत विशेषता या पर्यावरणीय विशेषता

3. सामाजिम मनोविज्ञान में एक का दूसरों पर भाव का अध्ययन किन संदर्भों में किया जाता है?

क) चिंतन

ख) अनुभव

ग) क्रिया

घ) उपर्युक्त सभी

14.4 सामाजिक मनोविज्ञान का इतिहास

फ्रेंच समाजशास्त्री ऑगस्ट कॉम्टे (1838) ने सामाजिक प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक विधि से अध्ययन करने वाले आरंभिक विद्वान थे। उन्होंने सामाजिक विज्ञान की नीवं रखी। सामाजिक विज्ञान के शुरूआती वर्षों में सामाजिक मनोविज्ञान के प्रयोग समूह व्यवहार पर आधारित थे (ट्रिप्लेट, 1898)। वर्ष 1908 में अंग्रेज मनोवैज्ञानिक मैक्डूगल ने सामाजिक दुनिया की प्रतिक्रिया में मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन किया। यह अध्ययन सामाजिक–सांवेगिक व्यवहारों जैसे– भय, क्रोध, उत्साह और कायरता पर आधारित था। 20 वीं शताब्दी में सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन को गति मिली। 20 वीं सदी के पहले 50 वर्षों में सामाजिक मनोविज्ञान में शोध किए गए। क्रमशः इसका विस्तार अभिवृत्तियों के अध्ययन तक हुआ। इन अध्ययनों में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर बल दिया गया।

समाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद गति आयी। इस युद्ध ने सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धान्त और शोध को प्रभावित किया। नृजातीय अल्पसंख्यकों से जुड़े पूर्वग्रहों को दूर करने और संपर्क के प्रभाव के अध्ययन में मनोवैज्ञानिकों की रूचि पैदा हुयी। स्टेनले मिलग्राम (1974) ने दिखाया कि सामाजिक समूहों की सदस्यता की स्वीकृति का दबाव और सत्ता द्वारा आज्ञाकारिता के भाव को पोषित करने में युद्ध की

भूमिका महत्वपूर्ण है। इसने शोध में संपर्क संकल्पना (आलपोर्ट, 1954) के विकास में सहयोग किया। गॉर्डन अल्पोर्ट ने पूर्वग्रह, रूढ़ियों और भेदभाव को कम करने के लिए अन्तः समूह संबंधों पर ध्यान केन्द्रित किया। दुर्खाइम (1954) ने सामाजिक नियमों जिसमें आकांक्षाएं सम्मिलित रहती हैं, पर बल दिया। अतः उन्होंने स्व की सामाजिक प्रकृति को पहचाना।

20 वीं शताब्दी के द्वितीयार्द्ध में सामाजिक मनोविज्ञान का क्षेत्र विविधता से संपन्न हुआ। इसमें आक्रमकता, समाजोनुकूल व्यवहार और अन्तरवैयक्तिक संबंध जैसे क्षेत्र जुड़े।

21 वीं शताब्दी में सामाजिक परिस्थितियों के मानव की खुशियों पर प्रभाव का अध्ययन किया गया। इससे सामाजिक न्यूरोसाइंस के रूप में नए क्षेत्र का विकास हुआ। यह समझा गया कि हमारा सामाजिक व्यवहार हमारे दिमाग की गतिविधियों से प्रभावित होता है (इकाबोनी, 2009)। संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी में विकास के कारण एस. टेलर, ली रॉस और अन्य विद्वानों ने सामाजिक संज्ञान पर विचार करना आरंभ किया। इन लोगों ने विचार दिया कि कैसे हमारा सामाजिक दुनिया का ज्ञान अनुभवों के आधार पर विकसित होता है। यह कैसे हमारी स्मृति, सूचनाओं के प्रसंस्करण, अभिवृत्ति और निर्णयों को प्रभावित करता है।

अतः 20 वीं शताब्दी में सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान अध्ययन का प्रमुख क्षेत्र बना। 1920 के दौरान फ्रायड और मैक्डूगल सामाजिक मनोविज्ञान के प्रमुख अध्येता थे। लेकिन 1970 के दौरान सामाजिक और व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिकों ने इस क्षेत्र पर ध्यान देना शुरू किया। 21 वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक मनोवैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में डिजीटल तकनीकी और सामाजिक न्यूरोसाइंस का विकास हुआ। आजकल प्रमुख चुनौती है कि सामाजिक परिस्थितियों के आनंद/खुशी पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अपनी प्रगति जाँचें 14.2

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

4. सामाजिक मनोविज्ञन का उभरता क्षेत्र कौन सा है?

क) व्यक्तित्व

ख) सामाजिक न्यूरो साइंस

ग) अभिवृत्ति

घ) आक्रमकता

14.5 सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धान्त

सामाजिक मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक शाखा है। निम्नलिखित सिद्धान्त विज्ञान की एक शाखा के रूप मनोविज्ञान की विवेचना करते हैं–

क) सामाजिक मनोविज्ञान एक सकारात्मक विज्ञान है।

सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के व्यवहारों का वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन है। यह एक विज्ञान है। इसमें वैज्ञानिक विधि की विशेषताएं और मूल्य जैसे– शुद्धता, वस्तुनिष्ठता और वैचारिक खुलापन होता है। यह खोज की वस्तुनिष्ठ और क्रमबद्ध चरणों का पालन करता है। सामाजिक व्यवहारों के बारे में शुद्ध और वैध सूचनाएं एकत्रित की जाती हैं,

उनका मूल्यांकन किया जाता है। यह व्यक्ति के व्यवहार के 'क्या' और 'क्यों' का अध्ययन करता है। इसमें इस बात का अध्ययन नहीं किया जाता कि व्यक्ति का व्यवहार कैसा होना चाहिए। सामाजिक मनोविज्ञान में सामाजिक दुनिया के बारे में निष्कर्ष निकालने के लिए अनुमानों, विश्वास, रूढ़ियों और न देखने वाली बातों को आधार नहीं बनाया जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान में अवैज्ञानिक आधारों पर निष्कर्ष निकालने की प्रवृत्ति को शामिल नहीं किया जाता है। अतः यह एक सकारात्मक विज्ञान है।

ख) सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति और उसके आसपास के लोगों के बीच के गत्यात्मक संबंधों का अध्ययन है।

हर व्यक्ति में विशिष्ट और अनोखी विशेषताएं होती हैं। व्यक्तिगत विशेषताओं में में व्यक्तिगत गुण, अभिप्रेरणा और संवेग शामिल होते हैं। इन गुणों का हमारे सामाजिक व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। किसी भी व्यक्ति का व्यवहार उसके चारों ओर की सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। वह जिन लोगों से अंतःक्रिया करता है, उसका भी प्रभाव पड़ता है। वह समाज में जिन लोगों से अंतःक्रिया करता है उसमें उसके दोस्त, परिवार के सदस्य, कक्षा के साथी, रिश्तेदार, धार्मिक समूह के सदस्य और वह इंटरनेट के द्वारा जिन लोगों से अन्तःक्रिया करता है वे शामिल होते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के गुणों और आसपास के लोगों से उसकी अन्तःक्रिया के आधार पर उसके व्यवहार को समझने की कोशिश करता है।

ग) सामाजिक मनोविज्ञान, सामाजिक परिस्थितियों के अध्ययन के रूप में

मानव व्यवहार सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। मानव व्यवहार व्यक्तिगत विशेषताओं और सामाजिक परिस्थितियों से उसकी अन्तःक्रिया का प्रतिफल होता है। सामाजिक परिस्थितियां किसी व्यक्ति के व्यवहार में परिलक्षित विचार, संवेग और क्रियाओं से नियमित होता है। यह सामाजिक निर्माण की साझी निर्मिति होती है जो पूर्व निर्धारित नहीं होती है बल्कि इसका हमारी चेतना द्वारा निर्माण होता है, सामाजिक संप्रेषण के विभिन्न माध्यमों जैसे– गप्प, अफवाह, कर्मकांड, विद्यालय के पाठों आदि के माध्यम से संप्रेषित होता है। व्यक्ति के चुनाव, रूचियां, अभिवृत्ति और प्रत्यक्षण आदि उसके चारों ओर स्थित अन्य लोगों को भी प्रभावित करते हैं। कर्ट लेविन (1936) ने व्याख्या की थी कि मानव के व्यवहार और परिस्थिति को इस समीकरण से समझ सकते हैं–

$$\text{व्यवहार} = f\,(\text{व्यक्ति, सामाजिक परिस्थितियां})$$

लेविन का समीकरण किसी दिए हुए समय पर व्यक्ति के व्यवहार की व्याख्या करता है। यह व्यक्तिगत विशेषताओं और सामाजिक परिस्थितियों दोनों पर निर्भर करता है। अतः सामाजिक परिस्थितियां व्यक्ति के व्यवहार की मुख्य निर्धारक हैं। सामाजिक मनोविज्ञान जटिल सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन करते हैं और प्रकट हो रही समस्याओं के प्रयोजनमूलक समाधान खोजते हैं। तद्नुसार व्यक्ति और समाज के कार्यकरण का सुझाव देते हैं। आइए इसे एक उदाहरण द्वारा देखते हैं– यदि एक बच्चे को विश्वास हो जाता है कि उसके माता–पिता अन्य भाई–बहनों को अधिक प्यार करते हैं तो इस तथ्य के सत्य न होने के बावजूद उसे वह सत्य मान लेता है। इस मिथ्या अवधारणा से उसका व्यवहार और अभिवृत्तियां प्रभावित होने लगती हैं। बच्चे के जीवन में तथ्य का उद्भव कई स्रोतों जैसे– वर्तमान मनोवैज्ञानिक दशा–भूख, उत्साह, उसकी सामाजिक आवश्यकताओं जैसे– स्वीकृति की इच्छा, पूर्व के अनुभव, वर्तमान वास्तविकताओं और भविष्य के लक्ष्य से प्रभावित होता है।

घ) सामाजिक मनोविज्ञान वास्तविक दुनिया की समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करती हैं।

रोजमर्रा की परिस्थितियों में समस्या का समाधान मनुष्य की प्रमुख चुनौती है। सामाजिक मनोवैज्ञानिक रोजमर्रा की स्थितियों में व्यक्तियों के विचार और व्यवहार का अध्ययन करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान में रोजमर्रा की परिस्थितियों का अध्ययन करने के लिए मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का उपयोग किया जाता है। यह क्रमबद्ध शोध द्वारा समाजोन्मुखी व्यवहार के महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर खोजता है। सामाजिक संबंधों का अध्ययन करने की आधार विधि अवलोकन और उसकी जटिलता को उद्घाटित करने वाले प्रयोग हैं। अतः सामाजिक मनोविज्ञान एक अनुप्रयोगात्मक मनोविज्ञान है।

एक व्याख्यात्मक उदाहरण

जब एक चिकित्सक किसी रोगी का इलाज करता है तो वह उसके लक्षणों की जांच करता है। लक्षणों का अवलोकन करने के बाद डॉक्टर बीमारी के बारे में बताता है। ठीक इसी तरह, एक समाज मनोवैज्ञानिक किसी समूह के समस्यास्तमक लक्षणों का अवलोकन सामाजिक संबंधों में समस्याओं का अध्ययन करता है। समस्या को पहचानने और जांचने के बाद, सामाजिक मनोवैज्ञानिक उपचार की योजना बना सकता है। इससे जुड़े सुझाव दे सकता है।

ड़) सामाजिक मनोविज्ञान अन्तरवैयक्तिक अन्तःक्रियाओं को समझने में सहायता करता है।

संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान की मुख्य विषयवस्तु है। दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच संबंधों की गतिकी उनके सामाजिक व्यवहार में प्रकट होती है। व्यक्ति अन्तःक्रिया करने का फैसला कैसे लेते हैं? क्या इसका उद्देश्य संबंधों को बनाए रखना और उनका निर्वाह करना होता है? इन सवालों का उत्तर समाज के मनोवैज्ञानिक द्वारा खोजा जाता है। सामाजिक मनोविज्ञान व्याख्या करता है कि कैसे व्यक्ति की विशेषताएं सामाजिक परिस्थितियों से अन्तःक्रिया कर उसके व्यवहार का निर्धारण करती है। अतः सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति–परिस्थितियों की अन्तःक्रियाओं का अध्ययन करता है।

च) सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक व्यवहार पर पर्यावरण और व्यक्तिगत विशेषताओं क अन्तःक्रियाओं के प्रभाव का अध्ययन करता है।

व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार और क्रियाओं को कौन से कारक प्रभावित करते हैं? यह एक महत्वपूर्ण सवाल है। यह समाज मनोवैज्ञानिकों के बीच एक व्यापक बहस का मुद्दा भी है। इसे प्रकृति बनाम पोषण की बहस के रूप में जाना जाता है। प्रकृति के अंतर्गत व्यक्ति के विचार और व्यवहार की उन विशेषताओं को शामिल करते हैं जो एक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आनुवंशिकी और हार्मोन द्वारा पहुंचते हैं। यह वंशानुगत कारण हमारे सामाजिक व्यवहार को नियंत्रित करते हैं। दूसरी ओर पोषण के अंतर्गत हमारे परिवेश और पर्यावरण के विचारों और व्यवहारों पर पड़ने वाले प्रभाव को शामिल करते हैं। हमारे अधिकांश व्यवहार प्रकृति और पोषण दोनों से प्रभावित होते हैं। स्पष्ट है कि केवल प्रकृति ही नहीं बल्कि पोषण भी हमारे सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है। अतः हमारा सामाजिक व्यवहार प्रकृति और पोषण की अंतःक्रिया का परिणाम है।

छ) सामाजिक मनोविज्ञान एक आनुभविक विज्ञान है।

सामाजिक मनोविज्ञान परिकल्पनाओं का परीक्षण करते हुए मानव व्यवहार से संबंधित क्रमबद्ध प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करता है। इसके लिए आंकड़ों का संकलन प्रयोगशाला

और क्षेत्र अध्ययन दोनों ही तरीकों से किया जाता है। प्रयोग के उपागम व्यक्ति को केन्द्र में रखते हैं और यह व्याख्या करने के लिए खोज करते हैं कि कैसे और क्यों व्यक्तियों के व्यवहार, विचार और भावनाएं बनती हैं। प्रायोगिक निष्कर्ष व्यक्ति की विशेषताओं को जानने में सहयोग करती है और बताती हैं व्यक्ति कैसे दूसरों से प्रभावित होता है। सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक समस्याओं को समझने और सामाजिक स्वस्ति भाव को सुनिश्चित करने, और उपचारात्मक हस्तक्षेपों के विकास के लिए वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है। सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक समस्याओं से जुड़े आंकड़ों को इकट्ठा करता है। उदाहरण के लिए, प्रयोगशाला या क्षेत्र में अवलोकन द्वारा आंकड़ों को इकट्ठा किया जाता है। व्यक्ति पसंद या नापसंद को जानने के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार का प्रयोग किया जाता है। सामाजिक व्यवहार से जुड़ी समस्याओं को जानने के लिए प्रयोगों और अवलोकनों द्वारा एकत्रित आनुभाविक आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है।

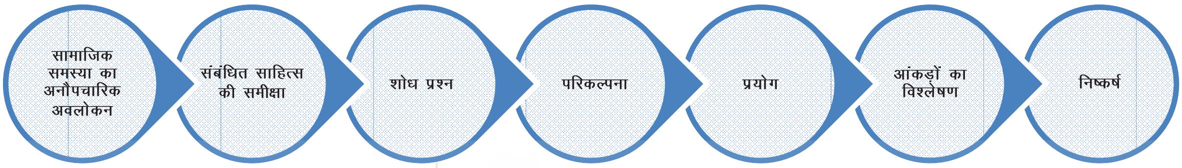

चित्र 14.3 : अध्ययन की आनुभविक विधि

ज) सामाजिक मनोविज्ञान हमारे दैनंदिन जीवन को प्रभावित करता है।

रोजमर्रा के जीवन में क्या सही है? क्या गलत है? के बारे में हमारे विचार और विश्वास होते हैं। ये हमारे सामाजिक जीवन के मार्गदर्शी सिद्धान्त होते हैं। हमारे विश्वास जैसे– दूसरों के लिए सम्मान, न्याय, ईमानदारी, दायित्व और अन्य मूल्यों की हमारे समाज में स्वीकृति है। सामाजिक जीवन के लिए साझेदारी के मूल्य और मानक आवश्यक हैं। इस संदर्भ में सामाजिक मनोविज्ञान हमें नए विचार और सूझ विकसित करने में मदद करता है जिसके आधार पर हम जान सकते हैं कि– कैसे समाज में अपने 'स्व' को मूल्य दिया जाए? कैसे दूसरों को प्रभावित किया जाए? कैसे दूसरों की अभिवृत्ति, मूल्यों और व्यक्तित्व को बदला जाए? उदाहरण के लिए मानव जीवन का क्या उद्देश्स है? हम कैसे अपने सामाजिक जीवन का निर्मित करें? हम कैसे अपने गुणों को नियमित करते हुए प्रसन्नतापूर्वक रहें? इन सवालों के उत्तर को सामाजिक मनोविज्ञान की विधियों, सिद्धान्तों और नियमों द्वारा खोजा जा सकता है। सामाजिक चिंतन, सामाजिक प्रभाव और सामाजिक संबंधों का सीधा प्रभाव व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक और सांवेगिक स्वस्ति भाव पर पर पड़ता है। अतः सामाजिक मनोविज्ञान हमें एक बेहतर जीवन जीने में मदद करता है।

गतिविधि 1

उन सामाजिक अपेक्षित और अनापेक्षित व्यवहारों की सूची बनाइए जो रोजमर्रा के जीवन में आपके व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

....

....

....

....

....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

अपनी प्रगति जाँचें 14.3

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5. सामाजिक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक परिस्थितियों में समझने का प्रयास करते हैं.......................... ।

   क) व्यक्गित व्यवहार

   ख) सामाजिक व्यवहार

   ग) व्यक्तिगत विचार

   घ) व्यक्ति व्यवहार और विचार दोनों

6. कौन सा सामाजिक विज्ञान का उपागम सामाजिक व्यवहार को निर्धारित करता है?

   क) सामाजिक प्रत्यक्षण

   ख) सामाजिक चिंतन

   ग) सामाजिक क्रिया

   घ) उपर्युक्त सभी

14.6 शिक्षा और सामाजिक मनोविज्ञान में संबंध

सामाजिक मनोविज्ञान की विषयवस्तु का संबंध है– हम कैसे सोचते, अनुभव करते और क्रिया करते हैं? दूसरे कैसे सोचते हैं। शिक्षा मानव के व्यवहार में परिमार्जन से संबंधित है। शिक्षा के अंतर्गत अधिगमकर्ता, सुगमकर्ता, अधिगम परिवेश, अधिगम अनुभव और अधिगम प्रक्रियाओं को शामिल किया जाता है। शिक्षा सामाजिक परिवेश में होती है। इसमें यह अध्ययन किया जाता है कि शैक्षिक परिवेश में किसी व्यक्ति का व्यवहार कैसे नियमित होता है। कक्षा में विद्यार्थियों की अन्तःक्रिया का अध्ययन सामाजिक मनोविज्ञान द्वारा किया जाता है। यह सामाजिक व्यवहार के संदर्भ को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा और सामाजिक मनोविज्ञान के निर्धारकों की व्याख्या निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत की जा सकती है।

क) विद्यार्थियों के व्यवहार की समझ

सामाजिक मनोवैज्ञानिक विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार में निहित कारकों को समझने में रूचि रखते हैं। विद्यार्थियों की क्रियाओं, भावनाओं, विश्वासों, स्मृतियों और निर्णयों का अध्ययन किया जाता है जिससे उनके व्यवहार को समझा जा सके।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित घटना का उदाहरण देखिए– आप अपने एक मित्र से मिलने की योजना बनाते हैं। वह मिलने के लिए आने में देरी करता है। आपको लगता है कि वह आएगा ही नहीं। अंततः वह आता है और क्षमा मांगते हुए कहता है कि वह भूल गया कि उसे आपसे मिलना है। इस पर आप क्या प्रतिक्रिया करेंगे? शायद आप चिढ़ जाएं या आप उसके बारे में नकारात्मक सोच सकते हैं। यदि वह प्रायः देर से आता है और ऐसे ही बहाने बनाता है तो आप उसके कारण को स्वीकार भी कर सकते हैं।

इस उदाहरण में मित्र के व्यवहार के बारे में आपकी पूर्व स्मृतियां, उसके व्यक्तित्व के बारे में प्रत्यक्षण आपके विशिष्ट सामाजिक व्यवहार का तय करेंगे। यह परिस्थिति बताती है कि सामाजिक व्यवहार के प्रकट होने में संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

ख) समाजीकरण के लिए अनुकूल वातावरण का विकास

समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज्ञान, मूल्यों, विश्वासों, संदर्भानकूल भाषा, अनुभवों और संप्रेषण के तरीकों की साझेदारी की जाती है। इन ज्ञान और मूल्यों को शैक्षिक परिवेश में एक विद्यार्थी से दूसरे विद्यार्थियों के बीच बातचीत, संवाद, प्रयोगों और अन्य अनुभवों द्वारा साझा किया जाता है। अध्यापक बच्चों के लिए संदर्भानुकूल महत्वपूर्ण अनुभवों की साझेदारी के लिए अवसर निर्मित करता है। विद्यालय सामाजीकरण के लिए विचारों और प्रश्नों के स्वतंत्र प्रवाह का अवसर उपलब्ध करता है। सामाजिक मनोविज्ञान समाजीकरण की प्रक्रिया में शामिल ज्ञान और मूल्यों का अध्यनन करता है और इसके अनुसार शैक्षिक गतिविधियों के बारे में सुझाव देता है।

ग) उच्च स्तरीय चिंतन कौशलों का विकास

शिक्षा व्यक्तियों की उच्च स्तरीय चिंतन कुशलताओं जैसे– तर्क करना, सृजनात्मकता, अर्थ–बोध, विचारऔर भावों की अभिव्यक्ति आदि के विकास में मदद करती है। यह व्यक्तियों के भाषा के विकास में भी सहयोग करती है। सामाजिक मनोविज्ञान व्याख्या करता है कि कैसे ये कुशलताएं व्यक्ति के निजी और शैक्षिक अनुभवों से संबंधित होती हैं। आइए किसी संस्था में काम करने वाले सदस्यों के बौद्धिक क्रियाकलापों को उदाहरण द्वारा समझते हैं कि सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्ति के संज्ञानात्मक विकास को समझने में कैसे मदद करता है–

- ✓ कोई सदस्य भाषा का प्रयोग कैसे करता है? (शब्द, समझने की क्षमता, वाक्य संरचना, मौलिकताख शब्दों और विचारों की रचनात्मकता)
- ✓ समाजोन्मुख ज्ञान (निष्कर्ष निकालने और सामान्यीकरण की क्षमता, संबंधों को देखना)
- ✓ सीखने की क्षमता
- ✓ जिज्ञासा

घ) सीखने की परिस्थितियों में सामाजिक व्यवहार के कारणों का अध्ययन

सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों के व्यवहार, भावनाओं और विचारो को समझने का प्रयत्न करता है। कक्ष सामाजिक परिस्थितियों का लघु रूप होता है। सामाजिक मनोविज्ञान में खोज की जाती है कि शैक्षिक वातावरण का विद्यार्थियों के व्यवहार, भावनाओं और विचारों पर किन तरीकों से प्रभाव पड़ता है। समूह गतिकी, द्वन्द निवारण, संज्ञानात्मक द्वन्द, अन्तरवैयक्तिक संबंध, संगठनात्मक वातावरण, अभिवृत्ति और प्रत्यक्षण समूह में सीखने के प्रमुख घटक हैं। ये घटक सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के रूचि के क्षेत्र हैं।

समाजिक व्यवहार का एक व्याख्यात्मक उदाहरण

आपने अध्ययन के लिए संस्थान विशेष को क्यों चुना? आप किसी व्यक्ति विशेष को क्यों पसंद करते हैं? प्रायः हम इन सवालों के उत्तर जानते हैं। कई बार हम नहीं भी जानते हैं। जब कोई हमसे पूछता है कि हमने ऐसा क्यों महसूस किया हम कुछ संभावित उत्तर देते हैं। पुनः, कारण तार्किक होने के बावजूद हमारी खुद की व्याख्याएं गलत होती हैं। जो कारक महत्वपूर्ण हैं उन्हें हम खारिज कर सकते हैं और जो महत्वपूर्ण नहीं हैं, उन्हें

स्वीकार कर सकते हैं। अतः सामाजिक मनोवैज्ञानिक यह समझने का प्रयत्न करते हैं कि इन घटकों के बीच संबंध कैसे बच्चों के अधिगम को प्रभावित करता है?

ड़) अद्ध सामाजिक मनोविज्ञान शैक्षिक नेतृत्व और कार्य अभिप्रेरणा में योगदान करता है।

शैक्षिक नेतृत्व की सामाजिक प्रकृति होती है। सच्चा नेतृत्व शिक्षा संस्थान के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य सदस्यों को प्रभावित करता है। यह संस्थान के सदस्यों को संतुष्टि देता है। उन्हें अभिप्रेरित करता है। उनमें कार्य के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पैदा करता है। यह कार्य संस्कृति की प्रभावशीलता में वृद्धि करता है। अध्यापकों का प्रदर्शन और विद्यार्थियों की उपलब्धि कार्य अभिप्रेरणा के परिणाम होते हैं। नेतृत्व और कार्य अभिप्रेरणा कैसे व्यक्ति और समूह के व्यवहार को प्रभावित करते हैं इसे सामाजिक मनोविज्ञान के द्वारा समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, संगठन में कार्य संस्कृति का विकास सामाजिक कारकों और व्यक्तिगत गुणों पर निर्भर करते हैं। अतः विद्यार्थियों और अध्यापकों के सामाजिक व्यवहार को समझने का तात्पर्य व्यक्तियों और परिस्थितियों दोनों को समझने से है।

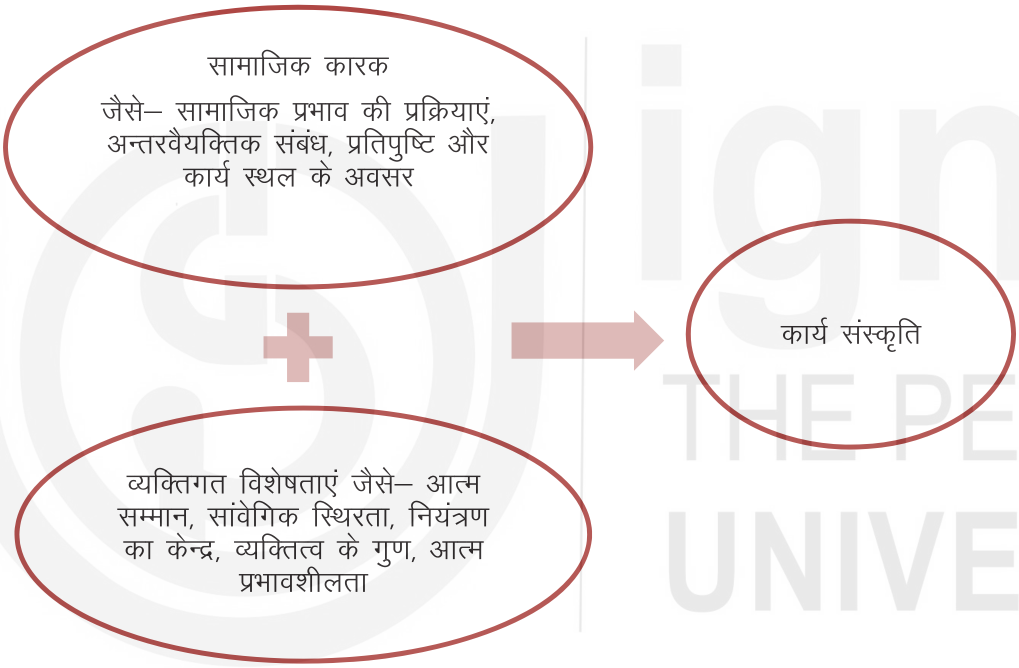

चित्र 14.4 : कार्य संस्कृति को प्रभावित करने वाले कारक

गतिविधि 2

अपने विद्यालयी अनुभवों पर विचार कीजिए। इन अनुभवों के आधार पर उन कठिनाइयों की सूची बनाइए जिन्हें आपने विद्यालयी दिनों में अनुभव किया हो। इसमें विषय के चुनाव, पढ़ने के दौरान मित्रों का चुनाव, अपनी रूचियों को चुनने आदि को रख सकते हैं। उन कारकों पर विचार कीजिए जिन्होंने आपको प्रभावित किया। आपके अभिभावकों, मित्रों और शिक्षकों का विचार आदि हो सकते हैं। व्याख्या कीजिए कि आपके विद्यालय की परिस्थितियों ने आपको कैसे प्रभावित किया?

....

....

....

....

अपनी प्रगति जाँचें 14.4

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

7. साामजिक मनोविज्ञान समाजीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में .... का अध्ययन करता है।

   क) व्यक्गित व्यवहार

   ख) सामाजिक व्यवहार

   ग) मूल्यों की साझेदारी

   घ) दूसरों की भावनाएं

8. लोगों के स्वस्ति भाव के लिए कौन सा कारक उत्तरदायी है?

   क) सामाजिक प्रत्यक्षण

   ख) सामाजिक संबंध

   ग) सामाजिक चिंतन

   घ) व्यक्तिगत संबंध

9. सामाजिक मनोविज्ञान समूह अधिगम परिस्थिति में ....के अध्ययन द्वारा सहायता करता है।

   क) अंतरवैयक्तिक संबंध

   ख) व्यक्तिगत व्यवहार

   ग) संगठनात्मक परिवेश

   घ) अंतरवैयक्तिक संबंध और संगठनात्मक वातावरण दोनों

10. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर 50 शब्दों में दीजिए।

   क) एक समूह में विद्यार्थी कैसे संबंधित होते हैं?

   ....

   ....

   ....

   ....

   ख) सामाजिक संबंध जाल के परिणामों का आप अध्ययन कैसे कर सकते हैं?

   ....

   ....

   ....

   ....

ग) कक्षा एक सामाजिक मनोवैज्ञानिक कार्यशाला है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं। इसके औचित्य को भी सिद्ध कीजिए।

....

....

....

घ) कक्षा अन्तःक्रिया के दौरान कौन से व्यवहार प्रारूप उत्पन्न होते हैं?

....

....

....

ङ) क्या ये व्यवहार प्रतिरूप सामाजिक मनोविज्ञान की उपस्थिति के प्रमाण हैं? व्याख्या कीजिए।

....

....

....

14.7 मनो–सामाजिक संप्रत्ययों के मुख्य प्रणेता

सामाजिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्यों का कई मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रसार किया गया है। इनके बारे में यहाँ चर्चा की गई है:

विलियम जेम्स (1890) एक अमेरिकी मनोविज्ञान थे जो सामाजिक मनोविज्ञान के एक अग्रणी अध्येता थे। इन्होंने अपने प्रकाशन में,'द कॉनसियसनेस ऑफ सेल्फ' में 'स्व' की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके मुख्य योगदान में 'स्व' की भावना व संज्ञान, और 'स्व' के विभिन्न आयाम सम्मिलित है। सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के भावनात्मक व्यवहार को प्रभावित करने में आत्मसम्मान की भूमिका को पहचानता है।

मैक्डूगल (1908) व्यक्तित्व की सामाजिक समायोजन की परिस्थितियों में चर्चा करते हैं। सामाजिक परिस्थितियां व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं को निर्धारित करती है। यह सामाजिक रूप से विकसित व्यक्तित्व का हिस्सा होता है। वे इस बात को लेकर चर्चा करते हैं कि पर्यावरण उद्दीपन हमारे व्यवहार को कैसे प्रभावित करता है की जगह पर हमें विचार करना चाहिए कि सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के भीतर क्या चलता है। अतः सामाजिक मनोवैज्ञानिक विचार करते हैं कि व्यक्ति का व्यवहार कैसे उसके वंशानुगत विशेषताओं से प्रभावित होता है।

अल्पोर्ट (1924) जो एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक हैं उन्होंने बताया था दूसरों की उपस्थिति खास तरह के व्यवहार को प्रेरित करती है। अतः उन्होंने उन सामाजिक परिस्थितियों का अध्ययन किया जो व्यवहार के लिए उत्तरदायी होते हैं। उन्होंने सामाजिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहारों का अध्ययन किया। अल्पोर्ट को व्यक्तित्व के मनोविज्ञान का पिता बताया जाता है। उनका मुख्य योगदान 'गुण सिद्धान्त' को प्रतिपादित करने में है। उनकी महत्वपूर्ण पुस्तकों में पूर्वग्रह की प्रकृति, प्रारूप, व्यक्तित्व का विकास और मनोविज्ञान में व्यक्ति की भूमिका शामिल हैं। इसी तरह से प्रेसी (1940) ने व्यक्ति के व्यवहार पर सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव का उल्लेख किया है।

जे.एफ. ब्राउन (1937) ने परिभाषित किया था कि सामाजिक विज्ञान का संबंध वस्तुओं और व्यवहारों के वर्गों का विवरण मात्र नहीं है बल्कि यह संबंधित है कि किन दशाओं में कोई घटना घटित होती है। नील मिलर (1941) हताशा– आक्रमकता परिकल्पना के जनक हैं। इन्हीं के कार्यों के आधार पर आगे चलकर आक्रामकता के सामाजिक संज्ञानात्मक और नव–संबंधवादी प्रारूपों का विकास हुआ। इन्होंने बल दिया कि आक्रामकता अनिवार्य न होकर हताशा के प्रति प्रतिक्रिया है। साामाजिक व्यावहारिक समस्याओं का निर्धारण आक्रामकता के सामाजिक–संज्ञानात्मक घटकों के कारण होता है।

लेविन (1939) सामाजिक मनोविज्ञान में एक प्रमुख क्षेत्र–सिद्धान्तकार है। इनका मानना था कि मनोविज्ञान को व्यक्ति और समूह दोनों के व्यवहारों को समान महत्व देना चाहिए। व्यवहार को अध्ययन करने के उनके प्रायोगिक तरीके ने सामाजिक मनोविज्ञान को वैज्ञानिक बनाया। इसी दिशा में लिपिट (1939) ने बताया कि सामाजिक पर्यावरण व्यक्ति के समग्र मनोवैज्ञानिक क्षेत्र की विशिष्टता है। उनका तर्क था कि सामाजिक समूह की विशेषता और उसमें किसी व्यक्ति का समायोजन किसी के पूरे जीवन में योगदान करता है।

बर्डी (1940) के विचार पर्यावरणीय दशाओं में व्यक्ति के व्यवहार की कार्यात्मक और समायोजन संबंधी प्रक्रियाओं से संबंधित थे। जानुस (1940) ने सुझाया कि संस्कृति सामाजिक मनोविज्ञान की एक प्रमुख विषयवस्तु है। अतः सामाजिक व्यवहार के पैटर्न में पर्यावरणीय कारकों के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है।

दुर्खाइम (1954) ने स्व की सामाजिक विशेषताओं के अध्ययन के लिए स्व का सामाजिक विश्लेषण किया। उनका सामाजिक विश्लेषण नैतिक विश्वासों के समूह पर आधारित था। उनके अनुसार इसके लिए पुरानी यांत्रिक धार्मिक विद्यालयों के बदले नई संस्थाओं की आवश्यकता होती है। अतः इसने स्व के विश्लेषण मेंयोगदान दिया।

अल्बर्ट बैंडुरा (1977) ने सामाजिक अधिगम सिद्धान्त दिया। इसमें इन्होंने बताया कि व्यक्ति क दूसरे के व्यवहार और अभिवृत्ति के अनुकरण व अवलोकन से सीखते हैं। अनुकरण और अवलोकन भी व्यवहार को निर्धारित करने वाले कारक हैं।

हाउस, लैंडिस और उंबरसन (1988) के कार्य में व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक गुणों और समाजिक संरचना, परिस्थितियों और पर्यावरण के बीच संबंध का परीक्षण किया गया है। अतः सामाजिक मनोविज्ञान अधिक आत्म जागरूकता और व्यक्तिगत सूझ को पैदा करने के लिए उपयोगी है।

बर्नार्ड वीनर (1986) ने क्षेत्र मनोविज्ञान में कार्य किया है। वे सफलता और विफलता के गुणों की पहचान करने वाले अपने शोध कार्य के लिए जाने जाते हैं। इसमें उन्होंने मुख्य गुणों और उनकी विमाओं की पहचान की। इनका अभिप्रेरणा और संवेग पर भी प्रभाव पड़ता है। उनका दावा था कि ये गुण सफलता और विफलता के अनुभव के लिए जिम्मेदार हैं। अतः हम व्यवहार की सामाजिक परिस्थितियों में व्याख्या करते हैं।

वर्तमान में सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक व्यवहार पर उद्विकासात्मक मनोविज्ञान के प्रभाव पर बल दिया है (बस, 1924)। वे सामाजिक व्यवहार में चित्तवृत्ति के प्रभाव की भी खोज कर रहे हैं (फोरगैसे, बाउमिस्टर और टिस, 2009)। अतः सामाजिक व्यवहार में चित्त वृत्ति के प्रभाव को भी सामाजिक मनोविज्ञान में सम्मिलित किया गया है।

21 वीं शताब्दी में इस बात का भी अध्ययन किया जा रहा है कि निर्णय लेने की प्रक्रिया को संज्ञान और अभिप्रेरणा के कारक प्रभावित करते हैं। दैनिक जीवन में निर्णय लेने की प्रक्रिया की भूमिका स्पष्ट है। यह सामाजिक परिस्थितियों में विशिष्ट क्रियाओं से उपजता

है। समाजिक मनोवैज्ञानिकों ने संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं और सामाजिक संज्ञान पर ध्यान केन्द्रित किया है (फिस्के, 2009)। इन्होंने सामाजिक विचार और सामाजिक व्यवहार के उस पक्ष का उद्घाटन किया जो बताता है कि हमारे सामाजिक जीवन में दिमाग का कौन सा हिस्सा शामिल रहता है (मॉब्स और साथी, 2009)।

हमारे स्वस्ति भाव के लिए सामाजिक पक्ष आवश्यक है। इस संदर्भ में, सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक संबंधों को समझने का प्रयास किया है कि वे एक समय के दौरान कैसे आरंभ होते हैं और बदलते हैं क्यों कई बार वे गहरे होते हैं और कई बार सतही होते हैं (स्लॉटर, गॉर्डनर औ फिन्केल, 2010)

सामाजिक मनोविज्ञान के शोध कार्य ने बताया है कि व्यक्ति के तुलना में समूह का बेहतर प्रदर्शन अनके कारकों पर निर्भर करता है इसमें कार्य की प्रकृति और साझेदारी उल्लेखनीय है (मिन्सन और म्यूलर, 2012)। सामाजिक मनोविज्ञान में बहुसांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों को सम्मिलित करते हैं। इसकी मदद से लिंग, उम्र, नृजातीयता, लैगिंक उन्मुखीकरण, दिव्यांगता, सामाजिक वर्ग, धार्मिक उन्मुखीकरण और अन्य सामाजिक कारकों की भूमिका का अध्ययन करते हैं (बैरेटो और एल्मर्स, 2015)।

यह स्पष्ट है कि सामाजिक मनोविज्ञान यह जानने का एक मजबूत साधन है जो बताता है कि लोग जैसा सोचते हैं, अनुभव करते हैं और क्रिया करते हैं वे वैसा क्यों करते हैं। इसी तरह यह प्रकाश डालता है कि बदलाव की प्रक्रिया के साथ समाज कैसे आकार लेता है। इस बदलती दुनिया में सामाजिक मनोविज्ञान का निहितार्थ है कि इसके द्वारा पता चलता है कि हम एक दूसरे से कैसे अन्तःक्रिया करते हैं। अतः मनोविज्ञान की शाखा के रूप में सामाजिक मनोविज्ञान यह जानने में मदद करता है कि सामाजिक बदलाव कैसे होता है। सामाजिक मनोविज्ञान के शोध कार्यों में मानव व्यवहार को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसमें यह शामिल है कि व्यक्ति कैसे डिजीटल तकनीकी और सोशल मीडिया का प्रयोग करते हैं? कैसे लोग अपनी अनुकूलता की दक्षता को विकसित करते हैं। अतः सामाजिक मनोविज्ञान एक रूचिकर विषय है जो लोगों के जीवन में सुधार करने से जुड़े प्रश्नों का उत्तर देता है।

अपनी प्रगति जाँचें 14.5

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

11. साामजिक मनोविज्ञान, समाजीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में .... का अध्ययन करता है।

क) बर्नार्ड वीनर

ख) विलियम जेम्स

ग) सॉफर

घ) टॉयलर

14.8 सारांश

सामाजिक मनोविज्ञान को विज्ञान माना जाता है। यह किसी के सामाजिक व्यवहार के कारणों का पता लगाने का प्रयास करता है। सामाजिक और शैक्षिक समस्याओं के संदर्भ में सामाजिक मनोविज्ञान निम्नलिखित प्रश्नों को संबोधित करता है–

- एक व्यक्ति दूसरों से क्यों संपर्क रखता है?
- जिन नकारात्मक संवेगों का हम अनुभव करते हैं वे कैसे हमारे अन्तरवैयक्तिक संबंधों को प्रभावित करते हैं?
- हम समाज में व्यक्तियों और लोगों का किन तरीकों से प्रत्यक्षण करते हैं?
- दूसरों के व्यवहार का अर्थ ग्रहण करने के लिए हम सामाजिक संदर्भों में कैसे सूचनाओं को याद रखते हैं और उनका अनुप्रयोग करते हैं?

अतः सामाजिक मनोविज्ञान व्यक्तियों के सामाजिक रूप से नियमित व्यवहारों की व्याख्या करता है। सामाजिक मनोविज्ञान की भूमिका के बारे में यह एक चुनौती है कि यह सामाजिक मुद्दों का अध्ययन करता है। कई सामाजिक मुद्दों को सामाजिक समस्या माना जाता है क्यों कि ये सामाजिक प्रगति को बाधित करती हैं। गुणात्मक शिक्षा एक सामाजिक मुद्दा है। यह गुणवत्तापूर्ण जीवन के लिए कुंजी है। इस क्षेत्र में सामाजिक मनोवैज्ञानिकों के योगदान ने सामाजिक समस्याओं को समझने और उसकी व्याख्या करने में मदद की है। इसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, और अपराध जैसे क्षेत्रों मे सामाजिक समस्याओं को पहचानने और विश्लेषण का कार्य किया जाता है। कक्षा में संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांवेगिक विकास में सामाजिक मनोविज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच संबंध और सामाजिक वर्गीकरण को ध्यान में रखा जाता है। स्वस्तिभाव और सामाजिक मनोविज्ञान में घनिष्ठ संबंध होता है। अतः व्यक्तियों के जीवन में सामाजिक संबंधों सुधार के लिए, कक्षा अंतःक्रियाओं और स्वस्ति भाव के लिए सामाजिक मनोविज्ञान का ज्ञान उपयोगी है।

14.9 संदर्भ और सुझावित पठनीय सूची

अल्पोर्ट, एफ. (1924). द ग्रुप फैलसी इन रिलेशन टू सोशल साइंस, अमेरिकन जरनल ऑफ सोशियोलजी, 29 पृष्ठ 688–703

बैंडुरा, ए. (1977). सोशल लर्निंग थियरी. न्यूयॉर्कः जनरल लर्निंग प्रेस

बैरेटो, एम. और एल्मर्स, एन. (2015). डिटेक्टिंग एंड एक्सपिरिन्सिंग प्रिज्यूडिसः न्यू एन्र्स टू ओल्ड क्वेश्चंस. एडंवासन्सेस इन एक्सपेरिमेंटल सोशल साइकॉलजी, 52 पृष्ठ– 139–219

बर्डी, आर. (1940). द फिल्ड ऑफ अप्लाइड साइकॉलजी, जरनल ऑफ अप्लाइड साइकालजी, 24 पृष्ठ– 553–575

ब्राउन, जे. (1937). द फील्ड थियरेटिकल अप्रोच इन सोशल साइकॉलजी, सोशल फोर्सेस, 15, पृष्ठ– 482–484

ब्रैन्सकॉम्बे, एन. और बैरन, आर. (2017). सोशल साइकॉलजी, इंग्लैंडः पीयरसन

बस, डी. (2004). इवोल्यूशनरी सॉइकॉलजीः द न्यू साइंस ऑफ माइंड, बोस्टनः एलन एंड बैकन

चार्ल्स, ए. एलवुड. (1924). द रिलेशंस ऑफ सोशियॉलजी एडं सोशल साइकॉलजी, जरनल ऑफ एब्नॉर्मल एंड सोशल सॉइकॉलजी, 19 पृष्ठ 3–12

क्रिस्प, ऑर और टर्नर आर (2012). इसेन्शियल सोशल साइकॉलजी, नई दिल्लीः सेज

फिस्के, एस. (2009). सोशल कॉगनिशन. इन डी. सैंडर और के. आर. शीरकर (एडीटरर्स). ऑक्सफोर्ड कम्पेनिय टू इमोशन एंड द अफेक्टिव साइंसेज पृष्ठ– 371–373 यूकेः ऑक्सफोर्ड

यूनिवर्सिटी प्रेस

फिस्के, टी. (2004). माइंड द गैपः इन प्रेज ऑफ इनफॉर्मल सोर्सेज ऑफ फॉर्मल थियरी, पर्सनॉलटी एंड सोशल साइकॉलजी रिव्यू 8, 132–137

फॉरगैस, जे., बाउमिस्टर, ऑर और टाइस डी. (2009). द साइकॉलजी ऑफ सेल्फ रेगुलेशन, सिडनीः साइकॉलजी प्रेस

हाउस जे. लैंडिस, के. और उंबरसन, डी. (1988). सोशल रिलेशनशिप एंड हेल्थ, साइंस, 241 पृष्ठ– 540–545

इकोबोनी, एम. (2009). इमीटेशन, इम्पैथी, और मिरर न्यूरॉन, एनुैअल रिव्यू ऑफ साइकॉलजी, 60, पृष्ठ– 653–670

जैनुस, एस. (1940). ऑल इ डाटा ऑफ सोशल साइकॉलजी, जरनल ऑफ सोशल साइकॉलजी, 12, पृष्ठ– 387–392

लेविन, के. (1936). प्रिंसिपल्स ऑफ टोपोलॉजिकल साइकॉलजी, न्यूयॉर्कः मैक्ग्राहिल

लेविन, के. (1936). फिल्ड थियरी एंड एक्सपेरिमेंट इन सोशल साइकॉलजीः कॉन्सेप्ट्स एंड मेथड, अमेरिकन जरनल ऑफ सोशियोलॉजी, 44 पृष्ठ– 868–896

लिपिट, ऑर. (1939). फिल्ड थियरी एंड एक्सपेरीमेंट इन सोशल साइकॉलजी ऑटोक्रेटिक एंड डेमोक्रेटिक ग्रुप एटमॉसफियर, अमेरिकन जरनल ऑफ सोशियोलॉजी, 45 पृष्ठ– 26–49

मॉरक्यूस, एच. (2005). ऑल टेलिंग लेस दैन वी कैन नोः द टू टैसिट विजडम ऑफ सोशल साइकॉलजी, साइकॉलजीकिल इन्कायरी, 16, 180–184

मैस्लो, ए. (1970). मोटीवेशन एंड पर्सनालिटी (द्वितीय संस्करण), न्यूयॉर्कः हॉर्पर एंड रो

मैक्डूगल (1908). एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल साइकॉलजी, लंदनः मेथुएन

मिंसन, जे. और मूलर जे. (2012). द कास्ट ऑफ कोलैबरेशनः व्हाइ ज्वाइंट ऑफ डिसीजन मेकिंग एक्जर्बेट्स रिजेक्शन ऑफ आउटसाइड इन्फॉर्मेशन, साइकॉलजिकल साइंस, 23 पृष्ठ 219–224

मिलर, एन. (1941). द फ्रस्टेशन–एग्रेशन हाइपोथिसिस, साइकॉलजिकल रिव्यू, 48, पृष्ठ 337–342

मॉब्स, डी., हैसेबीस, डी., सेमोअर, बी., मारीहंट, जें. विसक्फ, एन. एवं अन्य (2009). चोकिंग ऑन द मनीः रिवार्ड बेस्ड फरमार्मैन्स डिक्रीमेंट्स आर एसोशिएटेड विद मिडब्रेन एक्टिविटी, साइकॉलजिकल साइंस, 20 पृष्ठ 955–962

मॉयर्स, डी., सहजपाल पी. और बेहरा, पी. (2012). सोशल साइकॉलजी, नई दिल्लीः टाटा मैक्ग्रा हिल एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेड

प्रेसी, एस. (1940). फंडामेंटलिज्म, आइसोलेसनिज्म एंड बाइलॉजिकल पेडेन्ट्रि वर्सेज सोशियो–कल्चरल ओरिएंटेशन इन साइकॉलजी, जनरल ऑफ जनरल साइकॉलजी, 23, पृष्ठ 393–399

स्लाविन, ऑर (1995). रिसर्च ऑन क्वॉपरेटिव लर्निंग एंड अचीवमेंटः व्हॉट वी नो? व्हॉट वी नीड टू नो? जॉन होपकिंस विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध पत्र

स्लॉटर, ई. गॉर्डनर डब्ल्यू एंड फिंकेल ई. (2010). हू ऐम आई विदाउट यू? द इन्फ्लुएंस ऑफ रोमांटिक ब्रेकअप ऑन द सेल्फ कॉन्सेप्ट पर्सनालटी एंड सोशल साइकॉलजी बुलेटिन, 36, पृष्ठ–1 47–160

ट्रिप्लेट, एन. (1898). द डायनमोजेनिक फैक्टर्स इन पीसमेकिंग एंड कंपटीशन, अमेरिकन जरनल ऑफ साइकॉलजी, 9 (4), पृष्ठ– 507–533

विनर, बी. (1986). एन एट्रीब्यूशन थियरी ऑफ मोटिवेशन एंड इमोशन, न्यूयॉर्कः स्प्रिंगर

14.10 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1. क) कैसे लोग समाज में क्रिया करते हैं
2. ग) व्यक्तिगत विशेषताओं और पर्यावरण में अन्तःक्रिया
3. घ) उपर्युक्त सभी।
4. ख) सामाजिक न्यूरो सांइस
5. घ) व्यक्तिगत व्यवहार और विचार दोनों
6. घ) उपर्युक्त सभी।
7. ग) मूल्यों की साझेदारी
8. ख) सामाजिक संबंध
9. घ) अंतरवैयक्तिक संबंध और सांगठनात्मक वातावरण
10. आत्म–अभ्यास
11. क) बर्नार्ड वीनर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 15 शिक्षा की समझ हेतु मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों से स्थानान्तरण

संरचना

15.1 प्रस्तावना
15.2 उद्देश्य
15.3 व्यवहारवाद
 15.3.1 अनुकूलित अनुबंधन
 15.3.2 क्रियाप्रसूत अनुबंधन
15.4 स्व प्रत्यय का बोध
15.5 समूह एवं सामाजिक व्यवहार
15.6 संज्ञांनवाद
 15.6.1 गैने के पदानुक्रम अधिगम का सिद्धान्त
 15.6.2 असुबेल के अर्थपूर्ण अधिगम का सिद्धान्त
 15.6.3 ब्रूनर के अधिगम का सिद्धान्त
15.7 सामाजिक संज्ञान
15.8 सामाजिक संरचनावाद
15.9 सारांश
15.10. संदर्भ और पठन हेतु सुझावित पुस्तकें
15.11. अपने उत्तरों की जाँच करें

15.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक सर्वभौमिक व आजीवन चलने वाली प्रक्रिया हैद्य समस्त जीव अपनी अधिगम गति से ही सीखते हैंद्य मनुष्य कई गुणों से नवाजा गया है जैसे बुद्धि, तर्क–क्षमता, चिंतन, समस्य समाधान आदिद्य उन्हें औपचारिक, अनौपचारिक, गैर–औपचारिक संस्थाओं द्वारा शिक्षा प्राप्त होती हैद्य विभिन्न मनोवैज्ञानिक अधिगम सिद्धान्तों के प्रभावों के कारण मनुष्य की सीखने की प्रक्रिया में निरंतर बदलाव आ रहा है।

मनुष्यों को सिखाने की प्रक्रिया, अधिगम वातावरण में अधिगम परिणामो को प्रभावित करने वाले कारक, शैक्षिक वातावरण के अधिगम को बढाने वाले कारक आदि को मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

अतः शिक्षकों व शिक्षा शास्त्रियों को ये समझना अति आवश्यक है जिससे वे अपने अधिगमकर्ताओं को विभिन्न सन्दर्भ में सहायता कर सकते हैंद्य इस इकाई में विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों जैसे व्यवहारवाद, संज्ञानवाद व संरचनावाद, उनके सिद्धान्तों व शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किये जायेंगे।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के उपरान्त आप–

प्रो. रामाकांत महालिक, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर।

- व्यव्हारवाद के संप्रत्यय, सिद्धान्तों व शैक्षिक निहितार्थ स्पष्ट कर पाएंगे;
- स्व– प्रत्यय के संप्रत्यय, प्रकृति, सिद्धान्तों व शैक्षिक निहितार्थ का उल्लेख कर पाएंगे;
- संज्ञानवाद के संप्रत्यय, सिद्धान्त व शैक्षिक निहितार्थ का विवरण दे सकेंगे;
- सामाजिक संज्ञान के संप्रत्यय, सिद्धान्त व शैक्षिक निहितार्थ का उल्लेख दे सकेंगे; तथा
- सामजिक संरचनावाद के संप्रत्यय, सिद्धान्त व शैक्षिक निहितार्थ को स्पष्ट कर सकेंगे

15.3 व्यवहारवाद

अधिगम जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया हैद्य ये जन्म से ही शुरू हो जाती हैं और मृत्यु पर ही समाप्त होती है चूंकि ये मानव निकास का मुख्य तत्व है अतः हमें ये पता होना चाहिए कि अधिगम क्या है? ये कैसी होती है? अधिगम के लिए कौन सी उपयुक्त परिस्थितियाँ हैं? मनोविज्ञान के विभिन्न संस्थानों ने अधिगम सम्बंधित प्रश्नों का उत्तर प्रदान किया है।

व्यावहारिक विचारधारा के विभिन्न सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक द्वारा प्रस्तावित की गयी इस विचारधरा के अंतर्गत दो मुख्य अधिगम सिद्धान्त ही–अनुकुलित (शास्त्रीय) अनुबंधन व क्रिया प्रसूत अनुबंधन।

15.3.1 अनुकुलित अनुबंधन

इवान पी पावलोव (1849–1936) एक रूसी मनोवैज्ञानिक ने अधिगम की अनुकुलित अनुबंधन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था। उन्हें कुत्तो की पाचनक्रिया के शोध पर नोबल पुरस्कार दिया गया था। उन्होंने अपने शोध में पता कि कुत्ते न केवल भोजन को देखकर आपितु भोजन के कटोरे, शोधकर्ता व आवाज से भी लार स्त्राव करते हैं। पहले पावलोव को प्रतीत हुआ कि लार उत्पन्न होना एक शारीरिक क्रिया है, परन्तु बाद में एहसास हुआ की ये मनोवैज्ञानिक कारणों से होता है। हम ये निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उन्होंने कुत्ते के लार स्त्राव पर दृष्टिकोण, शारीरिक से मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया पर स्थानांतरित किया।

पावलोव प्रयोग

पावलोव ने अपने प्रयोग में लार स्त्राव को स्पष्ट करने के लिए कुछ शब्दावली का प्रयोग किया जैसे– स्वाभाविक उद्दीपन, स्वाभाविक अनुक्रिया, अनुबंधित उद्दीपन तथा अनुबंधन अनुक्रिया। भोजन को देखकर मुँह में लार उत्पन्न होना एक प्राकृतिक अनुक्रिया है, जिसे स्वाभाविक अनुक्रिया कहते हैं। भोजन एक स्वाभाविक उद्दीपन है जो स्वाभाविक अनुक्रिया जैसे मुँह में लार आना की क्रिया को उत्पन्न करता है। जब पावलोव ने लगातार घंटी बजाकर भोजन दिया जिससे कुत्ते के मुँह में लार उत्पन्न हुई। कुछ समय पश्चात केवल घंटी बजाने पर ही (अनुबधित उद्दीपन) लार उत्पन्न हुई जो एक अनुबधित अनुक्रिया थी। इस क्रिया को एक मॉडल द्वारा दर्शाया जा सकता हैः –

1. स्वाभाविक उद्दीपन (भोजन) ....स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
2. अनुबंधित उद्दीपन (घंटी) + स्वाभाविक अनुक्रिया (भोजन)........स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
3. अनुबंधित उत्पीदन (घंटी)..................................अनुबंधित अनुक्रिया (लार)

अनुकुलित अनुबंधन को हम इस प्रकार परिमापित कर सकते हैं– यह एक क्रमबध प्रक्रिया है जिसमें एक तथष्ट उद्दीपन स्वाभाविक उद्दीपन के साथ एक प्राक्रतिक उद्दीपन की विशेषताएं अपना लेता है, इसे उद्दीपन प्रतिस्थापन भी कहते हैं।

उच्च स्तरीय अनुबंधन, एक अन्य प्रकार का अनुबंधन है– जो निम्न हैं।

1. स्वाभाविक उद्दीपन (भोजन).........स्वाभाविक अनुक्रिया (लार)
2. अनुबंधित उद्दीपन + स्वाभाविक उद्दीपन (घंटी + भोजन).........अनुबंधित अनुक्रिया (लार)
3. अनुबंधित–1. (घंटी) + अनुबधित उद्दीपन–2 (प्रकाश)........... अनुबंधित अनुक्रिया (लार)
4. अनुबंधित अनुक्रिया–2 (प्रकाश)................................ अनुबंधित अनुक्रिया (लार)

शैषिक निहितार्थ

पावलोव एक अग्रगामी थे जिन्होंने मनोवैज्ञानिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनके क्लासिकी अनुबंधन सिद्धान्तं को कईं समस्याओं के समाधान हेतु एक सैद्धान्तिंक रुपरेखा तथा एक प्रायोगिक तकनीकी के रूप में प्रयोग किया गया। उनका विचार था "एक व्यक्ति के अधिगम की क्षमता उसके तंत्रिका तंत्र के प्रकार तथा पुनर्बलन के अंतर्गत क्रिया अभ्यास पर निर्भर हैं।" किसी प्रकार के अधिगम के लिए अंतर्नोद बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा किसी की क्रिया करने को प्रेरित करता है।

निम्नलिखित क्षेत्रों में अनुकुलित अनुबंधन का प्रयोग शैक्षिक परिस्थितियों में किया जा सकता है।–

बालकों को अपने अच्छे कार्यों के लिए जैसे सफाई, बड़ों को आदर, सत्कार, नियमितता आदि के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए।

i. बच्चों के गलत कार्य व बुरी आदतों को उपयुक्त अनुबंधनों द्वारा कम किया जा सकता है।

ii. अनुकुलित अनुबंधन सिद्धान्तों के द्वारा अल्प मानसिक स्वास्थय वाले बच्चओं को अपने संवेगात्मक भय को स्नेह, प्रेम, एवं अछे उपचार द्वारा दूर किया जा सकता है।

iii. इसका प्रयोग अधिगम अवं शिक्षक के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति विकसित करने तथा ऋणात्मक अभिवृत्ति को खत्म करने के लिए किया जा सकता है।

iv. अनुकुलित अनुबंधन के सिद्धान्तों का प्रयोग शिक्षक द्वारा कक्षा कक्ष शिक्षण में भाषा अधिगम तथा गणित जैसे विषयों में किया जाता है।

15.3.2 क्रिया–प्रसूत अनुबंधन

इस सिद्धान्तं का विकास हार्वड विश्वविद्यालय के बी.फ.स्किनर (1904–1990) द्वारा किया गया। उन्होंने अपने प्रयोग मुख्यतः चूहे व कबूतरों पर किये। उन्होंने दो प्रकार के अनुबंधनों का उल्लेख किया।

1. प्रतिवादी अनुबंधन
2. क्रियाप्रसूत अनुबंधन

क्रियाप्रसूत अनुबंधन में अगर पुनर्बलित उद्दीपन को तटस्थ उद्दीपन के साथ युग्मित किया जाए तो उसमें प्राकृतिक उद्दीपन की विशेषताएं आ जाती है जिसे प्रतिवादी अनुबंधन कहते हैं। जब अनुक्रिया स्वतः ही उत्पन्न होती किसी भी उद्ददीपन की अनुपस्थिति में तो उसे क्रिया प्रसूत अनुबंधन कहते हैं।

इस तरह की अनुक्रिया पुरस्कार पाने में सहायक होती है अतः इसे साधनात्मक अनुबंधन कहते हैं। इसे हम क्रियाप्रसूत अनुबंधन के एक उदाहरण से समझने की कोशिश करते हैं।

स्किनर ने चूहों, कबूतरों आदि पर कई प्रयोग किये और एक प्रत्यय विकसित किया की जीव दो प्रकार का व्यवहार दर्शाते हैं– 1) प्रतिवादी 2) क्रिया प्रसूत। अनुक्रिया, उद्दीपन से जुड़ी हुई है वही व्यवहार से क्रियाप्रसूत, उद्दीपन से सम्बंधित नहीं है। यह व्यवहार से स्वतन्त्र है। चूहों के प्रयोग में एक बक्सा लिया जिसमें लीवर लगा था। जैसे ही बक्से में बंद चूहे का पैर पड़ता वो लीवर आवाज करता और उसको सामने भोजन आ जाता। यह भोजन उसके लिए पुनर्बलन का कार्य करता जो एक प्राकृतिक उद्दीपन है तथा चूहे को अनुक्रिया के रूप में लीवर दबाने हेतु प्रोत्साहित करता है। भूखे होने के कारण चूहा क्रिया शील अथवा क्रिया प्रसूत हो गया। इस प्रक्रिया में स्किनर ने देखा की चूहा अनुक्रिया पहले करता है और बाद में उसे उद्दीपन प्राप्त होता है। अतः क्रियाप्रसूत अनुबंधन में अनुक्रिया पहले तथा उद्दीपन बाद में आता है।

क्रियाप्रसूत अनुबंधन की प्रक्रिया में दो प्रकार के पुनर्बलन है दृ 1. धनात्मक 2. ऋणात्मक पुनर्बलनद्य ये स्पष्ट था की विषयी (मानव बालक) को धनात्मक पुनर्बलन (प्रशंसा आदि) का फल तभी मिलता है जब वह सक्रिय प्रदर्शन दिखाता है और गतिविधियों में असक्रिय रहने पर ऋणात्मक पुनर्बलन प्राप्त होता है।

अनुकुलित व क्रियाप्रसूत अनुबंधन में अंतर–

अनुकुलित अनुबंधन में उद्दीपन पहले दिया है और विषयी अनुक्रिया उसके बाद देता हैं।

- क्रियाप्रसूत अनुबंधन में विषयी अनुक्रिया पहले दिखाता है और फिर उद्दीपन प्राप्त होता है।
- उद्दीपन अनुक्रिया बंध अनुकुलित अनुबंधन में क्रियाप्रसूत अनुबंधन की तुलना में कमजोर होता है।
- दोनो प्रकार के अनुबंधन में अधिगम होता है।
- शिक्षण प्रक्रिया में दोनों प्रकारों की महत्ता व प्रयोग होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

मानव अधिगम व कक्षा– कक्ष शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया हेतु क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत के महत्वपूर्ण निहितार्थ है–

- अगर इस सिद्धान्तं का उपयुक्त प्रयोग कक्षा में किया जाए तो छात्रों के अधिगम की सुविधा होगी।
- इसका प्रयोग बालक के व्यवहार को आकार देने में कर सकते हैं, जिसके लिए दोनों धनात्मक व ऋणात्मक पुनर्बलन की सहायता ले सकते हैं। धनात्मक पुनर्बलन अपेक्षित व्यवहार को सुदृढ़ करता है तथा नकारात्मक पुनर्बलन अनोपेक्षित व्यवहार को पुनः होने से रोकता है।
- कार्यक्रमित (क्रमबद्ध) अधिगम स्किनर का समसे बड़ा योगदान है। विभिन्न विद्यालयी विषयों के शिक्षण के लिए वैयक्तिक व क्रमबद्ध अनुदेशनात्मक रणनीति ही कार्य–क्रमित अधिगम है। छात्रों को अपनी गति व रूचि से सीखने में सहायता करता है। बालक को सही अनुक्रिया करने पर अगले स्तर तक बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षक को भी छात्रों की आवश्यकताओं का व्यक्तिगत रूप से पूरा करने में सहायता करता है। स्किनर ने छात्रों की शब्दावली व अर्थपूर्ण अधिग्रहण में सुधार हेतु कार्यक्रमित अधिगम की उपयोगिता पर बल दिया। इस प्रकार के अधिगम में छात्रों के समक्ष, शब्दों को तार्किक क्रम में प्रस्तुत किये जाते हैं।

Table 15.1 अनुकुलित अनुबंधन व क्रियाप्रसूत अनुबंधन में तुलना

अनुकुलित अनुबंधन	क्रियाप्रसूत अनुबंधन
इसे इवान पावलोव द्वारा विकसित किया गया था।	इसे बी.एफ. स्किनर द्वारा विकसित किया गया था।
इसे पावलोवियन अथवा टाइप–1 अधिगम भी कहते हैं।	इसे स्किन्नेरियन अथवा टाइप–2 अधिगम भी कहते हैं।
प्रयोग कुत्तों पर किया गया।	प्रयोग चूहों व कबूतरों पर किया गया
अधिगमकर्ता निष्क्रिय होता है।	अधिगमकर्तायें पुरुस्कृत या दण्डित होने के लिए सक्रीय रूप से भाग लेते हैं।
उद्दीपन व अनुक्रिया का साहचर्य, समीपता के नियम की वजह से होता है (दोनों क्रियाओं के बीच का समय अंतराल बहुत कम होता है)।	उद्दीपन व अनुक्रिया का साहचर्य, प्रभावित के नियम की वजह से होता है (अनुक्रिया जो संतोषजनक प्रभाव उत्पन्न करती है वो दोहराया जाता है, जो अनुक्रिया असंतोष उत्पन्न करती है उसके दोबारा होने की सम्भावना कम होती है)।
यह स्वायत्त तंत्रिका तंत्र द्वारा नियंत्रित किया जाता है।	यह केंद्रीय तंत्रिका तंत्र द्वारा नियंत्रित किया जाता है।
प्रतिक्रिया करने से पहले पुनर्बलन प्रदान किया जाता है।	प्रतिक्रिया होने के बाद पुनर्बलन दिया जाता है।
यह एकल उत्तेजना प्रतिक्रिया बंधन से संबंधित है।	यह वांछित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रतिक्रिया की श्रृंखला से संबंधित है।
स्वाभाविक उद्दीपन व अनुबंधित उद्दीपन में युग्मक देखने को मिलता है।	स्वाभाविक उद्दीपन व अनुबंधित उद्दीपन में युग्मक देखने को नहीं मिलता है।
इसकी शुरुआत शून्य शक्ति के साथ होती है क्योंकि यह अनुकुलित अनुबंधित है।	इसमें शून्य ताकत नहीं है क्योंकि इसे कम से कम एक बार होने के बाद ही पुनर्बलित किया जा सकता है।

15.1 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

1. अनुकुलित अनुबन्धन क्या है?

....

....

....

2. अनुकुलित और क्रियाप्रसूत अनुबंधन के मूल अंतर को स्पष्ट करें।

....

....

....

15.4 स्व–प्रत्यय का बोध

स्व–प्रत्यय का विचार 'हमारी मान्यताओं और ज्ञान' के बारे में बताता है। स्व–प्रत्यय को आमतौर पर हमारे व्यवहार, क्षमताओं और अद्वितीय विशेषताओं के व्यक्तिगत विचारों के रूप में सामान्यतः सोचा जाता है। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति की मान्यताएं जैसे वह एक अच्छा दोस्त है 'या वह एक दयालु व्यक्ति है' उस व्यक्ति की समग्र स्व–प्रत्यय का हिस्सा है। मूल रूप से, स्व–प्रत्यय हमारी पहचान की भावना से प्रभावित होती है। स्व–प्रत्यय की कुछ परिभाषाएँ इस प्रकार हैं:

कार्ल रोजर्स (1951) ने परिभाषित किया, 'आत्म/स्व– एक वास्तविक या आदर्शित आत्म के बारे में आत्म–धारणाओं का एक संगठित विन्यास है, जिसके बारे में व्यक्ति जागरूक होता है।

हमाचेक (1987) ने परिभाषित किया गया, "आत्म–अवधारणा एक व्यक्ति का स्वयं का सम्पूर्ण दृष्टिकोण है'।

बर्न्स (1993) ने परिभाषित किया, "आत्म–अवधारणा, आत्म–सम्मान, आत्म–मूल्य या आत्म–स्वीकृति है जिसमें अपने बारे में सभी विश्वास और निर्णय शामिल हैं। यह परिभाषित करता है कि हम अपने स्वयं के मस्तिष्क में क्या हैं, हम अपने मस्तिष्क में क्या कर सकते हैं, और हम अपने मस्तिष्क में क्या बन सकते है।"

पीयर्स व हर्जबर्ग (2002) ने परिभाषित किया, "आत्म–अवधारणा एक अपेक्षाकृत स्थिर अभिवृत्ति है जो अपने स्वयं के व्यवहार और विशेषताओं के विवरण और मूल्यांकन दोनों को दर्शाती है'।

स्व–अवधारणा की प्रकृति

- आत्म–अवधारणा अपने बारे में खुद के बारे में विश्वास है।
- यह उन मान्यताओं का गठन करता है जो अपने बारे में सोचते ही मस्तिष्क में आती हैं।
- स्व–अवधारणा अपने पिछले अनुभवों से निर्मित होता है और अपने व्यक्तित्व शीलगुणों, क्षमताओं, भौतिक विशेषताओं, मूल्यों, लक्ष्यों और सामाजिक भूमिकाओं के साथ एकीकृत होता है।
- प्रत्येक आत्म–आरेख (स्कीमा) (स्कीमा एक संगठनात्मक पैटर्न या एक वैचारिक रूपरेखा है) अपेक्षाकृत अलग अवधारणाओं और भावनाओं द्वारा परिभाषित की जाती है। उदाहरण के लिए, आपके पास अपने सामाजिक कौशल के बारे में काफी जानकारी हो सकती है और उनके बारे में काफी आत्मविश्वास महसूस कर सकते हैं, लेकिन अपने शारीरिक कौशल के बारे में सीमित जानकारी और कम आत्मविश्वास है।
- स्वयं के बारे में विश्वास न केवल किसी व्यक्ति के वर्तमान व्यवहार को प्रभावित करता है, बल्कि उसके भविष्य के व्यवहार को भी प्रभावित करता है।

आत्म–अवधारणा के प्रत्यय का संक्षिप्त विवरण

- स्व–अवधारणा के बारे में निष्कर्ष, निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा ऊपर की चर्चा के आधार पर दिया जा सकता है।
- स्व अवधारणा हमारे अपने संज्ञानात्मक और भावात्मक स्तरों के बारे में समग्र विचार है।
- स्व–अवधारणा एक बहुआयामी निर्माण है जिसमें सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, भौतिक और भावनात्मक पहलुओं के बारे में अलग–अलग विचार शामिल हैं।

- यह जन्मजात नहीं है बल्कि सीखने या अनुभव के साथ बनती है।
- आत्म–अवधारणा बनाने में सामाजिक संपर्क एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह आनुवंशिकता और पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित होता है।
- बचपन में आत्म–अवधारणा विकसित होने लगती है। यह बचपन और किशोरावस्था के बीच अधिकतम विकसित होता है, हालांकि यह हमारे जीवन भर बना रहता है।
- किसी व्यक्ति की आत्म–अवधारणा एक बार बन जाने के बाद उसे बदलना मुश्किल होता है, लेकिन बाद के वर्षों में यह बदल भी सकता है।

शैक्षिक निहितार्थ

- यह बच्चों को कक्षा के अंदर और बाहर दोनों में सामाजिक–व्यक्तिगत संबंध विकसित करने में मदद करता है।
- स्व–अवधारणा बच्चों को उनके व्यवसाय के विकास में मदद करती है।
- स्व–अवधारणा बच्चों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में सहायता करती है।
- आत्म–अवधारणा बच्चों में आत्म–प्रेरणा पैदा करती है।
- स्व–अवधारणा अच्छे सहकर्मी समूहों की मदद से बच्चों में आत्म–चेतना को बढ़ावा देता है।

15.2 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

3. स्व–अवधारणा स्वप्रत्याय क्या है?

....

....

....

4. आत्म–अवधारणा की प्रकृति का वर्णन करें।

....

....

....

15.5 समूह एवं सामाजिक व्यवहार

सामाजिक व्यवहार में सामाजिक वातावरण से आने वाले उत्तेजनाओं के बीच या व्यक्तियों के बीच सक्रिय अंतःक्रिया शामिल है। इस तरह की अंतःक्रिया के परिणामस्वरुप अवधारण ाात्मक प्रतिक्रिया, गत्यात्मक प्रतिक्रिया और भावात्मक प्रतिक्रियाओं में परिवर्तन हैं। फिर भी, परोपकारी व्यवहार, सामाजिक व्यवहार का एक महत्वपूर्ण घटक है, जिसका अर्थ है दूसरों की भलाई के लिए निःस्वार्थ चिंताएं और इसमें से कुछ भी पाने के इरादे से दूसरों की मदद करना है। इसलिए, जब आप एक समूह में होते हैं, तो आप सीखते हैं कि दूसरों के साथ सामूहिक रूप से कैसा व्यवहार करें। हम समूह की आवश्यकता के अनुसार अपने व्यवहार को बदलते और संशोधित करते हैं।

समूह तब बनता है जब दो या दो से अधिक व्यक्ति, साधारण लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु एक साथ एकत्रित होते हैं। समूह के सदस्य आपस में अंतःक्रिया करते हैं और अन्तःनिर्भर हो जाते हैं। एक विशेष कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों का समूह, सामाजिक समूह का सबसे अच्छा उदाहरण है। समूह व्यवहार के विकास के लिए कक्षा एक उपयुक्त स्थान है। इसके अतिरिक्त, बच्चे कक्षा के बाहर समूह व्यवहार भी करते हैं जैसे खेल का मैदान, क्लब की गतिविधियाँ, क्षेत्र के दौरे और सामाजिक त्योहारों के दौरान, आदि। समूह की गतिशीलता का अध्ययन समूह के सामाजिक व्यवहार के महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है।

शैक्षिक निहितार्थ

समूह और सामाजिक व्यवहार के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हैं:

- समूह और सामाजिक व्यवहार छात्रों को अच्छी नागरिकता विकसित करने में सहायता करेगा।
- वे सामाजिक समूह के भीतर सहयोग, सहकारिता में सुधार करते हैं, और समाज के सभी प्रकार के सामाजिक कल्याण के लिए एक श्रृंखला बनाते हैं।
- एक बच्चे का सभ्य सामाजिक व्यवहार उसे समाज के लिए अधिक तर्कशील बनाने में सहायक होते है।
- यह लोगों और राष्ट्र के बीच समाज के लिए एकता और एकीकरण के लिए भी मदद करता है।
- अच्छा सामाजिक व्यवहार सामाजिक मान्यता और अनुकूल सामाजिक जीवन प्रदान करता है।

15.6 संज्ञानवाद

व्यवहारवाद के खंड में, हमने चर्चा की है कि मानव जब कुछ वस्तुओं या घटनाओं का अवलोकन करता है तभी वह सीखता है। इस मामले में, मनोवैज्ञानिक अपने अध्ययन को अवलोकनीय व्यवहार पर केंद्रित करते हैं। व्यवहारवाद के विपरीत, संज्ञानवाद, मनोविज्ञान का अध्ययन है जो हमारी मानसिक प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करता है जैसे कि हम कैसे सोचते हैं, विचारते हैं, सीखते हैं, समस्या का समाधान करते हैं, आदि।

रॉबर्ट गेने (1916–2002) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक ने मानसिक प्रक्रियाओं की जटिलता की मात्रा के संदर्भ में अधिगम के सिद्धांत को विकसित किया। उनके अनुसार, अधिगम ऐसा है जो किसी व्यक्ति के मस्तिष्क के अंदर होती है जिसे सीधे तौर पर नहीं देखा जा सकता है। यह अवलोकन योग्य व्यवहार या किसी कार्य को करने की क्षमता में परिवर्तन से ही संपन्न होता है। इस प्रकार अधिगम के पीछे प्रमुख कारण प्रदर्शन को बदलने और अभिवृत्ति, रुचि या मूल्यों जैसे गुणों को बदलने की क्षमता का विकास है, जिसे हम नए अधिगम के अधिग्रहण के कारण व्यवहार में बदलाव कहते हैं।

उनका सिद्धांत सीखने की बाह्य तथा आंतरिक स्थितियों से संबंधित है। आंतरिक स्थिति अधिगमकर्ता की पिछली सीखने की क्षमताओं को संदर्भित करती है अर्थात शिक्षार्थी शिक्षा से पहले क्या जानता है? बाह्य स्थिति का तात्पर्य उत्तेजनाओं उद्दीपनो से है जो शिक्षार्थियों को बाह्य रूप से प्रस्तुत की जाती हैं। उन्होंने सीखने के चार चरण सुझाए जो इस प्रकार हैं:

i) उद्दीपन की स्थिति प्राप्त करना

ii) अधिग्रहण की अवस्था

iii) संचरण

iv) पुनः प्राप्ति

गैने का मानना था कि अधिगम को केवल अधिगम के सिद्धांतों की सहायता से समझाया नहीं जा सकता। उन्होंने सरल अधिगम हेतु अनुकुलित अनुबंधन एवं क्रियाप्रसूत अनुबंधन के सिद्धान्तों का उपयोग किया लेकिन वे अवधारणा सीखने और समस्या को हल करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं।

15.6.1 गैने के पदानुक्रम अधिगम का सिद्धांन्त

गैने का विचार था कि अधिगम की अवधारणा को समझने के लिए उसकी स्थितियाँ पूर्वापेक्षाएँ हैं। वह मानता है कि अधीगम की परिस्थितियां और व्यवहारों की कई क्रम हैं। शिक्षण का कार्य स्मृति से चिंतन स्तर तक निरंतर है। वह शिक्षण को प्रत्येक चरण में सीखने की स्थिति की व्यवस्था को अधिगम मानते है। उन्होंने आठ अलग–अलग प्रकार की स्थितियों की पहचान की, जिसमें मानव का अधिगम होता है। यह अधिगम की व्यवस्था सरल से जटिल की ओर होती है। सांकेतिक अधिगम (सिग्नल लर्निंग) सरल तथा समस्या समाधान जटिल है। उनके सीखने के सिद्धांत को अधिगम के पदानुक्रम सिद्धांत के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने चित्र 15.1 में प्रस्तुत आठ प्रकार के शिक्षणों की पहचान की।

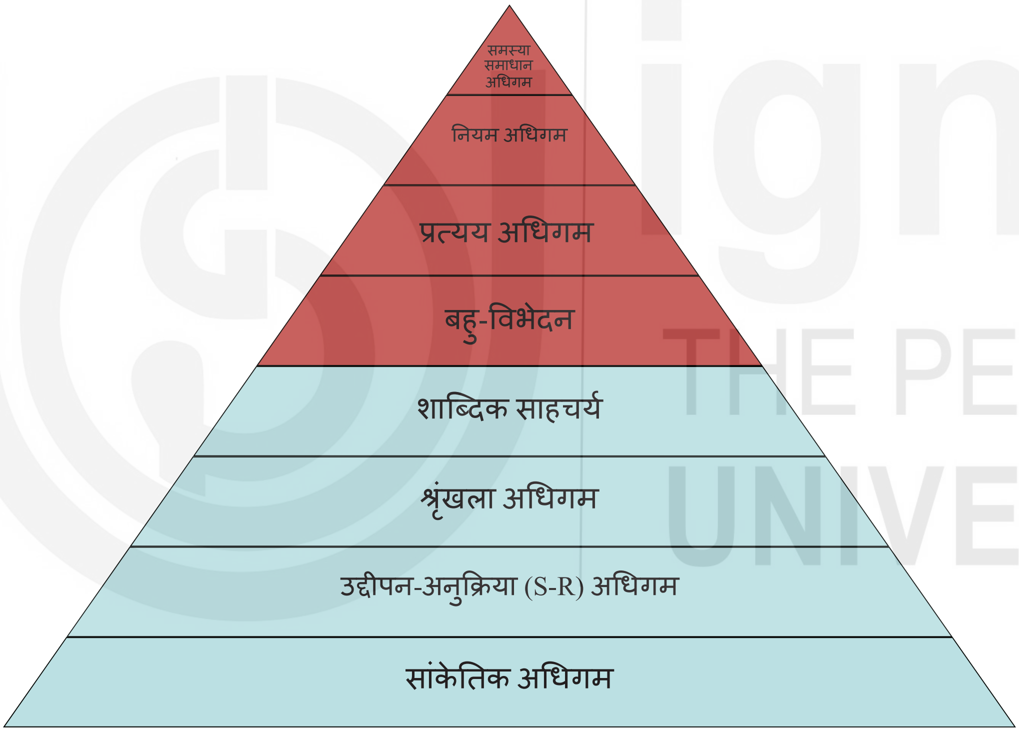

चित्र 15.1 : पदानुक्रम अधिगम का सिद्धान्त

(**नोटः** समस्या को सुलझाने, नियम अधिगम, प्रत्यय अधिगम और बहु–विभेदन सीखने का संबंध संज्ञानात्मक पहलुओं से अधिक है, और शाब्दिक साहचर्य, श्रृंखला अधिगम, एस–आर अधिगम और सांकेतिक अधिगम का व्यवहार पहलुओं से अधिक संबंध है।)

शैक्षिक निहितार्थ

गैने के सिद्धान्त में अधिगम के आठ स्तर शामिल हैं, जहाँ सीखने वाला अगले उच्च स्तर में दक्षता प्राप्त करने से पहले निम्न स्तर पर प्रभुत्व प्राप्त करता है। सबसे निचले चार स्तर व्यवहार संबंधी पहलुओं पर केंद्रित होते हैं, जबकि संज्ञानात्मक पहलुओं पर उच्चतम चार स्तर होते हैं। यह सांकेतिक अधिगम के साथ शुरू होता है और समस्या समाधान के साथ समाप्त होता है। सांकेतिक अधिगम के माध्यम से बच्चों की पसंद–नापसंद का अधिग्रहण किया जाता है। गैने ने वकालत की कि अधिगमकर्ता को सरल से जटिल चीजों को सीखना चाहिए जिससे वह व्यवस्थित तरीके से चीजों को आसानी से सीख सके।

श्रृंखला अधिगम तब होता है जब अधिगमकर्ता पहले से सीखे गई उद्दीपनो को जोड़ने में सक्षम होते हैं। गहरे अधिगम हेतु एक व्यवस्थित संरचना बनाने में प्रत्यय अधिगम एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गणित, विज्ञान और भूगोल जैसे विद्यालयी विषयों में नियम सीखना महत्वपूर्ण है। समस्या समाधान अंतिम स्तर है जहां शिक्षार्थी समस्याओं को हल करने के लिए प्रक्रियाओं का आविष्कार करने की क्षमता विकसित करते हैं। इसलिए, छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित तरीके से सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करना और उपयुक्त रणनीति तैयार करना शिक्षक की जिम्मेदारी है।

15.6.2 आसुबेल के अर्थपूर्ण अधिगम का सिद्धान्तं

डेविड पी.उसोबेल (1918–2008) अर्थपुर्ण अधिगम सिद्धान्तं के प्रणेता थे। वह एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे। शाब्दिक अधिगम उनके सिद्धान्तं की मुख्य चिंता है। वह बताते हैं कि कैसे अधिगमकर्ता अपनी संज्ञानात्मक संरचना (मन में ज्ञान की संरचना) में नई जानकारी सम्मिलित करते हैं। उसके लिए मौजूदा संज्ञानात्मक संरचना एक नई सामग्री के सीखने और प्रतिधारण को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक है। वह उन सवालों के साथ रूचि रखता था जैसे एक बच्चा ज्ञान कैसे प्राप्त करता है, या तो वह ज्ञान प्राप्त करता है जो उसे प्रस्तुत किया जाता है या खोज के माध्यम से स्वतंत्र रूप से ज्ञान प्राप्त करता है। आसुबेल ने चार प्रकार के सीखने की वकालत की:

1. अभिग्रहण अधिगम
2. अन्वेषण अधिगम
3. रटकर अधिगम
4. अर्थपूर्ण अधिगम

अभिग्रहण अधिगम : जब बच्चा केवल कक्षा शिक्षण, पाठ्यपुस्तक, संदर्भ सामग्री, विभिन्न सहायक सामग्री आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया गया ज्ञान प्राप्त करता है, तो उसे बोध अधिगम कहा जाता है। उदाहरण के लिए, जब कोई शिक्षक अपने शिक्षार्थियों को पर्यावरण की अवधारणा के बारे में बताता है, तो शिक्षार्थियों को पर्यावरण की अवधारणा प्राप्त होती है, जैसा कि शिक्षक द्वारा समझाया गया है, इसे अभिग्रहण अधिगम के रूप में जाना जाता है। यहां बच्चा केवल ज्ञान प्राप्त करता है क्योंकि उसे उसके सामने प्रस्तुत किया जाता है।

अन्वेषण अधिगम : जब बच्चे को नई जानकारी के बारे में स्वतंत्र रूप से स्वयं से खोज करके जानते है, तो इसे अन्वेषण अधिगम कहा जाता है। यह मूल रूप से जांच आधारित शिक्षण है जिसमें शिक्षार्थी स्वयं अपने अतीत और वर्तमान ज्ञान के आधार पर समस्या का समाधान करता है। उदाहरण के लिए, प्रयोगशाला में प्रयोग के माध्यम से नई जानकारी पाना या परियोजना के काम के माध्यम से नए विचारों को पता चलता है।.

रटकर अधिगम : बिना समझ के पुनरावृत्ति पर आधारित जानकारी का संस्मरण रटना सीखने के रूप में जाना जाता है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे गुणन के सिद्धान्तों को जाने बिना रटने के द्वारा गुणन सारणी सीखते हैं।

अर्थपूर्ण अधिगम : अर्थपूर्ण अधिगम सक्रिय, रचनात्मक और लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है। सार्थक जानकारी तब होती है, जब संज्ञानात्मक संरचना में वर्तमान ज्ञान में नवीन ज्ञान शामिल कीया जाता है। उदाहरण के लिए, एक शिक्षार्थी, पशु 'की अवधारणा के बारे में जानता है, जो उसकी मौजूदा संज्ञानात्मक संरचना में है। अब, उसके शिक्षक उसे कंगारू की तस्वीर दिखाते हैं, एक नया जानवर जिसे उसने पहले नहीं देखा है। यह नई जानकारी मौजूदा जानकारी में शामिल हो जाती है और अर्थपूर्ण हो जाती है। आसुबेल के अनुसार, अभिग्रहण व अन्वेषण अधिगम, दोनों ही रटने वाला अधिगम हो सकते

हैं, यदि सीखी जाने वाली नई जानकारी को मौजूदा संज्ञानात्मक संरचना में सार्थक रूप से शामिल नहीं किया जाए तो।

शैक्षिक निहितार्थ

आसुबेल रटके सीखने की जगह अर्थपूर्ण/सार्थक सीखने को महत्व देते है। विद्यालयों को उन तरीकों को अपनाना चाहिए जिनके माध्यम से शिक्षार्थी सार्थक सीखने की क्षमता विकसित करते हैं। शिक्षकों को छात्रों को उन्हें रटने की जगह अवधारणाओं को समझने में मदद करनी चाहिए। शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया को सार्थक सीखने पर जोर देने की आवश्यकता है। छात्रों को वर्तमान अनुभवों से संबंधित अपने पिछले शिक्षण के आधार पर स्वयं की अवधारणाओं को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों को प्रस्तुत शिक्षण सामग्री को ठीक से संरचित, व्यवस्थित और सार्थक बनाने की आवश्यकता है। इसे आसुबेल का उन्नत संगठक आयोजक कहा जाता है। इसका उपयोग शिक्षकों द्वारा एक उपकरण के रूप में किया जाता है जिसके माध्यम से शिक्षार्थी संज्ञानात्मक संरचना में अपने वर्तमान ज्ञान के साथ नई जानकारी को एकीकृत करते हैं और सार्थक शिक्षण का निर्माण करने में सक्षम होते हैं।

आसुबेल ने शिक्षाप्रद और व्याख्यात्मक शिक्षण विधि की वकालत की, जो शिक्षार्थी के तेजी से अधिगम और अवधारण बनाए रखने की सुविधा प्रदान करता है। उन्होंने अभिग्रहण अधिगम की सक्रिय प्रकृति पर बल दिया। शिक्षक को अतिरिक्त उदाहरण देकर, अपूर्ण शब्द को पूरा करने और वाक्यों का फिर से शाब्दिक लेखन में शिक्षार्थियों की मदद करनी चाहिए।

15.6.3 ब्रूनर के अधिगम का सिद्धान्तं

जीरोम ब्रूनर (1915) एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने अनुदेशन के सिद्धांत की वकालत की। उनका मत था कि ज्ञान का प्रतिनिधित्व विभिन्न प्रकार की सोच और पुनःनिर्माण के माध्यम से किया जाता है। उनके अनुसार संज्ञानात्मक विकास इस आधार पर है कि व्यक्ति का ज्ञान, वास्तविकता के मानव निर्मित मॉडल पर आधारित है। वह संज्ञानात्मक विकास के लिए भाषा पर जोर देता है। ब्रूनर ने संज्ञानात्मक विकास के तीन चरण विकसित किए हैं जो सूचीबद्ध हैं:

सक्रिय अवस्था (0–1 वर्ष): यह क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान को व्यक्त करना है। वस्तुओं के किसी भी आंतरिक निरूपण के बिना शिशुओं द्वारा वस्तुओं का प्रत्यक्ष परिचालन होता है। सोच, शारीरिक क्रिया पर आधारित है। शिशु सीखने की वस्तु के आंतरिक प्रतिनिधित्व के बजाय करके सीखते हैं।

दृश्य प्रतिमा चरण (1–6 साल): इस अवस्था में बच्चा मानसिक प्रतिमाओं के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता है। जानकारी को मानसिक प्रतिमाओं या संकेत के रूप में संग्रहित किया जाता है। शिक्षार्थियों को शाब्दिक जानकारी प्रदान करते समय आरेखों और चित्रों जैसे दृश्य चित्रों को प्रस्तुत करने की आवश्यकता होती है।

संकतिक चरण (7 वर्ष बाद): यह वह चरण है जहाँ सूचना को कोड या प्रतीक के रूप में संग्रहीत किया जाता है, जैसे कि भाषा। ज्ञान मुख्य रूप से शब्दों, गणितीय प्रतीकों, या अन्य प्रतीक प्रणालियों, जैसे संगीत में संग्रहीत किया जाता है।

ब्रूनर के अनुसार, अधिगम, जानकारी के सक्रिय प्रसंस्करण से होता है जो शिक्षार्थी द्वारा अनूठे तरीके से बनाई और व्यवस्थित की जाती है। व्यक्तियों को दुनिया के बारे में तैयार ज्ञान नहीं मिलता है, बल्कि वे पर्यावरण का चयन करते हैं, प्रक्रिया करते हैं और उन सूचनाओं को व्यवस्थित करते हैं जो वे पर्यावरण से लेते हैं और भविष्य में उपयोग के लिए उन्हें अपने तरीके से संग्रहीत करते हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

शैक्षिक निहितार्थ

ब्रूनर के अनुसार, अधिगम की प्रक्रिया में शिक्षार्थी की तत्परता पर बल देते हैं। शिक्षक को बच्चे के अनुभवों और संदर्भों को ध्यान में रखना चाहिए जो उसे सीखने के लिए प्रेरित करता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को शिक्षार्थी की प्रकृति तथा उसकी प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर होनी चाहिए। अधिगम में संरचना की भूमिका और इसे शिक्षण का केंद्र कैसे बनाया जा सकता है, इस पर शिक्षक द्वारा ध्यान देने की आवश्यकता है। शिक्षार्थी के जीवन के शैक्षिक लक्ष्य स्पष्ट और जीवन से संबंधित होने चाहिए क्योंकि वे आंतरिक प्रेरणा को विकसित करने में सहायता करते हैं जो अन्वेषण की प्रक्रिया को सक्रिय करता है। अधिगमकर्ता को जीवन के लक्ष्यों के बारे में पता होना चाहिए क्योंकि वे सीखने की इच्छा रखते हैं।

उन्होंने अधिगम की प्रक्रिया में बच्चे को महत्व दिया है और उनका यह भी विचार था कि ज्ञान बच्चे के पिछले अनुभव से संबंधित होना चाहिए। इसे इस तरह से रेखांकित किया जाना चाहिए कि सीखने वाले के विकास के लिए प्रभावी हो। विषय के चयन का विकास के विभिन्न स्तरों पर बच्चों के लिए उपयुक्त होना चाहिए और विषय वस्तु को प्रस्तुत करने के तीन तरीके हैं, अर्थात् क्रिया, प्रतिमाएं और प्रतीकों के माध्यम से।.

शिक्षण सामग्री (पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों) को व्यवस्थित रूप से प्रभावी शिक्षण के लिए व्यवस्थित किया जाना चाहिए और सरल से जटिल, आसान से कठिन, अज्ञात से ज्ञात व मूर्त से अमूर्त के सिद्धांतों का पालन करते हुए तैयार किया जाना चाहिए। ब्रूनर ने कुण्डलिय (सर्पिल) पाठ्यक्रम (कठिनाई के बढ़ते क्रम के साथ विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न चरणों में पाठ्यक्रम में एक विषय की पुनरावृत्ति) विकसित किया। ब्रूनर का मानना था कि किसी भी उम्र के किसी भी बच्चे को विकास के किसी भी स्तर पर किसी भी विषय को पढ़ाया जा सकता है।

शिक्षण और सीखने का क्रम में इसे संवेदन और प्रतीकात्मक साधनों के माध्यम से प्रभावी तथा वास्तविक क्रिया द्वारा प्रभावशाली अधिगम की और अग्रसित किया जाये जैसे भाषा सीखने के लिए। प्रगति तो कार्य करने से ही शुरू हो जाती है, तद्पश्चात चित्र की ओर और अंत में प्रतीकात्मक चित्रण के उपयोग की ओर ले जाते है ।

15.3 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

5. गैने के अनुसार अधिगम के चार प्रकार क्या हैं?

....

....

....

6. आसुबेल के अधिगम सिद्धांत में 'खोजपूर्ण अधिगम' क्या है?

....

....

....

....

8. ब्रूनर के अधिगम के सिद्धान्तं के अनुसार शिक्षण–अधिगम सामग्री और पाठ्यक्रम कैसा होना चाहिए?

....

....

....

15.7 सामाजिक संज्ञान

सामाजिक अनुभूति सामाजिक मनोविज्ञान का उप–विषय है जो इस बात को महत्व देता है कि लोग कैसे प्रक्रिया करते हैं, विभिन्न लोगों के बारे में जानकारी संग्रहीत करते हैं और सामाजिक स्थिति के साथ–साथ इन सूचनाओं को नई सामाजिक स्थितियों पर लागू करते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान मुख्यतः सामान्य मनोविज्ञान की तुलना में संज्ञानात्मक है। सामाजिक मनोविज्ञान विश्वास और इच्छाओं जैसे आंतरिक मानसिक स्थिति से संबंधित है। सामाजिक जानकारी लोगों को विभिन्न निर्णय लेने में सहायता करती है। यह उन प्रक्रियाओं का कुल योग है जो मानव को समाज में रहने, दूसरों के साथ प्रभावी संबंध बनाने की क्षमता विकसित करने और उनके साथ बातचीत करने में सक्षम बनाता है। सामाजिक अनुभूति हमें उन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का पता लगाने में सामाजिक मनोवैज्ञानिक घटनाओं को समझने में मदद करती है जो उनके पीछे होती हैं। इस प्रकार, जो हम दूसरों के बारे में सोचते हैं वह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि हम क्या महसूस करते हैं और हम अपने आसपास के लोगों के साथ कैसे अंतःक्रिया करते हैं। हमने इस पाठ्यक्रम की इकाई–14 में सामाजिक मनोविज्ञान और शिक्षा में इसकी भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की है।

सामाजिक अनुभूति की चार मुख्य प्रक्रियाएँ हैंः

- ✓ चयन (सामाजिक जानकारी)
- ✓ व्याख्या (सामाजिक जानकारी)
- ✓ स्मरण (सामाजिक जानकारी)
- ✓ उपयोग (सामाजिक जानकारी)

सामाजिक अनुभूति के सिद्धान्तं

सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत की मुख्य अवधारणा उस संप्रत्यय पर केंद्रित है जो व्यक्ति दूसरों को देखकर सीखता है। बंडुरा ने इसे त्रैमासिक पारस्परिक कार्य के एकीकरण के माध्यम से समझाया।

- ➢ **व्यक्तिगतः** यदि व्यक्ति की अपनी क्षमताओं में उच्च प्रभावकारिता या विश्वास है कि वह व्यवहार को सही ढंग से करेगा तो वह उचित तरीके से करने में सक्षम होगा और इसके विपरीत भी।
- ➢ **व्यवहारः** यदि व्यक्ति कोई भी कार्य करता है और उसे सकारात्मक पृष्ठपोषण मिलता है तो वह सही कार्य करने हेतु प्रेरित होता है।
- ➢ **वातावरणीयः** वातावरण किसी भी व्यवहार को प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है या यह व्यक्ति की उचित स्थिति, सहायता और सामग्री की मदद से इसे सफलतापूर्वक प्रदर्शन करने की क्षमता दिखाता है।

- **मानव संस्थाः** मानव संस्था सिद्धान्तं कहता है कि मानव प्रकृति में व्याप्त है। कोई भी उसे कुछ करने के लिए सुझाव नहीं दे सकता है या उसे बता सकता है। वह अपने कार्यों के बारे में निर्णय ले सकता है। लोग अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं, जिसके लिए योजना बनाते हैं, योजना को लागू करने के लिए रणनीति लागू करते हैं और उनकी कार्रवाई को प्रतिबिंबित करते हैं।

15.4 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

8. सामाजिक अनुभूति की मुख्य प्रक्रियाएँ क्या हैं?

....

....

....

9. सामाजिक अनुभूति के सिद्धान्तों में उल्लिखित मानव संस्था की व्याख्या करें।

....

....

....

15.8 सामाजिक संरचनावाद

संरचनावाद कोई नई अवधारणा नहीं है। इसकी जड़ें दर्शनशास्त्र में हैं और समाजशास्त्र, नृविज्ञान (मानव विज्ञान), संज्ञानात्मक मनोविज्ञान व शिक्षा में लागू होती है। ग्लासर्सफेल्ड (1992) ने स्पष्ट किया कि संरचनावाद ज्ञान का एक सिद्धान्तं है जो वास्तविक दुनिया को ज्ञान के स्रोत के रूप में मान्यता देता है। तात्पर्य यह है कि वास्तविकता, अपने अस्तित्व के लिए मन पर निर्भर है, इसलिए ज्ञान वास्तविकता का एक पहलू होने के बजाय मन द्वारा निर्मित होता है। जॉन डीवी ने प्रस्तावित किया कि शिक्षा को छात्र की वर्तमान समझ के साथ काम करना चाहिए, उनके पूर्व विचारों और रुचि को भी ध्यान में रखना चाहिए। ब्रूनर (1986) ने परिभाषित करते हुए कहा की सरंचना, शिक्षण सिद्धान्तं का एक सक्रिय प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षार्थी अपने वर्तमान या पिछले ज्ञान के आधार पर नए विचारों का निर्माण करते हैं।

संरचनावाद एक अपेक्षाकृत नया प्रतिमान है जो ज्ञान के व्यक्तिपरक, प्रासंगिक और बहुलवादी प्रकृति को ध्यान में रखता है। यह बताता है कि व्यक्ति जो पहले से जानता है और अनुभव करता है, उसके परिचय के माध्यम से अपना खुद का नवीन ज्ञान बनाता है। अनुकरण या पुनरावृत्ति की जगह सामग्री के साथ भागीदारी के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया जाता है। शिक्षार्थी सक्रिय रूप से ज्ञान लेते हैं, इसे पहले आत्मसात किए गए ज्ञान से जोड़ते हैं और अपनी व्याख्या का निर्माण करके इसे अपना बनाते हैं। सीखना निष्क्रिय प्राप्तकर्ता से नहिं बल्कि अर्थ के एक सक्रिय निर्माण से होता है (पियाजे, 1977)।

पियाजे (1973) के अनुसार, संरचनावाद सीखने के स्पष्टीकरण की एक प्रणाली है, जैसे कि व्यक्ति ज्ञान को अनुकूल और परिष्कृत करते हैं। इस दृष्टि से शिक्षार्थियों ने अत्यधिक व्यक्तिगत तरीकों से ज्ञान का पुनर्गठन किया, वर्तमान ज्ञान और औपचारिक अनुदेशात्मक अनुभवों पर द्रव विन्यास को आधार बनाया। वायगोत्स्की (1978) के अनुसार, संरचनावाद

का सामाजिक दृष्टिकोण यह परिभाषित करता है कि ज्ञान सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ के माध्यम से सह–निर्मित है। शिक्षक की भूमिका, खुले जांच को संलग्न वास्तविकता का निर्माण करने में एक सहयोगी की भूमिका निभाती है तथा जो छात्रों की भ्रांतियों को संबोधित और उन्हें दूर करती है।

संरचनावाद के सिद्धान्तं

संरचनावाद के सिद्धान्तं इस प्रकार हैंः

- शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को वास्तविक दुनिया की समस्याओं के साथ संलग्न करना चाहिए जो वे अपनी रुचि के साथ खोज सकते हैं और समस्या के बारे में अपनी समझ को गहरा करने के लिए स्वयं को प्रेरित कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों को जांच आधारित अन्वेषण के माध्यम से एक घटना में कारण और प्रभाव सम्बन्ध सीखने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को यह पता लगाना चाहिए कि इंद्रधनुष में अलग–अलग रंग क्यों हैं।
- किसी भी घटना, विचार या घटनाओं के बारे में विद्यार्थियों के अपने विचार होते हैं। इसलिए उन्हें अपने दृष्टिकोण से विचारों को साझा करने और आदान–प्रदान करने के अवसर दिए जाने चाहिए।
- शिक्षक को विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं को जानना चाहिए और उनकी संज्ञानात्मक क्षमताओं को पूरा करने के लिए उनके अनुसार पाठ का प्रारूप बनाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के अधिगम का मूल्यांकन सही या गलत जैसे मानदंडों पर आधारित नहीं होना चाहिए, बल्कि इस बात पर केंद्रित करना चाहिए कि उनकी सफलता के लिए अभी भी किसकी आवश्यकता है व उसे उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। इसलिए, मूल्यांकन की भूमिका छात्र अधिगम को बढ़ाने के लिए है।

सामाजिक संरचनावाद का सिद्धान्तं

जॉन डीवी ने एक रचनात्मक दृष्टिकोण के रूप में संरचनावाद को प्रतिपादित किया। ब्रूनर (1990) और पियाजे (1972) संज्ञानात्मक संरचनावाद के मुख्य योगदानकर्ता हैं, वही वायगोत्स्की (1978) सामाजिक संरचनावाद के मुख्य प्रस्तावक हैं। डीवी के अनुसार, वास्तविक अनुभवों में शिक्षा की जड़ें हैं। उन्होंने कहा, यदि आपको संदेह है कि शिक्षण कैसे होता है, तो निरंतर जांच में संलग्न होः अध्ययन, विचार, वैकल्पिक संभावनाओं पर विचार करें और साक्ष्यों के आधार पर अपने विश्वास तक पहुंचें। यह बल देता है कि अनुभव और जांच दोनों ज्ञान के निर्माण और अधिग्रहण का आधार हैं। प्रत्येक अनुभव किसी के ज्ञान के संरचना में योगदान देता है और आगे भी जांच की प्रक्रिया को उपयोग करके इसे प्रयोग, सत्यापित और प्रमाणित किया जा सकता है।

पियाजे का तर्क है कि शिक्षार्थी अपने अनुभवों के आधार पर अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं। व्यक्ति अपने ज्ञान का निर्माण दो संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के आधार पर करते हैं अर्थात् समावेश और आत्मसात, जो वर्तमान ज्ञान की एक नई संरचना बनाने पर बल देते हैं और इसमें नई जानकारी/ज्ञान को समायोजित करते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि अधिगम एक गतिशील प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी दुनिया के अपने सिद्धान्तों के आधार पर अपने ज्ञान का निर्माण करतें हैं और स्वयं को वास्तविकता के अनुकूल बनाते हैं।

वायगोत्स्की का संरचनावाद सिद्धांत

लेव वायगोत्स्की (1978) का मानना था कि संस्कृति संज्ञानात्मक प्रगति का प्रमुख निर्धारक है। वायगोत्स्की का विचार था कि संरचनावाद में ज्ञान, संज्ञानात्मक विकास की

ओर ले जाता है और एकल विचार के आधार पर इसकी व्याख्या करना संभव नहीं है। बुद्धि की सामाजिक व्यवस्था इस बात पर जोर देती है कि व्यक्ति का विकास सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के साथ उसकी बातचीत के बिना संभव नहीं है।

वायगोत्स्की (1978) ने यह भी कहा कि बौद्धिक विकास के लिए, सामाजिक और व्यावहारिक गतिविधियों की आवश्यकता होती है। संज्ञानात्मक विकास व्यक्ति और समाज के बीच गतिशील संबंध का उत्पाद है। व्यक्ति और समाज के बीच परस्पर संबंध होता है और इसका प्रभाव व्यक्ति और समाज दोनों पर पड़ता है। सामाजिक अंतःक्रिया, संज्ञानात्मक संरचनाओं और सोच प्रक्रिया को बनाकर संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करता है।

वायगोत्स्की के चार सिद्धांत

1. **बच्चे अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण करते हैं:** यह सही कहा जाता है कि ज्ञान को निष्क्रिय रूप से स्थानांतरित नहीं किया जाता है, लेकिन यह व्यक्तिगत रूप से व्यक्ति द्वारा निर्मित किया जाता है। इसका अर्थ है कि ज्ञान के हस्तांतरण के लिए, कुछ माध्यम आवश्यक है जिसके आधार पर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन हर व्यक्ति के पास चीजों को समझने का अपना तरीका है और उसकी धारणा या समझ के अनुसार, वह उसका निर्माण करता है ८

2. **ज्ञान का अधिग्रहण सामाजिक संदर्भ के बिना नहीं हो सकता है:** यह कहना सही है कि ज्ञान को सामाजिक संदर्भ के बिना हासिल नहीं किया जा सकता है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह समाज के कुछ नियमों, मानदंडों का पालन करके और सीखकर समाज में रहता है या सामाजिक परिवेश के साथ बातचीत करके अपने ज्ञान का विस्तार करें।

3. **अधिगम मध्यस्थता है:** मध्यस्थता अधिगम तब होती है जब एक शिक्षार्थी और एक व्यक्ति के बीच अतःक्रिया होती है जो अधिक ज्ञानी होता है और शिक्षार्थियों का उत्तेजनाओं को संशोधित करने और अपने स्वयं के संज्ञानात्मक संरचना को बदलने में सहायता करता है। व्यक्ति, माता–पिता, वयस्क, दादा–दादी, सहकर्मी हो सकते हैं और उन्हें वायगोत्स्की द्वारा अधिक ज्ञानी कहा जाता है। मध्यस्थता को सामाजिक रूप से संगठित गतिविधि के भीतर कुछ उपकरणों के उपयोग के रूप में भी परिभाषित किया गया है।

4. **भाषा संज्ञानात्मक विकास में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है:** भाषा संचार और समाजीकरण का साधन है। समय बीतने के साथ यह संज्ञानात्मक विकास या सोच का उपकरण बन जाता है।

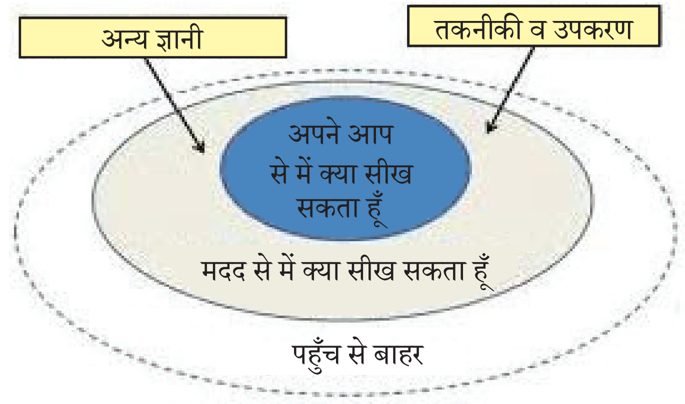

समीपस्थ विकास का क्षेत्र

यह (ZPD-जोनल प्रोक्सिमल डेवलपमेंट) बच्चों का सबसे समीप मनोवैज्ञानिक क्षेत्र है जिसके अंतर्गत संवेगिक,संज्ञानात्मक तथा मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया हेतु इच्छा है।

(स्रोत:https://en.wikipedia.org/wiki/Zone of_proximal_development)

चित्र 15.2 : समीपस्थ विकास का क्षेत्र

शैक्षिक निहितार्थ

- यह पारस्परिक शिक्षण के लिए गुंजाइश प्रदान करता है जिसमें छात्र शिक्षक की भूमिका निभाते हैं और जब वे कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो शिक्षक उन्हें एक सुविधा के रूप में मदद करता है।
- शिक्षक और छात्र चार प्रमुख कौशलों को सीखने और अभ्यास करने में आपस में सहयोग करते हैं: सारांश, प्रश्न करना, स्पष्ट करना और भविष्यवाणी करना। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका समय के साथ कम होती जाती है।
- शिक्षकों या साथियों द्वारा प्रदान किया गया मंच, सीखने वाले को संरचना या सीखने के कार्य को व्यवस्थित करने में मदद करती है, इसलिए वह इस पर सफलतापूर्वक काम करता है।
- यह शिक्षार्थियों को रचनात्मक गतिविधियों और विचारों के आत्म संगठन में भाग लेने की सुविधा प्रदान करता है।
- यह शिक्षण को शिक्षक केंद्रित से अधिगमकर्ता केन्द्रित की ओर स्थान्तरित करने में सहायता प्रदान करता है।
- यह नवीन ज्ञान को प्राप्त करने और शिक्षार्थी द्वारा विस्तारित किए जाने वाले ज्ञान को प्रस्तुत करने की गुंजाइश प्रदान करता है।
- यह उन क्षेत्रों के लिए गुंजाइश प्रदान करता है जहां विरोधाभासों की जांच, स्पष्टीकरण और चर्चा की आवश्यकता है।
- यह व्यक्तिगत बौद्धिक क्षमता की खोज करने में मदद करता है।
- इस उपागम में, शिक्षक तर्कपूर्ण चिंतन को प्रोत्साहित करते हुए सही उत्तर के लिए छात्रों पर नजर रखता है और लचीले ढंग से मार्गदर्शन करता है।
- यह स्थितीय अधिगम की गुंजाइश प्रदान करता है जहां शिक्षार्थी को प्रासंगिक या प्रामाणिक संदर्भ में पढ़ाया जाना चाहिए (मैडक्स, जॉनसन, डब्ल्यूडब्ल्यूए 1997)।
- यह टीमध्समूह के कार्य और सहयोग को प्रोत्साहित करता है।

15.5 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

10. वायगोत्स्की के अनुसार संरचनावाद की अवधारणा की व्याख्या करें ।

....

....

....

11. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में संरचनात्मक उपागम में शिक्षक की भूमिका पर चर्चा करें।

....

....

....

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

15.9 सारांश

इस इकाई में, हमने अधिगम के विभिन्न प्रकारों के बारे में चर्चा की है अर्थात् व्यवहारवाद, संज्ञानात्मकता और संरचनावाद। इन सिद्धान्तों की मदद से, शिक्षक बच्चों के बीच आत्म अवधारणा और विभिन्न सामाजिक और समूह व्यवहार विकसित कर सकते हैं। गेने, आसुबेल और ब्रूनर द्वारा संज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों पर चर्चा की गई है। हमने चर्चा की है कि पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया करके सीखने को कैसे प्राप्त किया जाता है और धीरे–धीरे व्यक्ति के ज्ञान संरचना के फ्रेम में फिट बैठता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि अधिगम वर्तमान ज्ञान को सार्थक, व्यवस्थित रूप से या कुण्डलिय रूप से सीखने वालों में नई जानकारी को एकीकृत कर रहा है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है, संरचनावाद से तात्पर्य विद्यार्थियों के ज्ञान के निर्माण या रचना से है। शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को समर्थन व सभी आवश्यक सुविधाओं का प्रदान करना है। विद्यार्थियों को अपने स्वयं के अधिगम की संरचना के लिए पूर्व अनुभव की आवश्यकता होती है। वायगोत्स्की के सामाजिक संरचनावाद सिद्धान्तों के शैक्षिक निहितार्थों पर चर्चा करने के साथ ही यह इकाई समाप्त होती है।

15.10 संदर्भ और पठन हेतु सुझावित पुस्तकें

आसूबेल, डी.पी (1966). मीनिंगफुल रिसेप्शन लर्निंग एंड द एक्वीजीशन ऑफ कॉन्सेप्ट्स. न्यूयॉर्क, अकादमिक प्रेस।

बेली, जे. (2003). सेल्फ–इमेज, सेल्फ–कॉन्सेप्ट और सेल्फ–आइडेंटिफिकेशन। जे नेटल मेड असोक। 200य 95 (5): 383–86।

बैरन आर.ए., और मिश्रा जी (2018). साइकोलॉजी,पियर्सन, 5 वां संस्करण, आईएसबीएनः 978–93–325–5854–0।

बॉमिस्टर, आर.एफ. (सं।) (1999). द सेल्फ इन सोशल साइकोलॉजी. फिलाडेल्फिया, पीएरू मनोविज्ञान प्रेस (टेलर एंड फ्रांसिस)।

ब्रेकेन बी.ए. (1996). हैंडबुक ऑफ सेल्फ कॉन्सेप्टः डेवलपमेंटल, सोशल, एंड क्लिनिकल थिंक। न्यूयॉकरू जॉन विली एंड संसय 1996।

ब्रूनर, जे। (1966).टुवर्ड्स थ्योरी ऑफ इंस्ट्रक्शन, मासय हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ब्रूनर, जे (1996) द कल्चर ऑफ एजुकेशन , मासय हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

चेरी, के। (2018). व्हाट इस सेल्फ कांसेप्ट एंड हाउ डस इट ? वेरी वेल माइंड। Https:// www-verywellmind-com/what&is&self&concept-2795865 से लिया गया

क्रिस्प आर.जे. और टर्नर आर.एन. (2010). एसेंशियल सोशल साइकोलॉजी । लंदनः ऋषि प्रकाशन।

गैने, आर.एम. (1985).द कंडीशन ऑफ लर्निंग एंड थ्योरी ऑफ इंस्ट्रक्शन, न्यूयॉर्क, सीबीएस कॉलेज प्रकाशन

गेकास, वी. (1982). द सेल्फ–कांसेप्ट । एनुअल रिव्यु ऑफ सोशियोलॉजी, 8, 1–33। डोईः 10-1146/ annurev-so-08-080182-000245।

हिलगार्ड, ई.आर.और बोवर, जी.एच. (1975). थ्योरीइज, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया।

लॉरा, ई.बी. (2005). चाइल्ड डेवलपमेंट, प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली

मैकलियोड, एस.ए.(2008). सेल्फ–कांसेप्ट. https://www-simplypsychology-org/ self&concept-html से लिया गया

पावलोव, आई.पी. (1927). कंडीशनल रिफ्लेक्स, न्यू यॉर्क। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।

प्लॉटनिक, रॉडय और कौयूमडजियन, एच. (2014). इंट्रोडक्शन तो साइकोलॉजी, 10 वां संस्करण, वड्सवर्थ पब्लिकेशन, यूएसए, आईएसबीएनः 978—1—133—94349—5.

रोजर्स सीए. (1959). थ्योरी ऑफ थेरेपी, पर्सनालिटी एंड इंटरपर्सनल रिलेशनशिप्स अस डेवलप्ड इन द क्लाइंट सेंटर्ड फ्रेमवर्क. एस कोच, एड। साइकोलॉजीः अ स्टडी ऑफ अ साइंस.वॉल्यूम—3ः फार्मूलेशन ऑफ द परसों एंड द सोशल कांतेक्स्ट्स. न्यूयॉकरू मैकग्रा—हिल।

स्किनर, बी.एफ.(1938). द बेहविऔर ऑफ ओर्गानिस्म, एपलटन सेंचुरी, न्यूयॉर्क

स्किनर, बी.एफ.(1953). साइंस एंड ह्यूमन बेहविऔर. न्यूयॉर्क, मैकमिलन

वीटेन, डब्ल्यू. (2017). साइकोलॉजीरू थीम्स एंड वेरिएशन—10 वां संस्करण। लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, कैन्गेज लर्निंग, यूएसए, कनाडा में मुद्रित।

वेब लिंक संदर्भ

बर्न्स, आर.बी. (1993). 07.03.2020 को http://eprints-walisongo-ac-id/6907/4/CHAPTER%20III-pdf से लिया गया।

शिमट, डी.आर.सोशल बिहेवियर, पीपी 471—505, https://link-springer-com/chapter/10-1007/978&1&4899&1947&2_15

अफवाह, आर.जे., समझ संघर्ष और युद्धरू टवस.2 https://www-hawaii-edu/powerkills/TCH-CHAP9-HTM

डीक्शा, एस. सोशल बिहेवियररू अर्थ, बेस एंड टाइप, http://www-psychologydiscussion-net/social&psychology&2/social&behaviour/social&behaviour&minging&bases&and&kinds/1310

http://digitalcommons-sacredheart-edu/cgi/viewcontent-cgi\article¾1018&conteÛt¾edl 15-12-2019 को पुनः प्राप्त

http://www-ijoart-org/docs/A&STUDY&OF&SELF&CONCEPT&AND&INTEREST&IN&TEACHING&OF&PRE&SERVICE&TEACHERS&OF&SECECARY&LEVEL-pdf 16-12-2019 को पुनः प्राप्त

http://www-openteÛtbooks-org-hk/ditatopic/15988 14-12-2019 को पुनःप्राप्त

https://www-thoughtco-com/self&concept&psychology&4176368 16-12-2019 को पुनः प्राप्त

https://www-verywellmind-com/what&is&self&concept& 15-12-2019 को पुनः प्राप्त

http://eprints-walisongo-ac-id/6907/4/CHAPTER%20III-pdf 12-12-2019 को पुनः प्राप्त

https://learning-oreilly-com/home/ 13-12-2019 को पुनः प्राप्त

14-12-2019 dks https://positivepsychology-com/self&concept/ को पुनः प्राप्त किया गया

https://en-wikipedia-org/wiki/Zone of_proÛimal_development 31-05-2020 को पुनः प्राप्त किया गया

15.11 अपने उत्तरों की जाँच करें

1. अधिगम की अनुकुलित शास्त्रीय अनुबंधन उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच एक बंधन है। यदि हम शिक्षार्थियों को कुछ उद्दीपन प्रदान करते हैं, तो शिक्षार्थी प्रतिक्रिया प्रदर्शित करेंगे। छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में इसका उपयोग किया जा रहा है।

2. शास्त्रीय और क्रियाप्रसूत दोनों अवस्थाएँ उद्दीपन और अनुक्रिया के बीच एक बंधन स्थापित करती हैं। शास्त्रीय अनुबंधन में, उद्दीपन पहले प्रदान की जाती है, प्रतिक्रिया के बाद, जबकि क्रियाप्रसूत अनुबंधन में, विषय पहले अनुक्रिया प्रदर्शित करता है, फिर उद्दीपन दिया जाता है। दोनों प्रकार के अनुबंधन का उपयोग बच्चों को पढ़ाने के लिए किया जाता है। विवरण के लिए, खंड 15.3.2, तालिका संख्या 15.1 का पालन करें।

3. स्व–अवधारणा आम तौर पर हमारी व्यक्तिगत धारणाएं, क्षमताएं और अद्वितीय विशेषताएं हैं। आत्म–अवधारणा हमारी ताकत और कमजोरियों को निर्धारित करती है और नए कार्यों के लिए खुद को तैयार भी करती है।

4. निम्नलिखित आत्म–अवधारणा की प्रकृति की व्याख्या करता है:
   - स्व–अवधारणा किसी के व्यक्तित्व के बारे में विश्वास है।
   - यह उन मान्यताओं का गठन करता है जो आपके बारे में सोचते समय मस्तिष्क में आती हैं।
   - स्व–अवधारणा पिछले अनुभव से निर्मित है, और आपके व्यक्तित्व लक्षणों, क्षमताओं, शारीरिक विशेषताओं, मूल्यों, लक्ष्यों और सामाजिक भूमिकाओं के साथ एकीकृत है।
   - आत्म–प्रभाव के बारे में विश्वास न केवल किसी व्यक्ति के वर्तमान व्यवहार बल्कि उसके भविष्य के व्यवहार के साथ भी होता है

5. उत्तेजना की स्थिति, अधिग्रहण, भंडारण और पुनर्प्राप्ति की अवस्था प्राप्त करना।

6. जब बच्चे को स्वतंत्र रूप से स्वयं के द्वारा विषयों के बारे में अन्य जानकारी मिलती है, तो इसे जांच आधारित शिक्षण कहा जाता है, जिसमें सीखने वाला स्वयं ही अपने अतीत और वर्तमान ज्ञान के आधार पर समस्या का समाधान खोज लेता है।

7. शिक्षण अधिगम सामग्री (पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों) को व्यवस्थित रूप से प्रभावी शिक्षण के लिए व्यवस्थित किया जाना चाहिए और उन्हें सरल से जटिल, अज्ञात और कंक्रीट से ज्ञात के सिद्धान्तों का पालन करते हुए किए जाने की आवश्यकता है। ब्रूनर ने कुण्डलिय पाठ्यक्रम विकसित किया। ब्रूनर का मानना है कि किसी भी उम्र के किसी भी बच्चे को विकास के किसी भी स्तर पर किसी भी विषय को पढ़ाया जा सकता है।

8. सामाजिक अनुभूति की मुख्य प्रक्रियाएं हैं चयन (सामाजिक सूचना), व्याख्या (सामाजिक जानकारी), स्मरण (सामाजिक सूचना), और उपयोग (सामाजिक सूचना)।

9. मानव एजेंसी सिद्धान्तं कहता है कि मानव स्वभाव से व्यापक है कोई भी उसे कुछ भी सुझा या बता नहीं सकता है। वह अपने स्वयं के कार्यों को प्रभावित कर सकता है। लोग अपना लक्ष्य निर्धारित करते हैं, योजना बनाते हैं, रणनीति बनाते हैं और प्रतिबिंबित करते हैं।

10. संरचनावाद की अवधारणा का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति के पास अपने स्वयं के नए ज्ञान को बनाने या निर्माण करने की क्षमता है जो वह पहले से ही जानता है और मानता है। अधिकतर, यह उस व्यक्ति के पूर्व अनुभव पर आधारित है जिसे उसने पहले ही हासिल कर लिया है।

11. अधिगम के लिए रचनात्मक अभिवृत्ति में, शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को सभी सहायता प्रदान करना और उन्हें उनके सीखने में सुविधा प्रदान करना है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 16 सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुणधर्मों की समझ

संरचना

16.1 परिचय

16.2 उद्देश्य

16.3 सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुण

16.4 बुद्धि

- 16.4.1 बुद्धि पर अल्फ्रेड बिने
- 16.4.2 बहु–बुद्धि पर हॉवर्ड गार्डनर
- 16.4.3 बुद्धि के शैक्षिक निहितार्थ

16.5 अभिक्षमता

- 16.5.1 अभिक्षमता का अर्थ एवं संप्रत्यय
- 16.5.2 अन्य मनोवैज्ञानिक गुणों के साथ अभिक्षमता का संबंध
- 16.5.3 अभिक्षमता के शैक्षिक निहितार्थ

16.6 सृजनात्मकता

- 16.6.1 सृजनात्मकता का सिद्धान्तं
- 16.6.2 सृजनात्मकता के चरण
- 16.6.3 सृजनात्मकता का शैक्षिक प्रभाव

16.7 अभिप्रेरणा

- 16.7.1 आवश्यकता के रूप में अभिप्रेरणा
- 16.7.2 स्व–प्रभावकारिता के रूप में अभिप्रेरणा
- 16.7.3 अभिप्रेरणा के शैक्षिक निहितार्थ

16.8 अभिवृत्ति

- 16.8.1 अभिवृत्ति के लक्षण
- 16.8.2 विश्वास, मूल्य और अभिवृत्ति
- 16.8.3 अभिवृत्ति निर्माण के कारक
- 16.8.4 अभिवृत्ति के शैक्षिक निहितार्थ

16.9 व्यक्तित्व

- 16.9.1 व्यक्तित्व का अर्थ एवं संप्रत्यय
- 16.9.2 व्यक्तित्व के प्रकार
- 16.9.3 व्यक्तित्व का मापन
- 16.9.4 व्यक्तित्व के शैक्षिक निहितार्थ

16.10 सारांश

16.11 संदर्भ और पठन हेतु सुझावित पुस्तकें

16.12 अपने उत्तरों की जाँच करें

डॉ. श्वेता गुप्ता, सहायक प्रध्यापक, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

16.1 परिचय

सीखना केवल उस चीज को अवशोषित करने का विषय नहीं है जो अदा के रूप में उपलब्ध कराई जाती है, जैसे एक स्पंज पानी को सोख लेता है। अधिगमकर्ता वो मुख्य कारक है जो यह निर्धारित करता है कि क्या सीखा है, कैसे सीखा जाता है तथा कितनी जल्दी और कितना सही किया है। विभिन्न सिद्धांत अथवा नियम हैं जो अधिगम की प्रक्रियाओं की व्याख्या करते हैं। यहां हम इस बात का ध्यान रखेंगे कि शिक्षार्थी की विभिन्न विशेषताएँ, किसी दी गई अधिगम स्थिति में वह क्या और कैसे सीखते हैं को प्रभावित करती है (IGNOU, 2010)।

अधिगमकर्ताओं की अधिगम की विशेषताएं, प्रकृति में विविध हैं। कुछ का अधिग्रहण किया जाता है और कुछ विरासत में मिलती है। लेकिन, एक ही समय में, यह कहना कठिन है कि कौन से शिक्षार्थियों की विशेषताएं विशुद्ध रूप से विरासत में मिली हैं या अधि ाग्रहित हैं। उदाहरणतः, जब हम किसी व्यक्ति की बुद्धि एवं अभिक्षमता जैसे गुणों के बारे में बात करते हैं, तो यह अधिक विरासत में प्राप्त होते है और अधिग्रहित कम होते है वहीं दृष्टिकोण और योग्यता के सन्दर्भ में यह अधिक अधिग्रहीत होते है क्योंकि हम अपनी अभिप्रेरणा, व्यक्तित्व और मनोवृत्ति को परिस्थितियों के आवश्यकतानुसार बदल सकते हैं। अतः, हम सभी शिक्षार्थियों की विशेषताओं को एक संदर्भ में पर विचार न करके विभिन्न सन्दर्भों मे करते हैं।

उपरोक्त के मद्देनजर, वर्तमान इकाई विशेषतः शिक्षार्थियों की कुछ विशेषताओं जैसे कि बुद्धि, अभिक्षमता, रचनात्मकताध्सृजनात्मकता,अभिप्रेरणा, मनोवृत्ति और व्यक्तित्व पर केंद्रित है। ये इकाई इन सामाजिक–मनोवैज्ञानिक विशेषताओं की अवधारणा, मापन और शैक्षिक निहितार्थ की व्याख्या करेगी।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई के पूर्ण होने पर, आप निम्नलिखित कर सकेंगेः

- बालकों की सामाजिक–मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के संप्रत्यय की व्याख्या करेंगे।
- बुद्धि एवं उसके सिद्धांतों की अवधारणा को परिभाषित कर सकेंगे।
- अधिगम के लिए अभिक्षमता की अवधारणा और उसके निहितार्थों की व्याख्या कर सकेंगे।
- रचनात्मकता और उसके विभिन्न चरणों का वर्णन कर सकेंगे
- रचनात्मकता को समझने में मनोविज्ञान के विभिन्न विचारधारा के योगदान का विश्लेषण कर सकेंगे ।
- बालक के विकास में अभिप्रेरणा के योगदान की व्याख्या कर सकेंगे।
- मनोवृत्ति की अवधारणा को एक गुण के रूप में समझ सकेंगे।
- बालकों की मनोवृत्ति निर्माण में योगदान करने वाले कारकों को स्पष्ट कर सकेंगे तथा
- व्यक्तित्व के प्रकार एवं सिद्धांतों का वर्णन कर सकेंगे।

16.3 सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुण

व्यक्तियों के व्यवहार को समझने हेतु, हमें व्यक्ति के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुणों का

अवलोकन करना व मापन करना चाहिए और उस आधार पर परिभाषित करें। कई बार, बच्चों की मनोवृत्ति और क्षमता उनकी मानसिक स्थिति और मनोवैज्ञानिक निर्माणों से प्रभावित होती हैं जैसे कि बुद्धि, योग्यता, आदि। व्यक्तियों के व्यवहार को समझने के लिए, हमें व्यक्ति की विभिन्न सामाजिक–मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का निरीक्षण करना और उन्हें मापना होगा और तदनुसार परिभाषित करना होगा। अधिकतर, सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुण व्यक्ति के संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोक्रियात्मक क्षेत्रों का निर्माण करते हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुण अर्थात बुद्धि और अभिक्षमता, व्यक्ति के संज्ञानात्मक क्षेत्र से संबंधित है, वहीं मनोवृत्ति, स्व–अवधारणा, आदि व्यक्ति के भावात्मक क्षेत्र से संबंधित है।

ये गुण, अधिगमकर्ताओं के कारक हैं जो शैक्षिक और गैर–शैक्षणिक क्षेत्रों में शिक्षार्थियों की संग्लंगता और उपलब्धि को निर्धारित करते हैं। चित्र 1 में वर्णित गुणों का स्पष्टीकरण, मापन और शैक्षिक निहितार्थों के साथ आगे चर्चा की गई है।

चित्र–16.1 सामाजिक–मनोवैज्ञानिक गुणों के तत्व

16.4 बुद्धि

व्सामान्यतः बुद्धि, अमूर्त रूप से सोचने, समस्याओं को हल करने और सीखने की क्षमता आदि के रूप में समझा जाता है। बालकों द्वारा विभिन्न बौद्धिक क्षमताओं को विभिन्न तरीकों से व्यक्त किया जाता है। एक व्यक्ति गणना में अच्छा हो सकता है, लेकिन एक तस्वीर को अच्छी तरह से चित्रित करने में सक्षम नहीं हो अथवा कुछ अन्य, अजनबियों से भरे कमरे में प्रवेश कर सकते हैं और उनके बीच संबंधों को आसानी से समझ सकते है, वहीं अन्य यह नहीं कर सकते। कोई खेल में अच्छा हो सकता है तो कोई व्याख्यान आदि में। इस तरह के अवलोकन के आधार पर चार्ल्स इनमैन ने 1904 में यह निष्कर्ष निकाला कि व्यक्ति की बौद्धिक गतिविधियों में भिन्नता होती हैं। एक मानसिक परीक्षण में उन्होंने पाया कि जिन्होंने एक उप–परीक्षण में अच्छा किया, वे अन्य उप–परीक्षणों में भी सफल रहे। फिर, सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि एक सामान्य अंतर्निहित कारक था जो सभी उप–परीक्षणों के लिए समान रहता है । उन्होंने इसे श्जीश कारक या सामान्य बुद्धि कहा।

यह केंद्रीय कारक था जो किसी व्यक्ति में सभी संज्ञानात्मक क्षमताओं को प्रभावित करता है। यह अलग–अलग व्यक्तियों में भिन्नता होती है अर्थात यह अंतर–व्यक्तिगत कारक है। वहीँ दूसरा कारक जो एक उप–परीक्षण से दूसरे में भिन्न होता है उसे विशिष्ट कारक (–कारक) कहा जाता था। उदाहरण के लिए, बुद्धि के मामले में, विशिष्ट कारक (एस–कारक) हैं स्मृति, अवधान, एकाग्रता आदि।

16.4.1 बुद्धि पर अल्फ्रेड बिने

फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक, अल्फ्रेड बिने, स्पीयरमैन के समकालीन, ने फ्रांसीसी सरकार के अनुरोध पर बुद्धि का वैज्ञानिक अध्ययन किया। उन्होंने 1904 में, विशेष शैक्षिक सहायता की आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान करने के उद्देश्य से पहला बुद्धि परीक्षण विकसित किया। उनके परीक्षण ने अवधान, स्मृति, समस्या समाधान आदि व्यापक क्षमताओं का आंकलन किया, और एक एकल अंक का निर्माण किया, जिसे बुद्धि–लब्धि (आई.क्यू) कहा जाता है, जिसे बच्चे की मानसिक आयु को उसके कालानुक्रमिक आयु से विभाजित करके और उत्पाद को 100 से गुणा करके ज्ञान करतें है। उदाहरण 12 वर्ष की मानसिक आयु वाले, 10 वर्ष के बच्चे का बुद्धि लब्धि 120 होगी।

बुद्धि लब्धि $= \frac{12}{10} \times 100 = 120$, बुद्धि लब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{क्रमिक आयु}} \times 100$

16.4.2 बहु–बुद्धि पर हॉवर्ड गार्डनर

1883 में हॉवर्ड गार्डनर की कृति गार्डनर द फ्रेम्स ऑफ माइंडश से बुद्धि का एक और लोकप्रिय विचार आया, जिसमें उन्होंने बहु–बुद्धि” का विचार प्रस्तुत किया। उन्होंने निम्नलिखित आठ प्रकार की क्षमताओं का वर्णन किया:

तालिका 16.1
बहु–बुद्धि में आठ प्रकार की क्षमताएँ

बुद्धि	उदाहरण	घटक / अवयव
तार्किक / गणितीय	वैज्ञानिक / गणितज्ञ	संख्या, आकृति, तर्क और समालोचनात्मक सोच के प्रति।
संवेदनशीलता	भाषाई कवि, लेखक, पत्रकार	लिखित एवं मौखिक दोनों ही शब्दों को समझने के साथ–साथ शब्दों को याद रखने की क्षमता।
संगीत स्वर	गायक, गीतकार	ध्वनि,लय, स्वरमान आदि के प्रति का संवेदनशीलता। वे गाने,संगीत बजाने व लयबद्द करने में सक्षम होते हैं।
स्थानिक	नाविक, मूर्तिकार, वास्तुकार, ड्राइवर, अंतरिक्ष यात्री, आदि	विभिन्न कोणों से वस्तुओं की कल्पना करने, अंतरिक्ष व सूक्ष्म विवरण देखने की क्षमता
शारीरिक गतिकी	व्यायामी, नर्तकियों, आदि	शरीर की गतिविधियों को नियंत्रित करने की क्षमता।
पारस्परिक	राजनेता, नेता, विक्रेता, आदि	अनुक्रिया की क्षमता।
अन्तर्वैयक्तिक	स्वयं की गहरी समझ	स्वयं की भावनाओं, ताकत और कमजोरी, आत्मनिरीक्षण और आत्म–चिंतन को समझने की क्षमता।
प्राकृतिक	शिकारी, किसान, वनस्पतिज्ञ	वनस्पतियों और जीवों को पहचानने की क्षमता।

बाद में 1999 में, गार्डनर ने अस्तित्ववादी बुद्धि को जोड़ा। उन्होंने इसे स्वयं की अंतर्ज्ञानी विचार व परा संज्ञान (अनुभूति की अनुभूति) का प्रयोग कर अपने अस्तित्व के बारे में गहन प्रश्न पूछने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया, जैसे हम कौन हैं? 'हमारे जीवन के उद्देश्य क्या हैं? आदि। हालांकि, गार्डनर के सिद्धान्तों की आलोचना भी हुई, जिसे एक अनुभवजन्य साक्ष्य के अभाव के रूप में बताया गया। इसके अलावा, संगीत और नृत्य जैसी क्षमताओं को प्रतिभा गुण की श्रेणी में रखा जाना बेहतर है। बुद्धि को सामान्य प्रकार की क्षमताओं के लिए रखा जाना चाहिए।

16.4.3 बुद्धि के शैक्षिक निहितार्थ

बुद्धि के प्रत्यय का एक मानसिक क्षमता समझे जाने से बहु–क्षमताओं तक का सफर एवं बुद्धि का आसानी से प्रभावित होने पर बदलती अवधारणायें, शैक्षिक प्रथाओं के लिए अति महत्वपूर्ण है। निहित क्षमता के रूप में प्रत्येक व्यक्ति में इसकी प्राप्ति उसकी अपनी बौद्धिक खुशी के लिए है। राष्ट्र की प्रगति प्रत्येक व्यक्ति की निष्क्रिय क्षमता को उत्तेजित करने में निहित है, जिसका उपयोग समकालीन विश्व के मुद्दों, ज्ञान सृजन और मानवता को बचाने में उद्देश्यपूर्ण रूप से किया जा सकता है। फ्रांस के पूर्व प्रधान मंत्री एडगर फ्योर ने यूनेस्को की रिपोर्ट 'लर्निंग टू बी ', मानव मस्तिष्क की एक बहुत बड़ी अप्रयुक्त क्षमता पर टिप्पणी की है। शिक्षा का कार्य शिक्षण एवं अधिगम के माध्यम से मानव मस्तिष्क की इन असीमित संभावनाओं को कार्यान्वित करना है।

स्कूल के पाठ्यक्रम को इस तरह से तैयार किया जाना चाहिए कि छात्रों को अपनी मानसिक क्षमताओं का उपयोग करने के लिए पाठ्यक्रम में पर्याप्त स्थान मिले और उसी के अनुसार अभ्यास कर सके। शिक्षकों को विद्यार्थियों की बुद्धि के क्षेत्रों की पहचान करने में स्वयं को संलग्न करना चाहिए और तदनुसार उन्हें अपनी बुद्धि के क्षेत्रों में काम करने के लिए आगे के अवसर प्रदान करना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि किसी अधिगमकर्ता के पास गणितीय बुद्धि है, तो उसे गणितीय कार्यों की चुनौती दी जानी चाहिए। इसी प्रकार, यदि एक शिक्षार्थी के पास गतिक्रमिक बुद्धि है, तो उसे खेलध्क्रीडा गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

16.1 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

1. बुद्धि क्या है?

....

....

....

2. गार्डनर के बहु–बुद्धि के सिद्धांत का वर्णन करें।

....

....

....

3. बुद्धि के सन्दर्भ में शिक्षा की भूमिका पर चर्चा करें।

....

....

....

16.5 अभिक्षमता

आपने देखा होगा कि विभिन्न स्तर की बुद्धि वाले छात्र जरूरी नहीं है कि सभी विषय क्षेत्रों में समान स्तर का प्रदर्शन करे। आपने देखा होगा कि कोई व्यक्ति गणित में अच्छा करता है, लेकिन भाषाओं में विफल रहता है और इसके विपरीत हो सकता है। कई बार, आपने देखा होगा कि कोई व्यक्ति क्रीडा क्षेत्र में बहुत अच्छा करता है लेकिन शैक्षणिक उपलब्धि में अच्छा नहीं कर पाता। कई बार, आप ऐसे कई व्यक्तियों के संपर्क में आए होंगे जो यांत्रिक कार्यों, कला और शिल्प, शारीरिक गतिविधियों, संगीत और नाटक आदि में अच्छा करते हैं, लेकिन वे अन्य क्षेत्रों में समान रूप से तीव्र नहीं होते हैं। यह उस क्षेत्र में किसी कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए उसकी योग्यता या विशिष्ट क्षमताओं के कारण होता है।

16.5.1 अभिक्षमता का अर्थ एवं संप्रत्यय

अभिक्षमता को इस प्रकार परिभाषित किया गया हैः

शिक्षा के शब्दकोश में सी.वी.गुड ने मनोवृत्ति को ' प्रयास के धरा में एक स्पष्ट, सहज व जन्मजात क्षमता है जैसे विशेष कला, स्कूल विषय या व्यवसाय (स्रोतः शोधगंगा, 2020)।

मनोविज्ञान के शब्दकोश में, एच.सी. वारेन ने अभिक्षमता को एक शर्त या विशेषताओं के सेट के रूप में परिभाषित किया है, जिसे किसी व्यक्ति को प्रशिक्षण, भाषा बोलने, या संगीत उत्पन्न करने की क्षमता जैसी प्रतिक्रियाओं के प्रशिक्षण के साथ प्राप्त करने की क्षमता के लक्षण के रूप में माना जाता है। (स्रोतः शोद्धगंगा, 2020)।

हैन और मैकलीन (1955) ने परिभाषित किया "अभिक्षमता ऐसी छुपी सामर्थ्य अविकसित क्षमताएं हैं जो उन्हें व कौशल को हासिल करने तथा उपलब्धियों को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है।

उपरोक्त परिभाषाओं से, अभिक्षमता को एक व्यक्ति की एक स्थिर क्षमता के रूप में सबसे अच्छी तरह से समझा जाता है जो संसाधन के रूप में आसानी से उपलब्ध है। जिसे इस क्षमता की आवश्यकता वाले विशिष्ट कार्यों पर लागू किया जा सकता है। परिणामस्वरूप अधिगम की उसकी क्षमता बढ़ जाती है। विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न कौशल और उनके अनुरूप अभिक्षमता की आवश्यकता होती है। इसका अभिज्ञान करते हुए, मनोवैज्ञानिकों ने विशिष्ट अभिक्षमता का आंकलन करने के लिए कई परीक्षण विकसित किए गए हैं ताकि यह अनुमान लगाया जा सके कि कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट कौशल पर कैसा प्रदर्शन कर सकता है। (इग्नू, 2007)।

16.5.2 अन्य मनोवैज्ञानिक गुणों के साथ अभिक्षमता का संबंध

पहले के खंडों में यह चर्चा की गई है कि विशिष्ट क्षेत्र में उपलब्धि के लिए अकेले बुद्धि ही पर्याप्त नहीं होती है। यह व्यक्ति की उस क्षेत्र में, रुचि, मनोवृत्ति व अभिवृत्ति पर भी निर्भर करता है।

किसी विशेष क्षेत्र में योग्यता रखने वाले व्यक्ति से उस क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद की जाती है, यदि उसे उस क्षेत्र में कौशल और योग्यता प्राप्त करने का उसे अवसर प्रदान किया जाये। हालाँकि, किसी के पास एक ही क्षेत्र में बुद्धि व अभिवृत्ति दोनों

नहीं हो सकते हैं, लेकिन इस बात के साक्ष्य हैं कि व्यक्ति की बुद्धि व अभिवृत्ति स्कोर के बीच सकारात्मक सहसंबंध है और इसी तरह छात्रों की उपलब्धि और अभिवृत्ति के बीच भी सकारात्मक सहसंबंध मौजूद है।

अभिवृत्ति व मनोवृत्ति भी किसी न किसी रूप में एक दूसरे के साथ सहसंबंधित होते हैं क्योंकि किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्ति की अभिक्षमता, स्वाभाविक रूप से उस क्षेत्र में काम करने के लिए अनुकूल मनोवृत्ति विकसित करती है। कई बार, यह माना जाता रहा है कि अभिक्षमता एक व्यक्ति का जन्मजात गुण है, लेकिन यह सच नहीं है। बिंगहेम इस विचार को गलत मानते हैं। बिंगहैम (1942) के अनुसार, अभिक्षमता एक व्यक्ति का सामर्थ्य है तथा निश्चित रूप से जन्मजात व पर्यावरणीय, दोनों ही स्थितियों के बीच के अंतःक्रिया का उत्पाद है।

16.5.3 अभिक्षमता के शैक्षिक निहितार्थ

किसी व्यक्ति की अभिक्षमता में योगदान करने वाले कारक उसका/उसकी आनुवंशिकता तथा वह वातावरण जिससे वह घिरा हुआ है। अतः, किसी क्षेत्र में, किसी व्यक्ति के गुणों और विशिष्ट अभिक्षमता की पहचान करने के लिए शिक्षक व माता–पिता की भूमिका अहम् है और तदनुसार उन गुणों को प्रदर्शित करने के लिए अवसर प्रदान करना है। शिक्षा का उद्देश्य स्कूल प्रणाली में बच्चों का इस तरह से विकास हो कि उन्हें कार्य करने की पर्याप्त अवसर मिले और उनकी योग्यता के क्षेत्रों में कौशल विकसित हो।

एक बच्चे की अभिक्षमता के विकास के लिए शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- ➢ शिक्षक को विद्यार्थियों के मजबूत बिंदुओं का निरीक्षण करना चाहिए और तदनुसार उन्हें उन क्षेत्रों में बढ़ने के अवसर प्रदान करने चाहिए।
- ➢ जरूरी नहीं कि सभी बच्चों को शैक्षणिक गतिविधियों को करने के लिए मजबूर किया जाएगा, ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में अभिक्षमता रखने वाले बच्चों को उन क्षेत्रों में आगे बढ़ने का अवसर दिया जाना चाहिए।
- ➢ परिवार में, माता–पिता दोनों को अपने बच्चों के व्यवहार का अवलोकन करना चाहिए और तदनुसार उन्हें उनके क्षेत्रों में अध्ययन करने के अवसर दिए जाने चाहिए।
- ➢ विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों को संचालित करने की आवश्यकता है जिससे सभी विद्यार्थी अपनी अभिक्षमता के अनुसार उन गतिविधियों में भाग ले सकें।
- ➢ विद्यार्थियों की शैक्षणिक व सह–शैक्षणिक क्षमताओं के बीच कोई तुलना नहीं होनी चाहिए। विद्यालय की किसी भी गतिविधी में योग्यता को उतना ही महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

16.2 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

4. अभिक्षमता को परिभाषित करें?

....

....

....

5. अन्य गुणों के साथ अभिक्षमता कैसे सम्बंधित है?

....

....

....

16.6 सृजनात्मकता

नवीनता, सृजनात्मकता की एक अनिवार्य विशेषता के रूप में, मौजूदा ज्ञान के बड़े पैमाने पर पुनव्यवस्था का अर्थापन है। उदाहरण के लिए, एक बालक पुनः खोज कर यह बताता है कि अन्य दो पक्षों के वर्गों का योग तीसरे पक्ष के वर्ग के योग के बराबर है। इसे एक सृजनात्मकता कार्य माना जाता है, हालांकि ज्ञान के एक निकाय के लिए इस खोज का निहितार्थ नगण्य है, क्योंकि यह नियम पहले से ही ज्यामितीय ज्ञान का एक हिस्सा है। लेकिन, इसका कुछ अर्थ इसलिए है क्योंकि यह एक नवाचार रूप से बालक द्वारा अवधारित और प्रस्तुत किया गया है।

सृजनात्मकता को चार श्रेणियों में समझा जा सकता है। एक व्यक्ति जो सृजन करता है, व्यक्तिगत दृष्टिकोण से सृजनात्मकता है। इसे मानसिक प्रक्रिया के द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है जिसमे प्रेरणा, धारणा, अधिगम, विचारना और सम्प्रेषण सम्मिलित हैं। पर्यावरणीय और सांस्कृतिक प्रभाव, सृजनात्मकता को देखने के अन्य तरीके हैं और अंत में इसे उत्पाद के संदर्भ में समझा जाता है, जैसे कि सिद्धांत, आविष्कार, चित्र, नक्काशी और कविताएं। जो भी हो, अधिकांश परिभाषाएँ सृजनात्मकता के एक अनिवार्य तत्व यानी नवीनता को स्वीकार करती हैं।

अतः किसी भी प्रकार की नवीनता, आविष्कार, वैज्ञानिक सोच, सौंदर्य सृजन अथवा कोई भी कार्य जिसमें पहले से अनुभवी तत्व को नए विन्यास में शामिल करना एक सृजनात्मकता का कार्य है। इस संदर्भ में, लुई फिलगलर कहते हैं "सृजनात्मकता प्रत्येक व्यक्ति के दायरे में होती है जो व्यक्ति की अभिव्यक्ति और योग्यता के आधार पर होती है"। लोगों के बीच अभिव्यक्ति की क्षमता प्रकृति से असमान होती है। हमें सभी बच्चों को अभिव्यक्ति का समान मौका देना चाहिए, परन्तु हमें प्रत्येक बच्चे से समान रूप की सृजनात्मकता की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।

16.6.1 सृजनात्मकता के सिद्धान्तं

सृजनात्मकता का ऐसा कोई सिद्धांत नहीं है जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जा सकें। लेकिन मनोविज्ञान के विभिन्न विचारधाराओं ने इस प्रत्यय के सामान्य बोध में योगदान दिया है। सृजनात्मक चिंतन का एक स्पष्टीकरण गेसटाल्ट (सम्पूर्ण/समस्थी) या पैटर्न का निर्माण है। एक समस्यात्मक परिस्थिति के सभी तत्वों के बीच संबंध स्थापित करके समस्या को समग्र रूप से समझा जाता है। जैसे ही वास्तविक तौर पर कड़ियाँ बन जाती है, तनाव से सदभाव बहाल करने के समाधान पर पहुंच जाते हैं। यहां बच्चे को एक सुसंगत कतार में सोचना पड़ेगा। परन्तु यह विचारधारा यह नहीं समझाती कि एक बच्चे को मौलिक प्रश्न कैसे पूछने हैं। मनोविश्लेषणवादी विचारधारा सृजनात्मकता को अचेतन मस्तिष्क में इदम् व अहम् के संघर्ष का उत्पाद मानते है परन्तु उससे पहले के रूप में व्यक्ति को स्वयं की संवेगिक भलाई के लिए व्यक्त करते रहना चाहिए। अधिक दिलचस्प बात यह है कि जिस सामग्री पर एक व्यक्ति अपने अचेतन संघर्ष को हल करता है वह बचपन की अधूरी इच्छाएं हैं, चाहे वह लेखन, पेंटिंग या नृत्य हो।

अचेतन मन के इन संभावित सृजनात्मकता आवेगों का दमन, न्यूरोसिस (विक्षिप्तता) का कारण बन सकता है। अभि हाल के विचारक जैसे ई.जी. सेशटेल ने सृजनात्मकता को भूख की तरह होने की माना है – सृजनात्मक व्यक्ति के भीतर अंतर्नाद, जो संतुलन की स्थिति में लौटने के लिए सृजनात्मक रूप से सोचता है। जबकि कार्ल रोजर की धारणा है कि सृजनात्मकता किसी व्यक्ति के स्वयं को बढ़ाने और अपनी क्षमताओं को वास्तविकता प्रदान करना है। अब्राहम मेस्लो इस विचार का समर्थन करते हुए सृजनात्मकता को आत्म–बोध के माध्यम से ध्वनि और एकीकृत व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में दर्शाता है।

16.6.2 सृजनात्मकता के चरण

सिद्धांतकारों की कुछ हद तक आम सहमति है कि सृजनात्मकता पांच चरणों में होती है। सृजनात्मकता का प्रत्येक चरण अन्य चरणों के साथ जुड़ा हुआ है। सृजनात्मकता का निम्नतम चरण अंतर्दृष्टि से शुरू होता है और यह सृजनात्मकता के उच्चतम चरण यानी सत्यापन (चित्र –2 देखें) तक पहुंचता है।

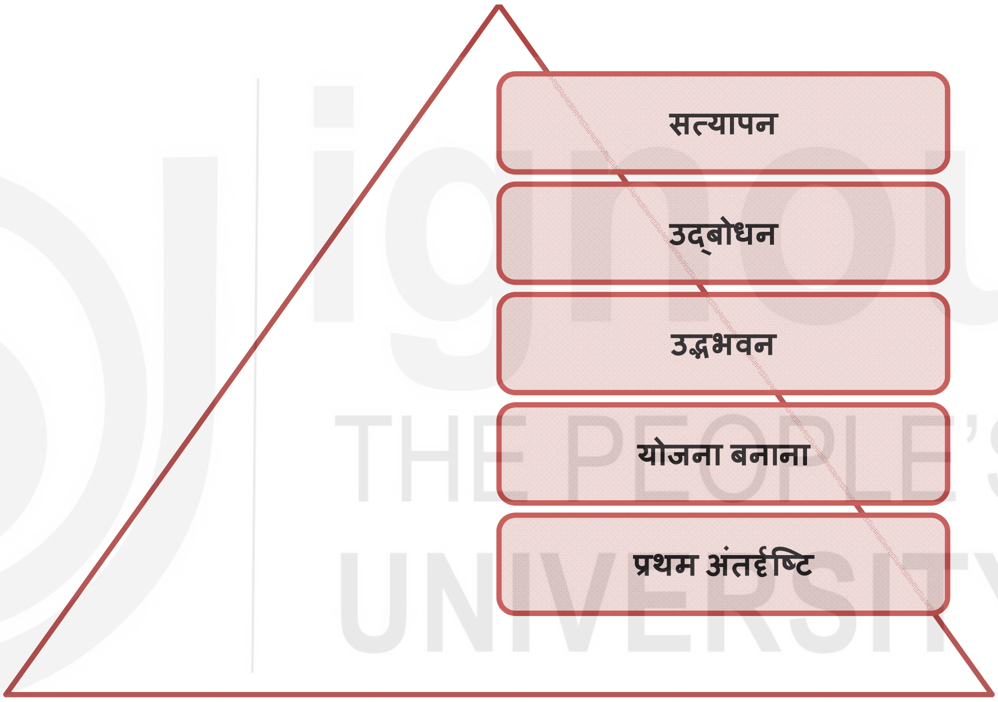

चित्र–16.2 सजृनात्मकता के चरण

प्रथम अंतर्दृष्टिः सबसे पहले, किसी के दिमाग में एक विचार उत्पन्न होना चाहिए कि कुछ किया जाना है। जॉन मिल्टन ने "पैराडाइज लॉस्ट" लिखने से बहुत पहले ही, उन्हें एक महाकाव्य लिखने का विचार था।

योजना बनानाः विचार उत्पन्न करने के लिए, निर्माता गहन पठान, चर्चा, प्रश्निकरण, संग्रह एवं अन्वेषण में संलग्न हो जाता है। एक चित्रकार पहाड़ियों पर कई दिनों तक बैठकर रोशनी के अलग–अलग रंगों का अवलोकन करता है और उसे कैनवास पर व्यक्त करने से पहले अपनी यादों और भावनाओं में उन्हें भर देता है।

उन्दवनः सृजनात्मक चिंतन के लिए विषय में विसर्जन आवश्यक शर्त है। जब मस्तिष्क अचेतन रूप से काम कर लिया हो, और हर प्रकार की कुंठा, निराशा को जन्म दे दिया हो तो रचनाकार चिंतन छोड़ देता है। यह वह समय है जब विचार भूमिगत हो जाते हैं, उनके उद्भव से पहले ही अप्रत्याशित संबंध बना लेते हैं। प्रेरणा, छह महीने, छह घंटे या छह मिनट में आ सकती है।

उद्‌बोधनः फिर अचानक, विचार की एक चिंगारी में उद्‌बोधन उत्पन्न होता है जो विभिन्न विचारों को पसंद करता है। यह लंबे समय के अथक परिश्रम के बाद था, 1685 में एक दिन, न्यूटन ने अपने बगीचे में एक सेब गिरते हुए देखा, जिसे उन्होंने 'गुरुत्वाकर्षण के नियम' में बदल दिया।

सत्यापनः यह एक विचार की आई चिंगारी को परिष्कृत करने, बदलने, सही करने और सम्प्रेषण करने का कठिन चरण है। न्यूटन ने अपने सिद्धांतों को सत्यापित करने में कई साल बिताए।

16.6.3 सृजनात्मकता का शैक्षिक प्रभाव

एक बच्चा अपनी क्षमता के उपयोग को बेहतर कर सके इसके लिए शिक्षा को उसकी विभिन्न परिस्थितियों में सृजनात्मक चिंतन सीखने हेतु सहायता करनी चाहिए। शिक्षाविदों ने महसूस करना शुरू कर दिया है कि सृजनात्मकता एक औसत छात्र के लिए उतनी ही प्राकृतिक है जितनी की एक प्रतिभाशाली के लिए। अतः, विद्यार्थियों में सृजनात्मकता को प्रज्वलित करने के लिए कक्षा में कुछ क्रियाएं की जा सकती हैं।

शिक्षक को विद्यार्थियों के मूल विचार को प्रोत्साहित करना चाहिए।

जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने के लिए, शिक्षक को यह पूछकर विद्यार्थियों के मन में असहमति पैदा करने की आवश्यकता है कि क्या होगा ...? यह कैसे प्रभावित करेगा। ..? यदि हम दूसरों के विचारों को पढ़ सकते तो क्या होता? इसके लिए शिक्षक को विद्यार्थियों में एक जिज्ञासु मन विकसित करना होगा।

सृजन के लिए स्व–दिशा आवश्यक है, इसलिए शिक्षक को अपने स्वयं के ज्ञान के आधार पर स्वतंत्र परियोजना लेने के लिए प्रशिक्षित होना चाहिए। शिक्षक को इसका मूल्यांकन स्वयं करना चाहिए।

बच्चे को ज्ञान में अत्यावश्यक कमी के बारे में जागरूक होना शिखाया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हें वस्तुओं को नवीन रूप में देखने में सहायता कर सकते हैं नाकि उन्हें ऐसे ही प्रदान कर दिया जाये।

स्व–अवशोषण नवीनता, उत्पत्ति और प्रवाह के लिए आवश्यक है। कड़ी मेहनत या दृढ़ता के साथ नवीनता प्राप्त की जा सकती है।

16.3 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

6. सृजनात्मकता क्या है?

....

....

....

7. सृजनात्मकता के चरणों पर चर्चा करें।

....

....

16.7 अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा एक बहुत ही सामान्य शब्द है जिसका उपयोग हम अपने दिन प्रतिदिन के अभ्यासों में करते हैं। हम अपने बच्चों, शिक्षकों, कर्मचारियों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह लोगों के लिए समय और सटीकता से काम करने के लिए एक बहुत बड़ा बल है। यह शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में अत्यधिक लोकप्रिय है।

मास्लो ने आवश्यकता के आधार पर अभिप्रेरणा को परिभाषित किया– ' शारीरिक अथवा समाजशास्त्रीय कमी जो एक व्यक्ति मजबूरी में संतुष्ट करने हेतु महसूस करता है। एक संतुष्ट आवश्यकता व्यवहार को प्रेरित नहीं करती है। चेरी (2010), ने प्रेरणा को 'उस प्रक्रिया के रूप में देखा, जो लक्ष्य उन्मुख व्यवहार की शुरुआत, मार्गदर्शन और रखरखाव करती है'। 'ब्रूनर (2006) ने इसे, प्रयास के स्तर के रूप में परिभाषित किया जो एक व्यक्ति, एक निश्चित लक्ष्य की उपलब्धि के लिए विस्तार करने के लिए तैयार है'। गुए (2010) ने इसे अंतर्निहित व्यवहार का कारण बताया।

16.7.1 आवश्यकता के रूप में अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा के कई सिद्धांत हैं, लेकिन अभिप्रेरणा की सबसे प्रसिद्ध सिद्धांतों में से अब्राहम मैस्लो का सिद्धांत है, जिन्होंने 1962 में 'टुवार्ड्स ए साइकोलॉजी ऑफ बीइंग' शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की थी। मास्लो ने पदानुक्रमित आवश्यकताओं के पाँच स्तरों की पहचान की जिन्हें हम जीवन भर पूरा करने का प्रयास करते हैं। प्रगतिशील श्रृंखला में, हमारी अगली आवश्यकता तब प्रकट होती है जब पिछली वाली प्राप्त हो जाती है। ये आवश्यकताएं हैं:

चित्र–16.3 मास्लो के स्व–बोध का सिद्धांत

मैस्लो के प्रेरणा के सिद्धांत पदानुक्रमित क्रम में मानव की आवश्यकता बताते हैं। पदानुक्रम में, मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं, अर्थात् भोजन, वस्त्र, आश्रय आदि से शुरू होता है और वे उच्चतम क्रम की ओर जाते हैं, अर्थात् आत्म–बोध की आवश्यकता होती है। आत्म–बोध चरण तक पहुंचना हमेशा बहुत मुश्किल होता है क्योंकि इसमें आत्मनिरीक्षण, ध्यान और आत्म–साक्षात्कार की आवश्यकता होती है। यह अवस्था मनुष्य की एक ऐसी अनुभूति का पहलू है, जो पहले की जरूरतों के लिए बहुत आवश्यक है और जो पहले से ही हासिल की जा चुकी है और इस स्तर पर मनुष्य स्वयं को वास्तविक बोध देना चाहता है।

इन जरूरतों को पूरा करने के लिए, शिक्षकों और शिक्षाशास्त्रियो को कुछ मूल्यों के पोषण का ध्यान रखना चाहिए, जैसेः

- प्यार और देखभाल इन आवश्यकता को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण है। अतः बच्चों को इनका मूल्य करना सीखना चाहिए। शिक्षक और माता–पिता को बच्चों को परामर्श देना चाहिए कि वे इन आवश्यकताओं को विभिन्न दृष्टिकोणों से समझें और अधिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्यार और देखभाल करना सीखें।
- खोज करने की स्वतंत्रता ज्ञान प्राप्त कराएगा। सृजनात्मकता काम में नवीनता, मौलिकता और प्रवाह की खोज के लिए आवश्यक होगी।
- जीवन के उद्देश्य को समझने की क्षमता का विकास और इसके लिए प्रयास करने से वास्तव में आत्म–बोध की ओर ले जा सकता है। यह संतुलित और स्वतंत्र बनने के लिए आंतरिक सत्य की खोज भी कर रहा है।

मास्लो के आवश्यकताओं की पदानुक्रम की इस आधार पर समालोचना की गई है कि मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति हमेशा प्रकृति में पदानुक्रमित नहीं होती है। कई बार, किसी व्यक्ति की निम्न आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती है, लेकिन वह उच्च आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, सुरक्षा की जरूरतों को पूरा किए बिना, व्यक्ति अपनी अपनेपन की चाहत (जो अगला स्तर है) को पूरा करने की कोशिश करता है। आलोचना के बावजूद, इस पदानुक्रम की प्रासंगिकता का उपयोग वर्षों से व्यक्तियों को प्रेरित करने के लिए किया गया है।

16.7.2 स्व–प्रभावकारिता के रूप में अभिप्रेरणा

बंडुरा के आत्म–प्रभावकारिता का सिद्धांत बच्चों की किसी विशिष्ट कार्य को करने की उनकी क्षमता के बारे में विश्वास की व्याख्या करता है। स्व–प्रभावकारिता, आत्म–अवधारणा का (मैं अपने बारे में क्या सोचता हूं?) और आत्म–सम्मान (मैं अपने बारे में कितना अच्छा महसूस करता हूं?) मिश्रण है। ये छात्रों के आत्मविश्वास के महत्वपूर्ण स्रोत हैं जो उन्हें किसी कार्य की कठिनाई और जटिलता के स्तर को चुनने में मदद करते हैं। स्व–प्रभावकारिता का एक अधिकतम स्तर, वास्तविक क्षमता से थोड़ा ऊपर है (बंडुरा, 1997)।

आत्म–प्रभावकारिता की एक उच्चतम स्तर व्यक्ति का कार्य में दृढ़ता की व्याख्या करती है, तनावपूर्ण स्थिति से निपटने के लिए उसकी क्षमता में सुधार करता है और विफलताओं में उसे अभिप्रेरणा मिलती है। जीवन की स्थिति में, अलग–अलग उम्र में, जैसे कि व्यवसाय, विवाह, बच्चों के पालन–पोषण, पेशे और जीवन की दृष्टि और मिशन को परिभाषित करने के लिए समाज द्वारा उठाए गए मांगों को पूरा करने के लिए आत्म–प्रभावकारिता का योगदान देती है।

विद्यालयों और महाविद्यालयों का शैक्षिक वातावरण निम्नलिखित तरीकों से आत्म–प्रभावकारिता में योगदान कर सकते हैंः

1. कार्यों में महारत हासिल करने में विद्यार्थियों की सहायता करना।
2. विद्यार्थियों को अन्य महारत हासिल करने वाले कार्यों को देखने के लिए प्रोत्साहित करना।
3. चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए अधिगमकर्ता को प्रेरित करना।
4. अधिगमकर्ताओं के कार्यों को करने में भावनात्मक प्रतिरोधक को तोड़ना।

16.7.3 अभिप्रेरणा के शैक्षिक निहितार्थ

अब हम जानते हैं कि अभिप्रेरणा एक महत्वपूर्ण संरचना है और छात्रों में इसकी कमी उनकी सीखने की प्रक्रिया में बाधा बन सकती है। विद्यार्थियों को प्रेरित करते समय शिक्षकों द्वारा पांच कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। ये विद्यार्थी, शिक्षक, विषयवस्तु, विधि प्रक्रिया और पर्यावरण हैं। विद्यार्थियों को सीखने के संसाधनों की पहुँच होनी चाहिए, अनुदेशनात्मक प्रक्रिया से लाभ पाने की क्षमता तथा विभिन्न शिक्षण गतिविधियों में रुचि होनी चाहिए। शिक्षक को प्रशिक्षित होना चाहिए, शैक्षिक प्रक्रिया पर केंद्रित, छात्रों को समर्पित और उत्तरदायी होना चाहिए। यह विधि विद्यार्थियों के जीवन के लिए अभिनव, रोचक और अनुप्रयोगात्मक होनी चाहिए। पर्यावरण को व्यक्तिगत आवश्येकताओं के लिए सुलभ, सुरक्षित और पूरा करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, विद्यार्थी अगर दो कारकों अर्थात आंतरिक एवं बाह्य अधिगम को ध्यान में रखे अधिगम में वृद्धि होती है। विद्यार्थी, जो आंतरिक रूप से प्रेरित होते हैं, बाह्य पुरस्कार या पुनर्बलन की तुलना में अधिगम एवं विषयवस्तु का अनुमूल्यन करेंगे। इसे बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को प्रयास करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। बाह्य रूप से प्रेरित विद्यार्थी पुरस्कार और परीक्षा स्कोर जैसे परिणामों पर भरोसा करेंगे। सबसे प्रभावी बाह्य अभिप्रेरणा, नौकरी खोजने की संभावना है। स्कूल का माहौल विद्यार्थियों में योग्यता और प्रतिस्पर्धा विकसित करने के लिए इन दो अभिप्रेरणाओं के मिश्रण को बढ़ावा दे सकता है।

16.4 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

8. अभिप्रेरणा क्या है?

....
....
....
....

9. मैस्लो के अभिप्रेरणा के सिद्धांत का विवरण करें.

....
....
....
....

16.8 अभिवृत्ति

अभिवृत्ति, वस्तुओं, घटनाओं, चीजों के प्रति अनुकूल से प्रतिकूल की ओर अनुक्रिया की अर्जित पूर्व प्रवृत्ति है। इसे संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारिक शब्दों में समझाया गया है। किसी वस्तु या घटना या किसी चीज के प्रति किसी व्यक्ति की अभिवृत्ति समय–समय पर बदलती है एवं इसे सकारात्मक या नकारात्मक शब्दों में व्यक्त किया जाता है। अभिवृत्ति पैमाने की सहायता से अभिवृत्ति को भी मापा और अर्हित किया जा सकता है।

16.8.1 अभिवृत्ति के लक्षण

व्यक्तियों में अभिवृत्ति का विकास, समय के साथ होता हैं। यह जन्म के समय व्यक्ति में मौजूद नहीं होती है। जैसे परिवार में अन्य सदस्यों के व्यवहार को देखकर परिवार में सदस्यों के लिए सम्मान सीखा जाता है।

अभिवृत्ति शून्य में नहीं अपितु किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना और चीज के प्रति होती है। जैसे किसी व्यक्ति को पसंद या नापसंद करना समय के साथ विकसित होता है।

व्यक्ति की अभिवृत्ति सकारात्मक से नकारात्मक तक होता है, अपेक्षाकृत स्थायी रहता है और धीरे–धीरे बदलता है, उदाहरणरू मुझे ऑनलाइन माध्यम से सीखना पसंद है।

इसमें प्रेरक गुण होते हैं। उदाहरणरूमैं खुद को चुनौतीपूर्ण शैक्षणिक कार्यों में संलग्न करना पसंद करता हूं।

16.8.2 विश्वास, मूल्य और अभिवृत्ति

एक अभिवृत्ति, एक व्यक्ति की मान्यताओं एवं मूल्यों से निकटता से संबंधित है। **विश्वास** प्रकृति में अधिकतर व्यक्तिगत होते हैं और हमारे व्यक्तिगत अनुभवों के माध्यम से विकसित होते हैं। किसी की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक, बौद्धिक और सामाजिक मान्यताएँ अधिकतर उसकी व्यक्तिगत समझ और अनुभवों पर आधारित होती हैं। विश्वास प्रकृति में अमूर्त और व्यक्तिपरक होते हैं क्योंकि वे किसी एक के वक्तिगत निर्णय व प्रवृत्ति पर निर्भर करते हैं, जैसे देश के कुछ राजनीतिक आयोजनों पर स्वयं निर्णय लेना

मूल्य, वे विश्वास हैं जो हमारे जीवन में हमारी अभिवृत्ति व कार्यों को प्रेरित या मार्गदर्शन करते हैं। मूल्य, अपने स्वयं के विश्वास से विकसित होते हैं। विश्वासों को स्वयं के मूल्यों में सम्मिलित किया जाता है। मूल्य, प्रकृति, अमूर्त, और व्यक्तिपरक हैं। मूल्यों को वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक और मात्रात्मक रूप से नहीं मापा जा सकता है। हम जो सामान्य मूल्य विकसित करते हैं वे ईमानदारी, स्वतंत्रता, समानता, सौंदर्य, सद्भाव, खुशी, सच्चाई आदि हैं। इन मूल्यों को किसी व्यक्ति के व्यवहार से देखा जा सकता है लेकिन उद्देश्यपूर्ण रूप से मापना मुश्किल है क्योंकि हम ईमानदारी, खुशी, सच्चाई, आदि को परिमाणित रूप से नहीं माप सकते हैं। व्यक्ति की अभिवृत्ति उसके विश्वासों एवं मूल्यों पर आधारित होते हैं। इसमें विश्वास एवं मूल्य दोनों ही सम्मिलित हैं। किसी एक की अभिवृत्ति विभिन्न परिस्थितियों, विचारों, वस्तुओं एवं व्यक्तियों के प्रति उसकी अपनी धरना व अभिवृत्ति हो सकती है। स्वयं के संज्ञानात्मक, भावात्मक व मनोगात्यात्मक क्षेत्रों की समझ के आधार पर अभिवृत्ति का निर्माण होता है इसका मापन व परिमाण अभिवृत्ति मापनी के द्वारा किया जा सकता है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की स्कूल प्रणाली के प्रति, शिक्षकों के प्रति, विभिन्न विषयों के प्रति, मूल्यांकन के प्रति, समाज के प्रति, खेल के प्रति, सहकर्मी और समूह अधिगम के प्रति आदि को अभिवृत्ति मापनी से मापे व परिमानित भी किया जा सकता है। व्यक्ति की अभिवृत्ति दोनों दिशाओं, धनात्मक या ऋणात्मक, अनुकूल या प्रतिकूल, वान्छनीय या अवांछणीय आदि ।

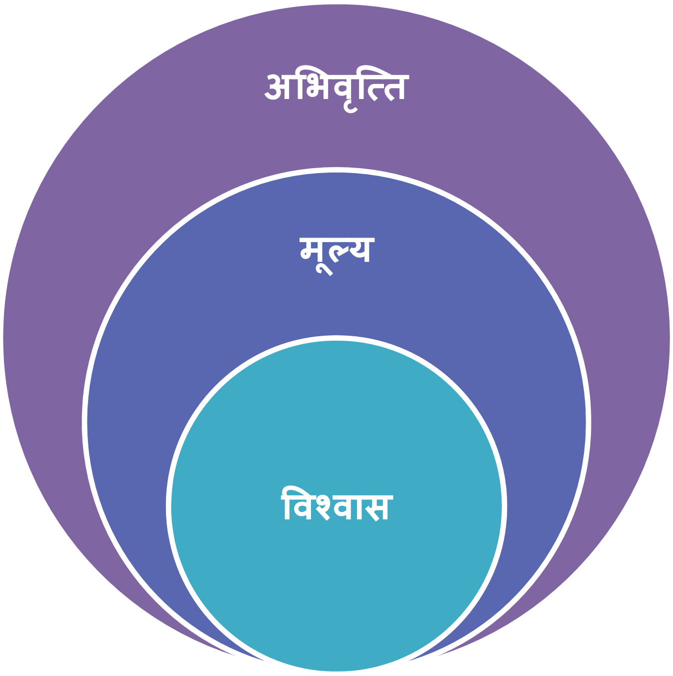

चित्र–16.4 विश्वासों, मूल्यों और अभिवृत्ति के बीच संबंधों को दर्शाता है।

16.8.3 अभिवृत्ति निर्माण के कारक

जो चीजें हमारी आवश्यकता को पूरा करती हैं, वे हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम करती हैं और हमारे अनुकूल अभिवृत्ति बनाती हैं, लेकिन जो चीजें हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधा बनती हैं, वे उनके प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति को जन्म देती हैं। उदाहरण के लिए, हम उस राजनीतिक दल का समर्थन करते हैं जो हमारी भलाई के लिए अधिक काम करता है।

i) सामाजिक अधिगम तीन तरीकों से हमारी अभिवृत्ति को प्रभावित करता है:

- **अनुकुलित अनुबंधन:** हमारी मनोवृत्ति बाहरी उत्तेजनाओं द्वारा अनुबंधित है। उदाहरण के लिए, यदि हम लॉटरी के माध्यम से पुरस्कार प्राप्त करने में अक्सर विफलता की जांच करते हैं, तो हम एक मनोवृत्ति विकसित करते हैं कि हम लॉटरी नहीं जीत सकते हैं जो किसी के भाग्य पर आधारित होता है।

- **सहायक अनुबंधन:** हम समाज के सदस्यों के व्यवहार से सीखने की प्रक्रिया में कुछ न कुछ अभिवृत्ति विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ मनोवृत्ति को हमारे माता–पिता द्वारा पुरस्कृत किया जाता है, जबकि धार्मिक प्रथाओं के अनुरूप नहीं होने पर, विवाह संबंधी पारिवारिक अनुशासन उन्हें पुरस्कृत नहीं करता है।

- **अवलोकनीय अनुबंहन:** परिवार और समाज में बच्चे माता–पिता और अन्य पारिवारिक सदस्यों को देखते हुए बढ़ते हैं। वे उनके ज्ञान पर सवाल उठाए बिना उनके कार्यों की पुष्टि करते हैं। उदाहरण के लिए, जीवन में धैर्य की आवश्यकता होती है, विकास हमारी अपनी जिम्मेदारी है, समाज में रहने के लिए सामाजिक पहचान महत्वपूर्ण है।

ii) सांस्कृतिक कारक: व्यक्ति विभिन्न सांस्कृतिक प्रथाओं के माध्यम से सीखते हैं। एक ही संस्कृति के लोग समान अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं वहीं विभिन्न संस्कृतियों के लोग अपने अभिवृत्ति में भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। एशियाई संस्कृति में लाए गए व्यक्ति अपने परिवार के साथ अपनी पहचान रखते हैं जबकि पश्चिमी समाज में वे अपनी वृद्धि को अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी मानते हैं।

iii) व्यक्तित्व कारक: अभिवृत्ति, जो हमारे व्यक्तित्व के अनुसार होती हैं उन्हें आसानी से प्राप्त कर लिया जाता है। उच्च बुद्धि और साक्षरता स्तर वाले लोग आलोचनात्मक, आरक्षित, शंकालु और अच्छे विचारों वाले होते हैं।

16.8.4 अभिवृत्ति के शैक्षिक निहितार्थ

एक व्यक्ति के विकास में अभिवृत्ति का विकास महत्वपूर्ण कारक है, क्योंकि एक खुशहाल और संतुष्ट जीवन जीने के लिए सही तरह की अभिवृत्ति महत्वपूर्ण है। इसलिए, सीखने के लिए खुलापन, तत्परता, अपने आप को बेहतर बनाने के लिए आलोचना स्वीकार करने का साहस, और किसी की अभिवृत्ति में सहनशीलता वांछनीय है। इसके अलावा, बच्चों की अभिवृत्ति, अनुबंधन, अवलोकन, संबद्धता और समाजीकरण के माध्यम से बनती है। इसलिए शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय को बच्चों के रवैये का ध्यान रखना चाहिए। एक सकारात्मक व्यक्तित्व तब बनता है जब बचपन के दौरान सकारात्मक अभिवृत्ति की नींव पर बनता है। उसे अपनी त्रुटि और जीवन की बाधाओं से सीखना चाहिए। अच्छी अभिवृत्ति वांछनीय हैं और उनका गठन व्यक्ति का दायित्व है, और एक विकासशील ज्ञानपूरक समाज के लिए जिम्मेदारी।

16.5 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

10. अभिवृत्ति क्या है?

....

....

....

11. छात्रों के बीच अभिवृत्ति विकसित करने के लिए शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करें।

....

....

....

16.9 व्यक्तित्व

जैसा कि पहले के खंडों में उपर्युक्त विशेषताओं पर चर्चा की गई है, एक व्यक्ति का व्यक्तित्व भी उन विशेषताओं में से एक है जो व्यक्ति, समूहों और स्थितियों के साथ व्यक्ति के व्यवहार को निर्धारित करता है। व्यक्तित्व शब्द परिभाषित करने और समझने के लिए एक बहुत ही जटिल धारणा है। सरल भाषा में, हम समझते हैं कि व्यक्तित्व एक व्यक्ति के बारे में सब कुछ की समग्रता है जिसमें उसके सामाजिक, भावनात्मक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिकता आयाम सम्मिलित हैं। परन्तु यह व्यक्तित्व का समग्र अर्थ नहीं है। आइए व्यक्तित्व के अर्थ और अवधारणा को समझने की कोशिश करें।

16.9.1 व्यक्तित्व का अर्थ एवं संप्रत्यय

श्व्यक्तित्व शब्द लैटिन शब्द पर्सोना से लिया गया है, जिसका अर्थ है तत्कालीन रोमन अभिनेताओं द्वारा पहना जाने वाला मुखौटा जो मंच पर अभिनय कर रहे थे। इस प्रकार,

व्यक्तित्व शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति की बह्याकृति है। कुछ प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व को इस प्रकार परिभाषित करते हैं:

'किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी विशिष्ट विशेषताओं का प्रतिरूप है'। (जे.पी. गिलफोर्ड)

'व्यक्तित्व वह है जो एक भविष्यवाणी की अनुमति देता है कि किसी स्थिति में वह क्या करेगाश। (आर.बी. काटेल)

'चरित्र वास्तव में अलग–अलग आदतों और विचारों का संरचना नहीं है। चरित्र व्यक्तित्व की सम्पूर्ण संरचना में अंतर्निहित है'। (एल.जे. क्रोनबाक)

'व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्रप्रकृति, बुद्धि तथा शरीर गठन का करीब करीब दृढ़ और स्थायी संगठन है, जो वातावरण में उसके अद्वितीय समायोजन को निर्धारण करता है'। (आइसेंक)

उपरोक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से, हम निम्नलिखित विशेषताओं की पहचान करके व्यक्तित्व की अवधारणा को समझ सकते हैं:

- प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग और अनोखा होता है।
- व्यक्तित्व वंशानुगत और पर्यावरणीय दोनों ही कारकों का उत्पाद है।
- व्यक्तित्व व्यक्ति को अपने परिवेश से समायोजन करने में सहायक होता है।
- विद्यालय आधारित अनुभव और गतिविधियाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं।
- व्यक्तित्व, व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार के संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोगात्यात्मक क्षेत्र के बारे में संपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- एक उपयुक्त तकनीक का प्रयोग करके, व्यक्तित्व का आंकलन और वर्णन किया जा सकता है।

16.9.2 व्यक्तित्व के प्रकार

कई मनोवैज्ञानिकों ने शारीरिक विशेषताओं, सामाजिक–भावनात्मक व्यवहार, अंतर–वैयक्तिक सम्प्रेषण कौशल, आदि के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया है। आइये इन प्रकारों को समझते हैं:

स्प्रेन्गेर ने व्यवहार और अभिवृत्ति के आधार पर व्यक्तित्व को छह विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया। जो निम्न हैं:

- **ऐस्थेटिक (सौन्दर्यपूर्ण)** – जो सौंदर्य से प्रेम करता है व प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करता है।
- **इकनोमिक (आर्थिक)** – जो बहुत ही किफायती है तथा धन व संपत्ति एकत्र करने के लिए इच्छुक है।
- **पॉलिटिकल (राजनैतिक)** – जो राजनैतिक सौदे करने व राजनैतिक पद धारण करते है।
- **रिलीजियस (धार्मिक)** – जो विभिन्न धार्मिक गतिविधियों में संलग्न है और धार्मिक मुद्दों पर ध्यान देता है।
- **सोशल (सामाजिक)** – जो विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में रुचि दिखाता है तथा स्वयं को सामुदायिक कार्यों में सम्मिलित करता है।

- **थ्योरेटिकल (सैद्धांतिक)** – जो ज्ञान प्राप्त करना पसंद करता है और नियमों व सिद्धांतों का पालन करता है।

एलपोर्ट के व्यक्तित्व का शील्गुण सिद्धांतः ऑलपोर्ट के अनुसार, "व्यक्तित्व, व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं"। वे व्यक्ति के विभिन्न शीलगुणों को समझने पर बल देते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व का विकास हो। ये गुण इस प्रकार हैंः

- **कार्डिनल शीलगुण**– कार्डिनल गुण एक बहुत ही प्रभावी विशेषता है। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व और व्यवहार को आकार देने में कार्डिनल गुण एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। व्यक्ति को इस तरह के व्यवहार के लिए जाना जाता है। उदाहरण के लिए, एक हंसमुख व्यक्ति हमेशा अपने हंसमुख व्यवहार के लिए जाना जाता है।

- **केंद्रीय शीलगुण** – केंद्रीय गुण आमतौर पर किसी व्यक्ति के समग्र चरित्र का वर्णन करते हैं। वे ईमानदारी, दया, समर्पण आदि जैसे गुणों की तरह हैं। जब हम किसी व्यक्ति के बारे में चर्चा करते हैं, तो हमें उसके केंद्रीय गुणों के कारण उस व्यक्ति के बारे में समझ में आता जाता है।

- **माध्यमिक शीलगुण** – माध्यमिक गुण सामान्य रूप से दिखाई नहीं देते हैं और वे कुछ स्थितियों में अपेक्षाकृत दिखाई देते हैं। उन्हें कार्डिनल और केंद्रीय लक्षणों जैसे किसी के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग नहीं माना जाता है। उदाहरण के लिए, आप कभी कड़े निर्णय लेने वाले व्यक्ति होते और वहीँ आप कभी बहुत मस्त मौला व्यक्ति भी हो जाते हैं। ये सभी विशेष परिस्थितियों पर निर्भर करता हैं।

फ्रायड का साइको– एनालिटिक (मनो–विश्लेषक) सिद्धांतः फ्रायड का इस व्यक्तित्व के सिद्धांत मस्तिष्क की स्थिति के चारों ओर बना है जो हमारी सोच और समस्या को सुलझाने के व्यवहार को निर्धारित करता है। फ्रायड ने बताया कि किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व त्रि–स्तरीय प्रणाली अर्थात इदम्, अहम् व परम अहम् पर निर्मित होता है। एक व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके इदम्, अहम् व परम अहम् मस्तिष्क स्थिति और व्यवहार से आकार प्राप्त करता है। आइए हम इन अवधारणाओं को समझते हैंः

- **इदम्** – यह मन की अचेतन अवस्था है। इसकी गतिविधि प्रकृति में अनैतिक है। इसे व्यक्ति के व्यवहार का एक अंधकार पक्ष भी कहा जाता है। इदम् मन की अंध वृत्तियों ज्ञान में से एक है जो तत्काल संतुष्टि चाहती है। यह अच्छे और बुरे में कभी अंतर नहीं करता है। जीवन में आनंद प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति की इदम् वृत्ति अत्यधिक हावी है।

- **अहम्**– दुनिया में हर व्यक्ति के पास अहम् है। अहम् वास्तविकता के सिद्धांत पर कार्य करता है और यह ये कई बार तर्क और अपने जीवन के सिद्धांतों पर आधारित होता है। वृत्ति का अहम्, व्यक्ति की अपनी इच्छाओं को पूरा करने की ओर निर्देशित करता है। कई बार, ईदम और अहम् के बीच संघर्ष होता है। अहम् भी इदम् से प्राप्त ऊर्जा से संचालित होती है किन्तु यह चेतन का ही एक हिस्सा है। अहम् के कार्यों को वास्तविकता के सिद्धांत द्वारा निर्देशित किया जाता है।

- **परम अहम्**– परम अहम् की प्रकृति हमेशा नैतिक है। यह सही और गलत, अच्छे और बुरे के बीच विभेद करता है। परम अहम्, प्रकृति में बहुत सामाजिक है। एक व्यक्ति का परम अहम् उसे नैतिक और आदर्श व्यवहार के प्रदर्शन के प्रति हमेशा निर्देशित करता है। यह इदम् व अहम् के बीच संतुलन भी रखता है।

युंग व आइजेंक का व्यक्तित्व का वर्गीकरणः युंग व आइजेंक ने व्यक्तित्व को मनुष्य की प्रकृति और उनके सामाजिकता के गुणों को ध्यान में रखते हुए वर्गीकृत किया है। कार्ल युंग ने कहा कि दो तरह के व्यक्तित्व होते हैं– अन्तर्मुखी व बहुर्मुखी, वहीं हेंस आइजेंक ने उभयमुखी व्यक्तित्व के प्रत्यय को प्रस्तुत किया। आइए हम इन तीन प्रकार के व्यक्तित्व की अवधारणा और उनकी विशेषताओं को तालिका संख्या 16.2 से समझते हैं:

तालिका संख्या 16.2

अन्तर्मुखी, बहुर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व की विशेषताएँ

व्यक्तित्व पैटर्न	विशेषताएँ
अन्तर्मुखी	➢ भीतर रहना पसंद करते हैं, एकांतवास से प्रेम, सामाजिक और अन्य प्रकार की सभाओं से दूर रहते हैं। ➢ प्रकृति में मैत्रीपूर्ण नहीं हैं, लेकिन वे करीबी दोस्तों के छोटे समूह का आनंद लेते हैं। ➢ वे स्वभाव से बहुत आत्म–चेतन होते हैं। ➢ वे स्वभाव में थोड़े शर्मीले हैं और लोगों के समक्ष स्वयं को व्यक्त करने में संकोच करते हैं। ➢ वे अपने रूचि के साहित्य को पढ़ना और लिखना पसंद करते हैं। ➢ वे स्वभाव से बहुत सामाजिक नहीं होते हैं।
बहुर्मुखी	➢ उन्हें दोस्त बनाने और समूहों में रहना अच्छा लगता है। ➢ वे अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के बीच बहुत बातूनी और लोकप्रिय होते हैं। ➢ वे बाहरी दुनिया में रहना पसंद करते हैं और अपने व्यक्तिगत और सामाजिक मुद्दों से संबंधित मामलों पर अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने में कभी भी संकोच नहीं करते हैं। ➢ उन्हें संगीत और सार्वजनिक समारोहों से प्यार है। ➢ उन्हें नेतृत्व का गुण पसंद है और वे दूसरों की गतिविधियों में हस्तक्षेप करने के लिए इच्छा रखते हैं और उनकी सहायता भी करते हैं।
उभयमुखी	➢ उनके पास मिश्रित प्रकार के व्यक्तित्व हैं, जैसे वे परिस्थितियों की आवश्यकताओं और दावों के अनुसार अंतर्मुखी व्यक्तित्व और बहिर्मुखी व्यक्तित्व दिखाते हैं। ➢ दुनिया में, कई लोग वास्तव में प्रकृति से उभयमुखी होते हैं। ➢ विशुद्ध रूप से अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तियों की संख्या बहुत कम है। ➢ लोग आमतौर पर समाज की आवश्यकता के अनुसार खुद को बदलते हैं।

16.9.3 व्यक्तित्व का मापन

व्यक्ति के व्यक्तित्व को मापने के लिए कई प्रकार की तकनीकों का उपयोग किया जाता है। व्यक्तित्व मूल्यांकन के लिए प्रक्षेपण व अप्रक्षेपण, दोनों विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रक्षेपण विधि द्वारा व्यक्तित्व के मापन की विशिष्ट तकनीकों के तहत, जैसे रोर्शा के इंकब्लोट टेस्ट (आरआईटी)–रोर्शा का स्याही धब्बा परिक्षण, थीमैटिक अपीयरेंस टेस्ट (टीएटी)–विषय–अत्मबोधन परिक्षण, वर्ड एसोसिएशन टेस्ट–शब्द–साहचर्य परिक्षण, वाक्य पूर्ति तकनीक, व्यवहारात्मक और संज्ञानात्मक मूल्यांकन, शारीरिक मूल्यांकन और व्यक्तिगत तथ्यों को मापन हेतु प्रयोग करने के लिए विचार किया जाता है। दूसरी ओर, किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को मापने के लिए अप्रक्षेपण विधियों जैसे कि साक्षात्कार, अवलोकन, रेटिंग मापनी, व्यक्तित्व सूची, स्वयं–रिपोर्टिंग विधियाँ आदि का प्रयोग भी किया जाता है।

16.9.4 व्यक्तित्व के शैक्षिक निहितार्थ

निम्नलिखित कुछ गतिविधियाँ हैं जो विद्यालय प्रबंधन और शिक्षकों को विद्यालयों में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए करनी चाहिए:

- शिक्षक को कक्षा में एक ऐसा माहौल बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के बीच अंतर–वैयक्तिक सम्प्रेषण कौशल विकसित करें और एक–दूसरे को समझें।
- सभी विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं और रुचियों के अनुसार विद्यालय में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दिए जाने चाहिए।
- व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम को छात्रों के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए पाठ्यक्रम और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में एकीकृत किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में समकक्ष और समूह गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के बीच नेतृत्व के गुणों को उनके द्वारा परियोजनाओं और अन्य क्षेत्र से संबंधित गतिविधियों को निर्दिष्ट करके विकसित किया जाना चाहिए और प्रत्येक विद्यार्थी को अपने समूह में नेतृत्व की भूमिका निभाने के अवसर दिए जाने चाहिए।
- विद्यार्थीयों के उचित व्यक्तित्व विकास के लिए एक लोकतांत्रिक वातावरण बनाया जाना चाहिए।

16.6 अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) नीचे दिए गए स्थान पर अपनी उत्तर लिखें।

ख) इकाई के अंत में दिए गये उत्तरों से मिलान करें।

12. व्यक्तित्व को परिभाषित करें?

....

....

....

13. व्यक्तित्व के अंतर्मुखी और बहिर्मुखी पैटर्न में अंतर करें?

....

....

....

16.10 सारांश

सार के रूप में देखे तो, अधिगमकर्ताओं के कारक अत्यधिक लचीले और परिवर्तनशील हैं। यह व्यक्तिगत है, किन्तु कुछ हद तक यह केवल बुद्धि, योग्यता और व्यक्तित्व प्रकार जैसे स्थिर गुणों से संबंधित है। ये गुण आनुवंशिकता से अत्यधिक प्रभावित हुए लगते हैं, और इसलिए इसे अपेक्षाकृत अपरिवर्तनीय माने जाता है। दूसरी तरफ, अधिगमकर्ताओं की विशेषताओं जैसे अभिवृत्ति, अभिक्षमता, अभिप्रेरणा, आदि हमेशा बदलते हैं और शिक्षार्थियों की विशिष्ट अधिगम और जीवन परिस्थितियों से निर्धारित होते हैं। इसलिए, इन गुणों को सीखा और अधिग्रहित किया जाता है। इस इकाई में, हमने अधिगमकर्ताओं की विशेषताओं के सैद्धांतिक निर्माणों के बारे में व्यापक रूप से चर्चा की है और जाना कि वे शैक्षिक संदर्भ में कैसे काम करते हैं।

16.11 संदर्भ और पठन हेतु सुझावित पुस्तकें

अग्रवाल जे.सी. (2011)। साईकोलोजी आफ लर्निंग एंड डेवलपमेंट । शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

बंदुरा, ए। (1997)। सेल्फ अफिकसीरू द एकसरसाईज आफ कंट्रोल। न्यूयॉकर्रू फ्रीमैन।

बैरन, आर.ए., ब्रान्सकॉम्ब, एन एंड बायरन, डी। (2009) ।सोशल साइकोलॉजी (12 वां संस्करण)। बोस्टन, एमएरू पियर्सन ६ एलिन और बेकन।

कोम्ब, ए.डब्लू. (1979) .मिथ इन एजुकेशन.बोस्टनरूएलिन व बैकन।

गार्डनर, एच (1983)। फ्रेम्स ऑफ माइंडरू द थ्योरी ऑफ मल्टिप्ल इन्तेलिगेंस। न्यूयॉकर्रू बेसिक बुक्स।

गार्डनर, एच (1993 बी)। मल्टिप्ल इन्तेलिगेंसरू द थ्योरी इन प्रैक्टिस। न्यूयॉकर्रू बेसिक बुक्स।

इग्नू (2010)। भाषा के शिक्षार्थी कौन हैं? इकाई –2, ब्लॉक –1, ईएस –344रू अंग्रेजी का शिक्षण (बी.एड.)। नई दिल्लीरू इग्नू।

नेलर, जी.एफ. (1965)। द आर्ट एंड साइंस ऑफ क्रिएटिविटी। न्यूयॉकर्रू होल्ट, राइनहार्ट और विंस्टन।

मास्लो, ए। (1962)। टुवर्ड्स अ साइकोलॉजी ऑफ बिंग। न्यू यॉकर्रू VanNostrand।

सौसा, डी। (2009)। हाउ गिफ्टेड ब्रेन्स लर्न? लंदनरू कोर्विन।

विंच, सी. एंड गिंगेल, सी। (2009) .की कॉन्सेप्ट्स इन द फिलोसोफी ऑफ एजुकेशनः रूटलेज।

संदर्भित वेबसाइट

https://shodhganga-inflibnet-ac-in/bitstream/10603/60442/8/08_chapter%203-pdf 22-01-2020 को पुनः प्राप्त

16.12 अपने उत्तरों की जाँच करें

1. बुद्धि को समालोचनात्मक और सारगर्भित तरीके से सोचने, समस्याओं को हल करने, विभिन्न स्थितियों में समायोजित करने और सीखने की क्षमता आदि के रूप में परिभाषित किया जाता है।

2. गार्डनर का बुद्धि का सिद्धांत बहु– बुद्धि पर आधारित है और यह तार्किक, भाषाई, संगीत, स्थानिक, शारीरिक ,अंतर वैयक्तिक और प्राकृतिक बुद्धि जैसे आठ प्रकार के बुद्धि का वर्णन करता है।

3. विद्यालयी पाठ्यक्रम में छात्रों को उनकी मानसिक क्षमताओं का उपयोग करने के लिए प्रदान किया जाना चाहिए और शिक्षक को विद्यार्थियों को उनकी बुद्धि के क्षेत्रों में काम करने के अवसर प्रदान करने चाहिए।

4. अभिक्षमता किसी भी क्षेत्र के व्यक्ति की जन्मजात और संभावित क्षमता है।

5. अभिक्षमता को सकारात्मक रूप से बुद्धि और उपलब्धि के साथ जोड़ा जाता है।

6. सृजनात्मकता को कुछ नया और नवीन बनाने के लिए विद्यार्थियों की एक अद्वितीय क्षमता के रूप में परिभाषित किया गया है।

7. सृजनात्मकता अंतर्दृष्टि, तैयारी, ऊष्मायन, प्रकाशिये और सत्यापन जैसे चरणों से गुजरती है।

8. अभिप्रेरणा एक मनोवैज्ञानिक शक्ति है जो किसी व्यक्ति को उसके लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निर्देशित करती है।

9. मास्लो के आत्म–बोध का सिद्धांत सबसे कम व्यक्तिगत आवश्यकताओं (मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं) से उच्चतम आवश्यकताओं (आत्म–प्राप्ति) तक पहुंचता है। इस सिद्धान्त में, आगे की आवश्यकता पूर्ववर्ती आवश्यकता की पूर्ति से जुड़ी है।

10. मनोवृत्ति किसी व्यक्ति का किसी स्थिति, वस्तु, विचारों आदि के प्रति स्वभाव है। मनोवृत्ति अधिकतर प्रकृति में प्राप्त होती है और यह संज्ञानात्मक, भावात्मक और मनोगत्यात्मक क्षेत्रों पर आधारित हो सकती है।

11. विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विद्यालय के विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच रचनात्मक व्यवहार करने के लिए एक सकारात्मक वातावरण स्थापित करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के बीच सकारात्मक अभिवृत्ति की भावना विकसित करने के लिए पारिवारिक संस्कृति और पर्यावरण भी समान रूप से जिम्मेदार हैं।

12. व्यक्तित्व एक व्यक्ति का व्यवहारिक पैटर्न है जिसमें वंशानुगत और पर्यावरणीय कारक दोनों शामिल हैं जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का गठन करते हैं।

13. अंतर्मुखी व्यक्ति स्वयं जागरूक, शांत, पढ़ने और लिखने का प्रेमी होता हैं, और वे भीतर रहना पसंद करते हैं जबकि बहिर्मुखी व्यक्ति स्वभाव से बातूनी, आशावादी, मिलनसार और बहुत सामाजिक होते हैं।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY